सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2011 ★ कार्तिक, 2068

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

अहिंसा तीर्थ
एक संस्कार केंद्र

"मांसाहार मानवजाति पर कलंक है। मांस जमीनसे या झाड पर नहीं पैदा होता। निर्दोष बेजबान प्राणियों की हत्या से मांस तयार होता है। ऐसे पाप कार्य से लोगों को बचाओ।"

शाकाहार प्रसारक एवं गोपालक मा. श्री. रतनलालजी बाफना द्वारा निर्मित जलगाँव का अहिंसा तीर्थ शाकाहार प्रचार-प्रसार के लिये समूचा समर्पित है। यहाँ का यूटर्न म्युझियम देखकर आजतक लाखों लोगोंने मांसांहार त्यागा है। यह प्राणियों की मुक भावनाओं तथा उनकी असीम यातनाओं को बखुबी प्रदर्शित करता है

आपका अहिंसा तीर्थ में स्वागत है।

आप जैन है, शाकाहार का प्रसार करो
सच्चे महावीर बनो, धर्म का नाम उँचा करो।

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रवर्तक

रतनलाल सी. बाफना गो सेवा अनुसंधान केंद्र

गोशालाही नहीं एक संस्कार केंद्र

अहिंसा तीर्थ, कुसूंबा, जळगांव. फोन : 2213415, 2270125 • www.ahimsatirth.com

जिनवाणी
हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2009-11
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

उत्तराइं विमोहाइं,
जुइमंताणुपुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं,
आवासाइं जसंसिणो।।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.26

हैं उत्तम आवास देवों के,
क्रमशः मन्दमोह द्युतिमान्।
महायशस्वी देवों से वे,
भरे हुए लगते छविमान्।।

नवम्बर, 2011
वीर निर्वाण संवत्, 2538
कार्तिक, 2068

वर्ष 68 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-
एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	आचारशुद्धि के प्रेरक: आचार्य श्री हीरा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	संयम है शिव सुखदाता	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	संकल्पबल के धनी थे आचार्यश्री हस्ती	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	19
	ऊर्ध्वगमन में आत्मशक्ति है कारगर	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	21
तत्त्व-बोध -	बहुश्रुत : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी शास्त्री	31
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective	*-Prof. Sagarmal Jain*	36
चिन्तन -	जैन एकता के नये समीकरण की तलाश	-डॉ. अनेकान्तकुमार जैन	41
जीवन-व्यवहार-	शब्दों का सौन्दर्य	-श्री सुरेश सोजतिया	46
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (71)	-श्री धर्मचन्द जैन	49
पत्र-स्तम्भ -	दीवार जब टूट जाती है(9)	-आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.सा.	53
युवा-स्तम्भ-	देश को क्या दे सकता हूँ मैं?	-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	59
नारी-स्तम्भ-	संवादहीनता रिश्तों के लिए घातक	-श्रीमती बीना जैन	64
स्वास्थ्य-विज्ञान-	हास्य चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	66
बाल-स्तम्भ -	क्यों करें रात्रि-भोजन त्याग?	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.	71
प्रासङ्गिक-	स्थानक तो खुले रहें	-श्री यशकरण डागा	76
कविता/गीत-	रत्नत्रय का क्या कहना	-श्री नरेन्द्र कुमार जैन	30
	है अभिलाषा आचार्यप्रवर	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	52
	जिनशासन के हम हैं प्रहरी	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	58
	युवाशक्ति	-श्री गणेशमुनि जी शास्त्री	63
विचार-	जय-पराजय	-श्री जितेन्द्रकुमार चौपड़ा	20
	ब्रह्मचर्यधारी बनें	-श्री अजीत भण्डारी	35
	प्रेरक-विचार	-संकलित	48
	सुखी होने के उपाय	-श्री जौहरीमल छाजेड़	57
	सम्यक्त्व	-श्रीमती पारसकंवर भण्डारी	62
	महावीर का अर्थशास्त्र	-श्री एन.के.खींचा	70
	बच्चों को दें प्यार	-श्रीमती मोनिका डांगी	78
साहित्य समीक्षा-	नूतन साहित्य		77
श्राविका-मण्डल-	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (20)	-संकलित	79
	पर्युषण रिपोर्ट	-संकलित	82
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		87
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		118

सम्पादकीय

आचारशुद्धि के प्रेरक : आचार्य श्री हीरा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

कार्तिक कृष्णा षष्ठी, 1 नवम्बर 2011 को आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 49वाँ दीक्षा-दिवस सम्पूर्ण देश में तप-त्याग के साथ मनाया गया। दीक्षा-दिवस वस्तुतः जीवन का संक्रान्ति दिवस है, जो जीवन को नई दिशा प्रदान करता है। जिन महापुरुषों की दीक्षा विशेषतः सफल होती है उनका दीक्षा-दिवस मनाना सार्थक होता है। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी आगम-वाणी एवं जिनशासन की परम्परा के अनुरूप विचारशील एवं आचारनिष्ठ संत होने के साथ संघ के प्रत्येक सदस्य की विचारशुद्धि एवं आचारशुद्धि के लिए प्रबल प्रेरणा करते हैं। वे विचारशुद्धि को आचारशुद्धि की नींव मानते हैं।

आचार्यप्रवर की दृष्टि व्यक्ति-सुधार एवं समाज-सुधार दोनों पर केन्द्रित रहती है। व्यक्ति के सुधार से ही समाज सुधरता है। समाज को दोष देते रहने से न समाज सुधरता है और न व्यक्ति सुधर पाता है। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का उपयोग पहले अपने सुधार के लिए हो तथा उसके साथ ही अपनी दृष्टि सबके हित की भावना से समन्वित हो तो समाज का भी अपने द्वारा किंचित् भला हो सकता है। बलपूर्वक कोई किसी को नहीं सुधार सकता। बाह्य व्यवस्थाओं में बलपूर्वक कुछ परिवर्तन अवश्य लाया जा सकता है, किन्तु व्यक्ति की भावनाओं को नहीं बदला जा सकता। उसकी भावनाएँ प्रेम, सौहार्द एवं हमारे सकारात्मक व्यवहार से ही बदल सकती हैं। इसलिए आचार्यप्रवर व्यक्ति के निजी दोषों को दूर करने की सतत प्रेरणा करते हैं।

आचार्यश्री का फरमाना है - "अन्तर के परिणाम अगर शुभ हैं तो कार्य का परिणाम भी शुभ ही होगा। संघ-समाज में भी आज इसी विवेक दृष्टि की आवश्यकता है। आप किसी भी रूप में संघ-सेवा करें। सेवा, श्रद्धा व समर्पण की भावना से करें।" सेवा का कार्य अपने विकारों पर विजय प्राप्त

करने का माध्यम बन सकता है। जो स्वयं को जितना साध लेता है वह उतना ही समाज में संयत ढंग से व्यवहार करने में समर्थ होता है। वह अपने अस्तित्व एवं अहंकार का प्रसार नहीं चाहता, किन्तु संघ, समाज या सर्वहित की भावना से सेवा के लिए सन्नद्ध होता है। फील्ड वर्क में ही अपने स्वभाव की परीक्षा होती है तथा उसे सुधारने का अवसर प्राप्त होता है। कार्य-कौशल भी आवश्यक होता है, किन्तु भावना की पवित्रता कार्य निष्पादन में विशेष रंग ला देती है।

संघनायक अनेक बार कठोर शब्दों में भी प्रेरणा करते हैं, किन्तु उनका अन्तर्हृदय करुणा भावना से ओतप्रोत होता है। वे व्यक्ति एवं समाज में सुधार देखना चाहते हैं। व्यक्ति का चित्त किस प्रकार साधना एवं आत्मशुद्धि के लिए तत्पर हो सकता है, उसके लिए वे भाँति-भाँति से प्रेरणा करते हैं। 30 जून 2011 को उन्होंने प्रवचन में फरमाया- ''इन्द्रियों का विकास होने के साथ सहनशीलता बढ़नी चाहिए, किन्तु घटती हुई देखी जा रही है। हम स्वयं को जितना समझदार समझने लगे हैं, उतने ही असहनशील हो गए हैं। हमने समझ पाकर अहंकार बढ़ाया है या सहनशीलता? धर्म का मूल विनय है, किन्तु यह बोलने मात्र तक के लिए नहीं, परीक्षा देने के लिए नहीं, प्रश्नोत्तरी में नम्बर प्राप्त करने के लिए नहीं, जीवन में आचरण के लिए है। आपमें सहनशीलता का गुण है तो आपके सामने भले ही कोई आग बनकर आए, आप पानी बन जाओगे तो आग शान्त हो जाएगी। क्रोध एवं अक्षमा दोष के कारण घर-परिवार स्वर्ग के बजाय नरक बन जाता है।''

हमारी बात कोई न माने तो हमें क्रोध आ जाता है, किन्तु आचार्य श्री का कथन है- ''जब आपने भगवान्, गुरु, शास्त्र की बात जो आपके हित के लिए सुख के लिए है, उसे भी नहीं माना तो आप ऐसे कौनसे छत्रपति हो, देव-देवेन्द्र हो, राजा-महाराजा हो, जो आपकी हर बात मान लेनी चाहिए।'' हमारा अहंकार हमारे पर हावी है तथा दूसरों पर भी हम उसका प्रहार करने से नहीं चूकते। इसी को जीतने के लिए साधना का मार्ग है, समाधि का मार्ग है, शान्ति का मार्ग है।

आत्म-सुधार का लक्ष्य बनाना बड़ा कठिन है, पर-सुधार के लिए उपालम्भ देना सरल है। किन्तु जब तक आत्म-सुधार नहीं होगा, अपना

कल्याण सम्भव नहीं है। आचार्यप्रवर ने 19 मई 2011 को फरमाया- ''मिथ्यादृष्टि व्यक्ति को दूसरों में दोष ही दोष दिखाई देते हैं तथा सम्यक्त्वी को दूसरें के द्वारा किए गए दोषपूर्ण कार्य भी स्वयं की साधना के लिए हितकारी प्रतीत होते हैं। दृष्टि-दृष्टि का भेद है, एक में कर्म बंधतें है तो दूसरे में कर्म कटते हैं। एक में भावों की मलिनता बढ़ती है, तो दूसरे में भावों की विशुद्धता। एक को संसार में समायोजन करना नहीं आता तथा सदैव दुःखी रहता है तो दूसरा किसी भी परिस्थिति में अपने मन को निर्मल बनाकर रहना सीख लेता है। दृष्टि बदलने पर संसार में सब अपने हैं तथा मिथ्यादृष्टि के लिए जो उसका स्वार्थ पूरा करते हैं, बस वे ही उसके अपने हैं।''

मनुष्य की जैसी मान्यता अथवा विचारधारा होती है, उसी के अनुसार उसका आचरण निष्पादित होता है। सुन्दर विचारों की पुष्टि यदि अन्तर्हृदय से होती है तो आचरण में निर्मलता आना स्वाभाविक है। इसलिए आचार्यश्री ने फरमाया है- ''मनुष्य की आस्था, श्रद्धा, मान्यता, विचारधारा जितनी दृढ़ होगी, आचार का वटवृक्ष तथा सद्गुणों के फल-फूल उतने अधिक लगेंगे।'' सद्गुणों के सिंचन में या तो मिथ्यात्व बाधक है या फिर प्रमाद। मिथ्यात्वी व्यक्ति दुर्गुणों को भी अपने जीवन के सद्गुण समझता है तथा प्रमादी व्यक्ति सद्गुणों को सद्गुण जानता हुआ भी उन्हें आचरण में नहीं ला पाता है।

ज्ञान को आचरण में लाना अप्रमाद है तथा उसे आचरण में न लाना प्रमाद है। यह प्रमाद हमारा ऐसा शत्रु है जो हमें विषयों से एवं विकारों से मुक्त नहीं होने देता। दोषों को छोड़ने की भावना वाला व्यक्ति भी जब तक उत्कृष्ट संवेग का अनुभव न करे तब तक उसके दोष नहीं छूट पाते हैं। प्रमाद व्यक्ति को दोषों से जकड़े रखता है। प्रमाद को त्यागकर ज्ञान को आचरण में लाने की प्रेरणा आचार्य श्री हीरा के प्रवचनों में प्रायः प्रतिदिन सुनने को मिल जाती है।

आचार्यश्री की विशेषता है कि वे आगन्तुक को व्यक्ति से नहीं, अपितु धर्म से जुड़ने की प्रेरणा करते हैं। वे निर्व्यसनता के साथ सुसंस्कारों से युक्त समाज का निर्माण करना चाहते हैं। संघ का प्रत्येक व्यक्ति निर्व्यसनी, प्रमाणिक एवं सुसंस्कारी हो, यह उनके अन्तर्मन की भावना प्रवचनों में सदैव परिलक्षित होती है। आचार्य हीरा हर व्यक्ति के जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से निरन्तर उन्नत देखना चाहते हैं। अन्याय एवं अनीति से अर्जित धन कितना

भी क्यों न हो, किन्तु वह व्यक्ति के लिए हितकर नहीं होता। उनका कथन है- ''जिस व्यक्ति के जीवन में आय के साधन अनीति एवं अन्याय से युक्त हैं, मन में, विचारों में, कार्यों में पवित्रता, निर्मलता नहीं है तो वह विशुद्धि के मार्ग पर चिन्तन नहीं कर पायेगा।'' इसका तात्पर्य है कि आत्मविशुद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए आजीविका के साधनों को सात्त्विक बनाना चाहिए। चोरी एवं अनीति का एक कारण आचार्य हीरा की दृष्टि में आवश्यकता से अधिक खर्च करने की आदत है। जैन धर्म व्यक्ति को इच्छाओं और आवश्यकताओं को घटाने की सीख देता है। आचार्य हीराचन्द्र जी जब ऊनोदरी तप की बात करते हैं तो साथ में अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं पर लगाम कसने का अनुरोध करते हैं।

बालक हो या युवा, बालिका हो या युवती, प्रौढ़ हो या वृद्ध, व्यापारी हो या उद्योगपति, अध्यापक हो या अधिवक्ता, अधिकारी हो या कर्मचारी, राजनेता हो या श्रमिक, जैन हो या जैनेतर, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन आध्यात्मिक मूल्यों से समन्वित हो तथा राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि पर विजय की ओर उन्मुख हो तथा उसके लिए सदैव सजगता पूर्वक प्रयत्नशील हो, यही आचार्यप्रवर की भावना रहती है। इसी में जिनेन्द्रों की वाणी की रक्षा तथा जन-जन का कल्याण निहित है। जिस व्यक्ति में जितनी अधिक निर्मलता होगी, समाज की दृष्टि में वह उतना ही आदरणीय स्थान प्राप्त कर सकेगा। राग-द्वेष के कारण भेदभाव की नीति चलती रहती है। व्यवहार में उसका प्रभाव परिलक्षित होता रहता है। आचार्यप्रवर का कथन है- ''आप स्वयं सोचें, जिनके प्रति आपका राग है, उनके प्रति कैसा व्यवहार रहता है तथा जिन पर राग नहीं उनके प्रति कैसा व्यवहार होता है।''

जोधपुर चातुर्मास में विविध तप-त्याग, व्रताराधन, आजीवन शीलव्रत, बाल-संस्कार शिविर, बालिका संस्कार शिविर, किशोर संस्कार शिविर, युवक प्रेरणा शिविर, श्राविका मण्डल शिविर, वरिष्ठ श्रावक शिविर, विद्वत्संगोष्ठी आदि सभी आयोजन आत्मसुधार एवं समाजसुधार के लक्ष्यों की पूर्ति के ही उपक्रम प्रतीत होते हैं। ऐसे महामना, यशस्वी, आगमज्ञ, शास्ता आचार्य श्री हीरा को दीक्षा-दिवस पर अनेक प्रणाम।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

- अट्टज्झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-

1. अमणुण्ण-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
2. मणुण्ण-संपओग-संपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
3. आतंक-संपओग-संपउत्ते, तस्स विप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।
4. परिजुसित-काम-भोग-संपओग-संपउत्ते, तस्स अविप्पओग-सति-समण्णागते यावि भवति।

- अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-कंदणता, सोयणता, तिप्पणता, परिदेवणता।
- रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-हिंसाणुबंधि, मोसाणुबंधि, तेणाणुबंधि, सारक्खणाणुबंधि।
- रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे।

अर्थः-

आर्त्तध्यान चार प्रकार का कहा गया है, जैसे- 1. अमनोज्ञ (अप्रिय) वस्तु का संयोग होने पर उसके दूर करने का बार-बार चिन्तन करना। 2. मनोज्ञ (प्रिय) वस्तु का संयोग होने पर उसका वियोग न हो, ऐसा बार-बार चिन्तन करना। 3. आतंक (घातक रोग) होने पर उसको दूर करने का बार-बार चिन्तन करना। 4. प्रीति-कारक काम-भोग का संयोग होने पर उसका वियोग न हो, ऐसा बार-बार चिन्तन करना।

आर्त्तध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, जैसे- 1. क्रन्दनता- उच्च स्वर से बोलते हुए रोना। **2. शोचनता-** दीनता प्रकट करते हुए शोक करना। **3. तेपनता-**आंसू बहाना। **4. परिदेवनता-** करुणा-जनक विलाप करना।

रौद्रध्यान चार प्रकार का कहा गया है, जैसे- 1. हिंसानुबन्धी- निरन्तर हिंसक प्रवृत्ति में तन्मयता कराने वाली चित्त की एकाग्रता। **2. मृषानुबन्धी-** असत्य भाषण सम्बन्धी एकाग्रता। **3. स्तेनानुबन्धी-** निरन्तर चोरी करने-कराने की प्रवृत्ति सम्बन्धी एकाग्रता। **4. संरक्षणानुबन्धी-** परिग्रह के अर्जन और संरक्षण सम्बन्धी तन्मयता।

रौद्रध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, जैसे- 1. उत्सन्नदोष- हिंसादि किसी एक पाप में निरन्तर प्रवृत्ति। **2. बहुदोष-** हिंसादि सभी पापों के करने में संलग्नता। **3. अज्ञानदोष-** कुशास्त्रों के संस्कार से हिंसादि अधार्मिक कार्यों को धर्म मानना। **4. आमरणान्त दोष-** मरणकाल तक भी हिंसादि करने का अनुताप न होना।

-स्थानाङ्गसूत्र, चतुर्थ स्थान, प्रथम उद्देश, सूत्र-61-64

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

समाधि-मरण

- अपना शरीर छूटने का काल नजदीक प्रतीत हो, उस समय ज्ञानदृष्टि को जागृत रखकर सोचना है कि शरीर और आत्मा अलग हैं। शरीर क्षणभंगुर एवं नाशवान है तो आत्मा अविनाशी एवं ज्ञानमय है। रोग-शोक शरीर को होते हैं, आत्मा को नहीं।
- मरण से दुनिया डरती है, परन्तु ज्ञानी मरण को महोत्सव मानते हैं। जैसे मुसाफिर खाने को मुसाफिर मुद्दत पूरी होते ही खुशी से छोड़ देता है, ऐसे ही ज्ञानी स्थिति पूरी होते ही स्वेच्छा से शरीर का परित्याग करने हेतु तत्पर रहता है।
- ज्ञानी शरीर की वेदना से व्याकुल नहीं होता। वह उस समय अधिक से अधिक आत्मशुद्धि का ध्यान रखता है।
- उत्तम मरण के लिये इन्द्रियों के विषय और मन की कलुषित वृत्तियों का सर्वथा परित्याग करके संसार के समस्त प्राणिसमूह से क्षमायाचना कर निरंजन निराकार परमात्मा के शुद्ध स्वरूप में ध्यान रखना ही कल्याण का मार्ग है।
- मरण के पूर्व जीवनकाल में लगे दोषों को भगवत् चरणों में निवेदन कर हार्दिक प्रायश्चित्त, समस्त पापों का मनसा, वचसा, कर्मणा परित्याग, जीवमात्र से क्षमायाचना कर मैत्रीभाव, पुत्र, मित्र, कलत्र और इस शरीर तक से ममता का परित्याग कर समाधिमरण का वरण करना चाहिए।
- दुर्गुणी मानव परिग्रह के पीछे हाय-हाय करते मरता है। किन्तु ज्ञानी भक्त मरते समय सद्गुणों का धन संभालता है। अतएव लड़की जैसे ससुराल से पिता के घर जाने में प्रसन्नचित्त होती है, वैसे वह भी परलोक की ओर हँसते-हँसते जाता है और आनंदित होता है। हर मानव को ऐसी ही साधना करनी चाहिए और ऐसी तैयारी रखनी चाहिए, जिससे कि वह हँसते-हँसते इस संसार से प्रस्थान कर सके।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

संयम है शिव सुखदाता

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा मंगलवार दिनाँक 30 अगस्त, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

संयम-साधना से आठों कर्मों को तोड़कर अविचल पद प्राप्त करने वाले सिद्ध भगवन्त, बाहर-भीतर यथाख्यात चारित्र जैसा कहते वैसा आचरण करने वाले अनन्त ज्ञानी अरिहन्त भगवन्त, संयम की साधना में अपने-आपको लगाने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में पच्चीस सौ वर्ष बीत जाने पर भी जीवन-निर्माण के जो सूत्र बताये गये हैं वे कभी पुराने नहीं होते। हजारों-लाखों वर्ष बीतने पर भी वे सूत्र आज उतने ही उपकारी हैं जितने उस समय थे। घी में चिकनाहट होती है। नमक में खारापन होता है, मिर्ची तीखी होती है। शक्कर मीठी होती है जैसे ये सत्य हैं, इनमें कोई अनुभव की विचित्रता या भिन्नता नहीं है इसी तरह संयम में समाधि है, संयम में शांति है, संयम में सुख है यह भी उतना ही सत्य है। खाने से भूख मिटती है, पीने से प्यास बुझती है, चलने से मंजिल प्राप्त होती है, जैसे ये सही हैं इसी तरह संयम शोभा है, संयम जीवन है, संयम सुख वाला है यह बात भी उतनी ही सत्य है।

'यम' धातु से संयम शब्द बना है। यम का अर्थ है कन्ट्रोल करना, नियमन करना, काबू करना। दुराचरण पर नियन्त्रण कर सद्प्रवृत्ति में अच्छी तरह से नियमन करना संयम है।

कन्ट्रोल या काबू करना अनेक तरह का होता है। बुराई पर भी कन्ट्रोल होता है, अच्छाई पर भी। अति खराब है, सब जगह खराब होती है। अधिको भलो न बोलनो, अधिकी भली न चुप। ज्यादा बोलना खराब है, तो ज्यादा चुप रहना भी खराब है। अधिक बरसना खराब है, तो अधिक अकाल भी खराब है। अति सर्वत्र वर्जयेत्। हर स्थिति को काबू करें। कोई काम इतना न करो जिससे

तुम असमाधि में चले जाओ। किसी को ऐसा मत कहो जिससे वह धर्म को छोड़कर आर्त्त में चला जाय। तप क्या? आहार का संयम भी तो तप है जो अनशन-उनोदरी आदि के रूप में कहा गया है। ऐसा तप प्रतिदिन करो। कितना करो? उतना करो जिससे तुम्हारी साधना, दिनचर्या और रोजमर्रा का काम बाधित न हो। यदि कोई साधु है तो वह ज्ञानाराधना कर सके, सेवा के लिए चलना पड़े तो चल सके, गवेषणा के लिए बोलना पड़े तो बोल सके, परिष्ठापन की क्रिया समाधिपूर्वक हो सके, स्वाध्याय में अंतराय नहीं आवे तब तक तप करे। हाय-हाय करते, आर्त्तध्यान आ जाय, ऐसी तपस्या नहीं करनी चाहिए। वैसी तपस्या को अति कहा गया है। यह यथातथ्य है कि तप एकान्त निर्जरा का कारण है तथा समस्त रोगों का इलाज उपवास है। लंघनं परम औषधिः। खाना छोड़ना शरीर की हर विकृति और प्रतिकूल स्थितियाँ जो बन रही हैं उन्हें खत्म करना है।

विकृति चाहे शरीर की हो या मन की, तप दोनों विकारों का नाश करता है। आचार्य भगवन्त की अनुभवपूर्ण वाणी में कभी सुना था- पति के परदेश जाने पर घर की बहू ने श्वसुर से कहा- "हमारे घर का यह बूढ़ा नौकर ठीक से काम नहीं करता। इसे बदलकर जवान नौकर रखना चाहिये।" श्वसुर ने सोचा- "शायद पति के परदेश जाने के कारण और कई महीनों से लौटकर नहीं आने के कारण बहू के मन में विकार बढ़ रहे हैं, इसलिये यह इस तरह की बात कह रही है।" श्वसुर ने कहा- "मैं कोई न कोई इन्तजाम करता हूँ।" श्वसुर ने इन्तजाम की बात बहू से कह दी, लेकिन बहू के यह पूछने पर कि भोजन में क्या बनाऊँ तो श्वसुर ने कह दिया- "आज मेरे उपवास करने के भाव हैं, मेरे लिए कुछ मत बनाना।" घर में दो ही आदमी हैं, श्वसुरजी ने खाना बनाने का मना कर दिया तो मेरे अकेले के लिए बनाकर क्या करूँगी। ऐसा विचार कर बहू ने भी उपवास कर लिया। दूसरे दिन पारणे का पूछा तो कह दिया- "आज बेला है।" बहू ने भी बेला कर लिया। फिर पारणे का पूछा तो श्वसुर ने कह दिया- "मैंने तेला कर लिया है।" बहू ने भी तेला कर लिया। श्वसुर जी ने कहा- "मैंने आज नया आदमी बुलाया है।" बहूजी का तपस्या करने से विकार समाप्त हो गया। वह बोली- "घर में अपन दो ही सदस्य हैं, दो का कितना-सा काम है, मैं ही संभाल लूँगी। नए आदमी की जरूरत नहीं।" तात्पर्य है कि तप ने तन के साथ मन के विकार को समाप्त कर दिया। अतः तप शरीर के विकारों को ही कम नहीं

करता, मन के विकारों को भी हटाता है। संयम ऐसी औषधि है जो आदमी को कहीं भी किसी भी स्थिति में असमाधि में नहीं डालती। सौ बार नहीं कहने वाली बातें भी कोई कह दे तो आप हंसते-हंसते सुन सकते हैं। तीर्थंकर भगवान महावीर ने संयम को समाधि का सूत्र कहा है। आचार्य भगवन्त की भाषा में कहूँ-

अन्य नहीं है शिव सुख दाता, शिव सुख दाता संयम है
जन्म-मरण की महाव्याधि का, मूल मिटाता संयम है।
जग के सारे रिश्ते झूठे, सच्चा नाता संयम है
स्नेही सुहृद् भाई अरु भगिनी, माता-पिता सब संयम है।
मानो या मत मानो कोई, भाग्यविधाता संयम है।
विषय-विकारों की बूंदों से, रक्षक छाता संयम है।
आत्मा का परमात्मा से, यह मेल लाता संयम है।
स्वर्गमोक्ष के जितने भी सुख, सब दिखलाता संयम है।

शास्त्र तो यहाँ तक कह रहा है- तुम घर में समाधि लाना चाहो, परिवार में शांति से जीना चाहो, समाज में सुख से रहना चाहो, संघ में स्नेह बढ़ाना चाहो तो संयम करना सीख लो। सुख-शांति के लिए सौ औषधियाँ नहीं बताई जा रही हैं, हजार वैद्यों की बात नहीं कही जा रही है एक संयम सब तरह की समाधि कर सकता है। एक पोस्टर देखने का अवसर आया। लिखा था- सौ तालों की एक चाबी, सैकड़ों रोगों का एक इलाज। वह चाबी कौनसी? वह चाबी है संयम की। वह इलाज कौनसा? वह इलाज है-संयम।

जो चीज आप नहीं चाहते हैं उस चीज का दूसरों के लिए उपयोग मत करो। आपका जिससे मन दुःख पाता है, तेवर चढ़ते हैं ऐसा सुनना या बोलना दूसरों के लिए बंद कर दीजिये। अगर गाली सुनना आपको पसन्द नहीं है तो दूसरों को भी गाली मत सुनाओ। यह नोट करके चलना- शायद कैमरे की रील खराब हो सकती है। मोबाइल खराब हो सकता है, लेपटोप खराब हो सकता है, पर कर्म की यह रील कभी खराब हुई नहीं, खराब होगी नहीं। कुएँ में जैसी बोली बोलेंगे वैसी प्रतिध्वनि आयेगी। आप घर में गाली बोलो और चाहो कि बेटा गाली नहीं बोले तो यह होने वाला नहीं है। आप गाली देना बंद कर देंगे तो बेटे की गालियाँ बन्द हो जायेंगी। आप ऐसा करके देख सकते हैं। आपके मन की शांति, प्रसन्नता, हंसता चेहरा सामने वाले पर भी असर डालेगा ही।

मैं कोई लम्बा-चौड़ा सूत्र नहीं कह रहा हूँ। अगर कोई आपके सामने आप में कमी की बात कहे, कड़वी बात बोले, आपको नागवार लगे वैसी बात कहे तो...? वह चाहे एकान्त में भी क्यों न कहे, आपको ऐसी बात अच्छी नहीं लगती। कहने वाला शूगर कोटेड टोंट मारते हुए भी कहे तो? (तो भी अच्छा नहीं लगता) लेकिन बात को यदि प्रेम से कहे, आत्मीयता से रखे तो उस बात का असर हुए बिना नहीं रहता। मान लो आपने किसी को ऐसी जगह देखा जो योग्य नहीं, व्यसन का स्थान है, चाहे जुआघर हो या शराबघर अथवा कोई अश्लील घर, लेकिन वहाँ देख कर भी सीधा कहना ठीक नहीं। उसे आप इस तरह कहें कि आप जैसे धर्मी आदमी को मैंने अमुक जगह देखा, क्या आप वहाँ खड़े थे या मेरा वहम है। आप यदि इस रूप में कहें कि हो सकता है मुझे वहम हो गया हो, वास्तविकता क्या है बताना चाहें तो बतायें।

आप घर में रहते हैं। परिवार में कोई बुराई है, उस बुराई को मिटाने के लिए भी कहना पड़ता है, बिना कहे काम चलने वाला नहीं है, पर कहना कैसे? तीखे शब्दों में कहें तो हो सकता है परिवार के सदस्य सुनें, न भी सुनें और यह भी हो सकता है कि वे वापस सुनाने को तैयार हो जायें। कहिये, पर युक्तिसंगत कहिये। कुछ लोग कह सकते हैं कि बुराई मिटाने के लिए इतनी मिठास में क्यों कहें? किन्तु आप अपने को दृष्टिगत रखकर सोचें कि आपको जब कोई कड़वी कहे वह आपको इष्ट नहीं तो दूसरों को कहना कहाँ तक ठीक है? आपने पहले भी सुना होगा- "दुर्जन की सक्रियता उतना नुकसान नहीं करती जितनी सज्जन की निष्क्रियता नुकसान करती है।"

वर्धमान महावीर ने दीक्षा ले ली। दीक्षा लेने के बाद साढ़े बारह वर्ष तक दुःख देने वाले, कष्ट-पीड़ा पहुँचाने वाले, परीषह देने वाले, निरन्तर अनेक प्रसंग बने, लेकिन संयम-समता के कारण बीस-बीस परीषह देने वाले संगम को भी हाथ जोड़कर जाना पड़ा।

आप वर्षा में छतरी लेकर निकलते हैं। इसी तरह संयम को साथ लेकर चलिये, फिर आप चाहे घर में रहें, चाहे परिवार में या संघ-समाज में रहें, प्रेम-आत्मीयता से उत्थान की बात कहते जाइये, आपको सब जगह आदर मिलेगा।

घी है तो चिकनाहट रहेगी। आप उसमें पचास चीजें मिला दें, चिकनाहट कम नहीं होगी। नमक में सौ चीजें मिलाएं तो क्या खारापन कम हो जायेगा? नमक खारा है, खारा ही रहेगा। संयम है वहाँ सुख रहेगा। अगर वह सक्रिय होकर

परायों के साथ चल रहा है, काजल की कोठरी में है, अनार्य देश में चला गया वहाँ भी वही संयम के साथ है तो राक्षस वृति वाले भी आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। चन्दनबाला राजमहल में थी, बाजार में बिक रही थी, कोठरी में कैद थी तब भी उसने संयम नहीं छोड़ा। चंदनबाला भगवान महावीर के शासनकाल में प्रमुख साध्वी बनी। जब तक यह अवसर्पिणी काल रूप संसार चलेगा तब तक चन्दनबाला का नाम गाया जायेगा।

संयम की कोई परिधि नहीं है। कान, आँख,नाक, मुँह का संयम, मन - वचन-काया का संयम, किसी भी इन्द्रिय के विषय में हर जगह विवेक के साथ चलिये, आपके कर्म कटते चले जायेंगे। संयम छूट गया तो फिर चाहे जितने ऊपर बढ़े हों गिरना निश्चित है। ज्ञान में दो-चार शास्त्र नहीं, बतीस शास्त्र नहीं, चौदह पूर्वों का ज्ञान कर लिया, इतना सब कुछ कर लेने के बाद भी अगर संयम छूट गया तो गिरना निश्चित है। चढ़ते-चढ़ते कोई पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया, किन्तु असंयम से फिसल गया तो कहाँ जायेगा ? नीचे ही गिरने वाला है।

मैं छः-सात साल का था। नागौर के चारों ओर हाथियों को रोकने वाले बड़े दरवाजे बने हुए हैं। दरवाजों में लोहे की तीखी-तीखी कीलें लगी हुई थीं। दरवाजे को हाथी तोड़ना चाहे तो कीलों के कारण तोड़ना कठिन हो जाता। मैं दरवाजे के ऊपर चढ़ गया। हाथ छूटा, गिर गया। गिरते ही दरवाजे को रोकने के लिए लगी नुकीली कील लगी, माथा फूट गया। इतना बड़ा खड्डा हुआ कि ललाट में तीसरी आँख बन गई जिसका निशान आज भी विद्यमान है।

अगर कोई पूछे कि सहन कब तक करें ? इस संयम की सीमा क्या ? अगर कोई मिथ्याभाषण करे, निंदा करता रहे, कलंक लगाता जाय तो कहाँ तक सुनें ? सुनने की जब भी बात आती है प्रायः लोग पूछते हैं कहाँ तक सुनना ? सुनना संयम के लिए जरूरी है। सुनते जाओ जब तक यह शरीर है। आयु है- अथवा तब तक जब तक मंजिल नहीं मिल जाय।

झूठ-झूठ है, सत्य-सत्य है। हो सकता है सूरज को बादल आच्छादित कर दें। सूरज के मार्ग में गहरे बादल छा जाने पर भी दिन, दिन है। जीव निगोद में चला जाय, एक शरीर में अनन्त-अनन्त जीव रहें फिर भी जीव, जीव रहेगा जीव कभी अजीव नहीं हो सकता। इसी तरह धर्म, धर्म रहेगा। सहनशीलता, सहनशीलता रहेगी, संयम संयम रहेगा। हो सकता है कुछ बंधे कर्म ऐसे हैं जिनके कारण से मिथ्या आरोप भी सुनने पड़ सकते हैं। भगवान महावीर को भी सुनने

पड़े थे। जिन्हें चोर समझ कर फांसी पर लटका दिया था, लेकिन वे भी संयम में दृढ़ रहे।

सत्यवादी हरिश्चन्द्र पर कितने संकट आए? राजपाट छूट गया, पत्नी तारा बिक गई, हरिजन के वहाँ पानी भरना पड़ा, श्मशान में रहना पड़ा, तब भी सत्य सत्य ही रहा। कहूँ आगे- हरिश्चन्द्र आपके क्या लगते हैं? क्या आपकी जाति के हैं, या न्यात के हैं? कोई रिश्तेदारी है या कोई लेनदेन का व्यवहार है? आपको अपने बडेरों के नाम याद नहीं है। जोधपुर के कितने दरबार कब-कब हुए, आपको ये सब याद नहीं, पर किसी तरह का कोई भी संबंध नहीं होने पर भी शायद सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का नाम आपको क्या, छत्तीस कौम को याद है। क्यों? सत्य बोलने वाले बहुत हैं, परन्तु हरिश्चन्द्र का ही नाम, क्यों याद रखा जा रहा है? सत्य के पीछे राजा हरिश्चन्द्र ने जो बलिदान किया, वैसा अन्य किसी ने नहीं किया। उन्होंने सत्य का संयम नहीं छोड़ा।

राजा हरिश्चन्द्र भगवान महावीर के भी पहले हुए। करोड़ों वर्ष हो गये, फिर भी उनका नाम आज भी गाया जा रहा है, उसके पीछे कारण है संयम। यह संयम दया का भी है, सत्य का भी है, शील का भी है, सन्तोष का भी है। संयम की कोई सीमा नहीं।

स्वभाव में आने का जो रास्ता है वह है संयम। जिस क्रिया से, चिन्तन से, व्यवहार से, आत्मा अशुभ से हटकर शुभ में एकाकार होती है वह संयम है।

यम अर्थात् काबू करना। ऐसे-ऐसे लोग हैं जो जीवन भर मौन कर लेते हैं, जीभ खींच लेते हैं। पैर बुरे रास्ते पर जा रहे हैं तो पैर काट लेते हैं। यह यम है, संयम नहीं। व्यक्ति की इन्द्रियाँ मौजूद हैं, साधन मौजूद हैं, फिर भी वह मर्यादा में रहता है, स्वभाव में रहता है, सत्य पर रहता है, धर्म में रहता है, यह है संयम।

आप जहाँ भी रहो, संयम में रहो। सुखी रहना चाहो तो संयम में रहो। आज स्थिति कुछ दूसरी है। कोई किसी की बुराई करे, आप पास में आकर कहते हैं- वापस कह, मुझे सुनाई नहीं दिया। आज आप बुराई सुन रहे हैं, तो दूसरों की सुनते-सुनते आपकी बुराई भी कभी आपको सुननी पड़ेगी। आचार्य भगवन्त शोभाचन्द्र जी महाराज के शब्दों को याद करें- बुराई से तेरी जुबान खराब होगी और सुनने से मेरे कान। अतः वाणी पर संयम रखो।

शास्त्र कहता है- "जो निन्दा करता है वह सम्यक् दर्शनी नहीं।" जब सम्यक् दर्शन का ही पता नहीं तो फिर श्रावक और साधु तो बहुत ऊँची बात है।

श्रावकत्व एवं साधुपन महल हैं, नीव है समकित। जब नींव का पता नहीं तो महल कैसे ठहरेगा?

एक सूत्र सबके लिए है। हर आदमी सुख-शांति और समाधि चाहता है। किसी के पास धन है या नहीं, मकान है या नहीं, वह जिस किसी स्थिति में है सुख चाहता है। किन्तु वह सुखी कब रह सकता है? अगर उसमें संयम है तो। आपने चाहे जितना मिला लिया, संयम नहीं तो दुःख का साम्राज्य समाप्त नहीं होता है। छः खण्ड का राज्य मिला लिया तब भी संयम नहीं तो सुख नहीं, वहाँ भी दुःख ही है। आप नोट कर लें- असंयम है तो दुःख है, संयम में सुख है।

जिस कोणिक का नाम भगवान महावीर की पर्युपासना के सन्दर्भ में उववाइ सूत्र के माध्यम से संत-सतीवृन्द लिया करते हैं, असंयम के कारण वही कोणिक चक्रवर्ती बनने की हाय-हाय करते मरता है। कुंडरीक जब तक संयम में था, सुखी था, किन्तु असंयम की चाह में राज पाकर भी मात्र तीन दिन के असंयम से उसकी क्या गति हुई, आप जानते हैं।

आप कोशिश कीजिये जिससे जीवन में संयम आए। उपवास आज है, कल पारणक कर लेंगे। उपवास हो, बेला हो, तेला हो, आठ हो, मासखमण हो, तपश्चर्या कोई भी क्यों न हो, पारणक तो होगा ही, लेकिन खाने की तृष्णा पर, इच्छाओं पर संयम करेंगे तो सुखी रहेंगे। कषाय पर संयम करेंगे तो जीवन भर के लिए समाधि में रहेंगे। कषाय-त्याग चार महीने एवं एक वर्ष तक ही नहीं, जीवन भर के लिए हो सकता है। यह तप पूरे जीवन तक किया जा सकता है। कषाय-त्याग की भावना वाले रोज आते हैं, नियम करते हैं। आपको कषाय-त्याग की बात जंची, तो क्या करें? आप बोलने में संयम करें। मैं अपनी बात कहूँ। शास्त्र मेरे लिए कह रहा है-

बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ।।

-दशवैकालिक अध्ययन 8 गाथा 20

मैं न जाने कितने घरों में जाता हूँ। सुनता हूँ, देखता हूँ, लेकिन सुनी या देखी सभी बातें कहने की नहीं हैं। आप संघ में हैं। संघ में अमीर हैं, गरीब हैं सज्जन हैं तो विपरीत वृत्ति के भी लोग हो सकते हैं। फूल की जगह फूल है, कांटों की जगह कांटे भी हैं। सबका सही मूल्यांकन कर यथोचित व्यवहार करें, लाभ में रहेंगे। गुरुदेव का एक सूत्र कहकर बात समाप्त करूँ। आदिनाथ दीक्षा लेने गये तब उनके साथ चार हजार राजकुमार निकले। उस समय सात्त्विकता

थी, सरलता थी। मैं आपसे पृच्छा करूँ। उस युग में गुण्डे कितने, चोर कितने, लुच्चे-लफंगे कितने, डाकू कितने, बदमाश कितने, शीलहरण करने वाले कितने थे? तब चार हजार दीक्षित हुए थे। आज का हिसाब देखें तो गुण्डे आज ज्यादा हैं या पहले ज्यादा थे? अभी संतों की ज्यादा जरूरत है या उस समय ज्यादा थी? अब ज्यादा जरूरत है तो आप क्यों नहीं निकलते?

आज स्थान-स्थान पर माँग होती है कि हमारे यहाँ पुलिस चौकी होनी चाहिये। शस्त्रधारी सेना की आज माँग है तो शास्त्रधारी सेना की भी जरूरत है। क्योंकि आज साक्षरता की विपरीतता वाले राक्षस ज्यादा हैं। राक्षस ज्यादा क्यों? बेईमान ज्यादा क्यों? भ्रष्टाचारी क्यों बढ़ रहे हैं? लूटपाट-चोरी-गुण्डागिरी और बहन-बेटियों के साथ दुर्व्यहार जितना आज है, पहले नहीं था। आज पढ़े-लिखे ज्यादा हैं उतने ही अपराध बढ़ रहे हैं। आप दूसरों को सुधारने के लिए कदाचित् कुछ नहीं कर सकते तो कम-से-कम अपने घर में तो ऐसा संयम रखें जिससे लड़ाई नहीं हो। 'खामेमि सव्वे जीवा' दूर की बात है, पहले घर में, परिवार में, मौहल्ले में तो संयम से रहकर देखो। घर में कोई भोला है, कोई चतुर। कोई मूर्ख है, कोई पढ़ा-लिखा। कोई आँखों वाला है तो कोई अंधा भी हो सकता है। घर है तो कोई लूला-लंगड़ा भी हो सकता है। घर-परिवार में संयम रखकर चलने वाले सब जगह शांति में रहेंगे। आप पूरा संयम ग्रहण करना चाहें तो पाटे पर आ जाएं। घर में रहें तो शांति से रहें, समाज में रहें तो प्रेम से बोलें। केकड़ी में 45 साल तक एक अध्यक्ष रहा। मीटिंग में कोई दूसरी बात आती तो मीटिंग रोक देते, दूसरे दिन अध्यक्षजी उसके घर पर जाते, उसकी बात सुनते और समाधान करते, पर जो भी नियम पास होता निर्विरोध होता।

आप संयम में रहना सीख जाओ तो दुःख का कारण रहेगा क्या? आप संयम को अपनाए, शांति-समाधि प्राप्त कर सकेंगे। ■

बाल्यकाल में उपलब्धियाँ

1. कालीकट में पवित्रा कोठारी ने 3 दिन में भक्तामर स्तोत्र कण्ठस्थ किया है। पवित्रा कोठारी, सेफाली कोठारी एवं हीना चौपड़ा ने 5 दिनों में प्रतिक्रमण याद कर लिया।
2. चेन्नई में प्रणत धींग ने 9 अक्टूबर को सस्वर शुद्ध भक्तामर स्तोत्र सुनाया एवं सभा में सम्मान पाया। प्रणत धींग को सामायिक सूत्र एवं अनेक काव्य भी कण्ठस्थ हैं।

प्रवचन

संकल्प बल के धनी आचार्य श्री हस्ती

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. द्वारा 26 सितम्बर, 2011 को नागौर में फरमाए गए प्रवचन से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष श्री सम्पतराज जी चौधरी द्वारा संकलित अंश। **-सम्पादक**

गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब दृढ़ संकल्प के धनी थे। संकल्प लेने के बाद उसे पूरा करने के लिए कितनी भी प्रतिकूल परिस्थितियाँ आईं, उनसे वे विचलित नहीं हुए और संकल्पित लक्ष्य-प्राप्ति के लिये प्रबल पुरुषार्थ करते रहे। आचार्य श्री का वि.सं. 2024 का चातुर्मास जयपुर में था। चातुर्मास जब समाप्त होने को आ रहा था तब उनकी नज़र सवाईमाधोपुर के पल्लीवाल-पोरवाल क्षेत्र की ओर गई। एक समय इस क्षेत्र में पूज्य माधवमुनि जी का बड़ा प्रभाव था। वहाँ उन्होंने जिनशासन के उपवन को हरा-भरा बनाया था, परन्तु आचार्य श्री ने देखा कि माधवमुनि जी का लगाया उपवन सूख रहा है उसे फिर से सिंचित कर पुन: जीर्वित करना चाहिए। इसी संकल्प के साथ आचार्य श्री के कदम सवाईमाधोपुर की ओर चल पड़े। उस समय लोगों में धर्म के प्रति जागरूकता मंद पड़ रही थी। धर्म के प्रति पुन: जागरुकता जगाने के लक्ष्य से आचार्य श्री ने अगला चातुर्मास सवाईमाधोपुर में किया। चातुर्मास के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ भी नहीं थी। बन्सल भवन में चातुर्मास हुआ। प्रवचन देने के लिये भी जगह नहीं थी, अत: भवन के बाहर बरामदे में प्रवचन होता था। श्रोताओं को बैठने के लिये बस स्टेण्ड की खुली जगह होती थी। बरसात में बैठने हेतु श्रोताओं के लिया छप्पर लगा दिया गया और नीचे खोखे लगा दिये गये। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में धर्म-जागरण के लक्ष्य से चातुर्मास किया। आचार्य श्री के अथक प्रयासों से लोगों में धर्म के प्रति श्रद्धा जगी। उस क्षेत्र में खान-पान में मिर्चादि का प्रयोग कुछ अधिक होता है। स्वयं आचार्य श्री दही में पानी मिलाकर आहार कर लेते थे। उनके सतत प्रबल पुरुषार्थ से जिनशासन की बगिया पोरवाल-पल्लीवाल क्षेत्र में फिर से हरी-भरी हो गई। आचार्य श्री प्रमुदित होकर संतों को भी उस क्षेत्र को सम्भालने की प्रेरणा करते थे।

आज पोरवाल-पल्लीवाल क्षेत्र आचार्य श्री से इतना जुड़ गया है कि

सम्भवतः सबसे अधिक स्वाध्यायी उसी क्षेत्र से हैं। आज भी वहाँ के श्रावकों को स्थानकों में नित्य प्रति सामूहिक रूप से अच्छी संख्या में सामायिक करते देखा जा सकता है। आज भी वहाँ धार्मिक शिक्षण शिविर नियमित लगते रहते हैं और अन्य जगह लगने वाले धार्मिक शिविरों में वहाँ के युवावर्ग और बच्चों की उपस्थिति अच्छी रहती है। आज भी वहाँ संत-सतियों के प्रवचनों में भरपूर उपस्थिति रहती है। संत-सती उस क्षेत्र में जाते हैं तो उनकी अगवानी में हजारों श्रद्धालु होते हैं। आचार्य हस्ती का जब सौवाँ जन्मदिन सवाईमाधोपुर में मनाया गया तो लोगों ने कहा कि वहाँ उपस्थिति तो संवत्सरी महापर्व की तरह थी। यहाँ चातुर्मास में भी उस क्षेत्र के श्रद्धालुओं को निरन्तर आते देख एक भाई ने तो मुझसे यह तक पूछ लिया कि गुरुदेव क्या आप सवाईमाधोपुर क्षेत्र से हैं? वहाँ के लोगों की प्रशंसा करते हुए अन्य श्रावक कहते हैं कि ये लोग श्रद्धालु तो हैं ही साथ ही साथ स्वावलम्बी भी हैं। आचार्य श्री ने उस क्षेत्र के लोगों का दिल जीत लिया था, जिसकी छाप आज उनके जीवन में स्पष्ट है।

इसी तरह चाहे बालोतरा या सिंवाची क्षेत्र हो या बाड़मेर, आचार्य श्री ने वहाँ-जिनशासन की अतीव प्रभावना की है। चाहे इतिहास लेखन का अति श्रम साध्य शोध कार्य हो या आगम सम्पादन एवं व्याख्या का कार्य हो, आचार्य श्री ने जिस किसी भी काम को करने का संकल्प ले लिया तो उसे पूरा करने में कितनी ही विपरीत परिस्थितियाँ आई, लेकिन वे कभी पीछे नहीं हटे। ■

जय-पराजय

श्री जितेन्द्र कुमार चौपड़ा

खेल के मैदान में हर खिलाड़ी जीत की प्रबल इच्छा लेकर ही उतरता है, फिर चाहे वह आप हों या आपका प्रतिद्वन्द्वी, क्योंकि हर मुकाबला/प्रतिस्पर्धा बराबरी पर समाप्त नहीं होती। जय-पराजय के परिणामस्वरूप मलाल करने या खुशी में मदमस्त होने से बेहतर है कि हार का मूल्यांकन और जीत का अवलोकन कर श्रेष्ठ बनने के द्वारा खोले जायें।

असल जीत वही है जो किसी श्रेष्ठ के विरुद्ध प्राप्त की जाये तथा असल हार वही है जो किसी निम्न/अश्रेष्ठ या निर्बल के समक्ष मिली हो, क्योंकि श्रेष्ठ के विरुद्ध संघर्ष से प्राप्त हार भी श्रेष्ठ कोटि के समकक्ष ही होती है।

-कार्यालय सहायक,

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर(राज.)

प्रवचन

ऊर्ध्वगमन में आत्मशक्ति है कारगर

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. द्वारा दिनाँक 28 जुलाई, 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर (राज.) में फरमाए गए प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है।-सम्पादक

बोधि दुर्लभ भावना द्वारा सुलभबोधि बनकर सम्पूर्ण जगत के लिए सुलभबोधि का पथ प्रशस्त बनाने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त एवं बोध की सुलभता का अपने जीवन से दिग्दर्शन करा प्राप्त दुर्लभ अवसर के श्रेष्ठतम लाभ की पावन प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्

ठाणांग (स्थानांग) सूत्र के तीसरे स्थान के चौथे उद्देशक में श्रमणोपासक एवं श्रमण के लिए तीन बातों का विवरण आया है, जिनका ध्यान करने पर महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला बना जा सकता है। आप श्रमणोपासकों के लिए कही गई तीन बातों में सर्वप्रथम है-**कया णं अहं अप्पं या बहुयं वा परिग्गहं परिचइस्सामि** ? कब मैं अल्प या बहुत परिग्रह का परित्याग करूंगा ? दूसरी बात है-**कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारित्तं पव्वइस्सामि** ? कब मैं मुण्डित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित होऊँगा ? और तीसरी बात है- **कया णं अहं अपच्छिममारणंतिय संलेहणा- झूसणा-झूसित्ते भत्तपाण-पडियाइक्खित्ते पाओवगते कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि** ? कब मैं अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना की आराधना से युक्त होकर भक्त-पान का परित्याग कर, पादोपगमनादि संथारा स्वीकार कर मृत्यु की आकांक्षा नहीं करता हुआ विचरूंगा ?

आपने भी ये तीन कथन पढ़े व सुने होंगे। श्रावक के तीन मनोरथ हैं ये। प्रथम मनोरथ में अब परिग्रह के साथ आरम्भ शब्द भी लगा दिया जाता है। मिर्च-मसाले लगाने से खाद्य वस्तुओं में स्वादिष्टपन बढ़ने के समान ही यहाँ शायद आरम्भ शब्द भी जुड़ गया हो। सामान्यजन प्रायः बात को नमक-मिर्च लगाकर प्रस्तुत करते हैं। मूल सूत्र में सिर्फ परिग्रह त्याग की बात आती है।

आरम्भ भी यदि छूट जाए तब तो दूसरा मनोरथ अणगार बनने की बात आ जाती है।

बात थी इन तीन मनोरथों से महानिर्जरा वाला और महापर्यवसान वाला बनने की। जीवादि नवतत्त्व जिनकी जानकारी प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है उसमें जीव-अजीव आदि तत्त्वों के साथ निर्जरा तत्त्व भी आता है। किसे कहते हैं निर्जरा ? आत्मा के साथ बंधे हुए कर्मों के झड़ने का नाम है निर्जरा। यह कर्म-निर्जरा जब बहुत अधिक प्रमाण में असंख्यात गुणी के क्रम से होती है तब वह महानिर्जरा कही जाती है। दूसरा शब्द आया है- महापर्यवसान वाला। महापर्यवसान शब्द के दो अर्थ होते हैं-एक समाधिमरण और दूसरा अपुनर्मरण। जिस व्यक्ति को महानिर्जरा होती है वह समाधिमरण को प्राप्त कर या तो कर्म मुक्त हो अपुनर्मरण वाला बन जाता है अर्थात् जन्म-मरण के अनन्त चक्र से छूट जाता है, सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बन जाता है या फिर उत्तम जाति की देव पर्याय में उत्पन्न होकर फिर क्रम से मुक्ति में जाता है, मोक्ष को प्राप्त करता है।

हमें और आपको भी चाह मुक्ति की है, साधना भी करते हैं इसी भावना से। चिन्तन करें क्या आपके कदम सचमुच आपकी चाह की ओर बढ़ रहे हैं ? आप यदि सांसारिक पदार्थों की चाहना के लिए कदम बढ़ाने की बात पर हाँ कह रहे हैं तो समझ लीजिए आपके कदम मोक्ष की तरफ नहीं, अपितु चार गति, चौरासी लाख योनियों में परिभ्रमण की तरफ, अनन्त जन्म-मरण में वृद्धि की तरफ बढ़ रहे हैं। परिग्रह में, मोह-माया-आसक्ति में रचे-पचे रहकर मोक्ष मार्ग पर कैसे बढ़ा जा सकता है ? सम्यग्दृष्टि जीव संसार की किसी वस्तु को अपनी नहीं मानता। परिग्रह में आसक्ति है तो दान नहीं किया जा सकता, पुण्यार्जन नहीं हो सकता। परिग्रह को त्यागने का जो प्रथम मनोरथ है उसके लिए आसक्ति का त्याग करना होगा, दानादि में आगे बढ़ना होगा, पुण्य कार्यों में मन रमाना होगा। यही पुण्य आपको धर्म से जोड़ सकेगा, निर्जरा के द्वार पर ले जा सकेगा, महानिर्जरा वाला बना सकेगा।

धर्मस्थान में बैठे हैं, तब तक आप ये सब सुन रहे हैं। यहाँ से बाहर जाकर घर, परिवार, व्यवसाय में डूब जायेंगे जो यहाँ सुना, भीतर में कितना गया, कितना रहा-कहा नहीं जा सकता, पर एक बात अच्छी तरह समझ लीजिए, भीतर में भरा है और वह जीव को ऊपर उठाने लायक है तो जीव ऊपर

जरूर उठेगा, ऊर्ध्वगामी बनेगा, कर्मभार को हल्का कर सकेगा। अभी श्रावण मास है। शहर में अनेक सांसारिक मेले-खेले हो रहे हैं, भ्रमण-रमण हो रहा है आपने मेलों आदि में घूमते हुए गुब्बारे बेचने वाले को तो देखा ही होगा।

एक मेले में कोई गुब्बारा बेचने वाला, गुब्बारे बेच रहा था। वह गुब्बारे लेकर फिरता, भरे हुए गुब्बारे। नीले-पीले-हरे-लाल-चमकीले अनेक रंग के गुब्बारे। वह आवाज लगाता-गुब्बारे ले लो गुब्बारे! बच्चे आते, कभी अकेले तो कभी अपने माता-पिता या अन्य पारिवारिकजनों के साथ लेते गुब्बारे, देते पैसे और चले जाते। जब बच्चे कम आ रहे होते, बिक्री का क्रम भंग-सा होने का हो तो वह किसी एक गुब्बारे में हीलियम गैस भरकर गुब्बारा फुलाता, मुँह बाँधता और उसे ऊपर की ओर छोड़ देता। गुब्बारा हवा में लहराता-सा ऊपर उठता, इधर-उधर उड़ता। बच्चे देखते उसे, आकर्षित होते वे और चल देते गुब्बारा खरीदने। गुब्बारे वाले ने कई बार इस तरह आकाश की ओर गुब्बारे छोड़े। रंग-बिरंगे गुब्बारों में से लाल भी, नीला भी, पीला भी, सफेद भी, हरा भी। तभी एक बच्चा आया और बोला गुब्बारे वाले अंकल! आपने लाल, पीला, नीला, हरा सभी रंग के गुब्बारे ऊपर उड़ाये। सभी रंग के गुब्बारे आकाश में उड़े। क्या इन सभी की तरह काला गुब्बारा भी ऊपर उड़ेगा ? वह बच्चा नहीं जानता कि गुब्बारा बाहर के रंग से ऊपर उड़ रहा है या किसी और कारण से ? उसे नहीं मालूम कि ऊपरी दिखने वाला रंग गुब्बारा के उड़ने का कारण नहीं है। कारण है हीलियम गैस। वह पदार्थ जो गुब्बारे के भीतर है। बस इसे ही आपको समझना है। इस बात को जानना, समझना ही हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है। रंग-रूप से, बढ़े-चढ़े व्यवसाय से, फलते-फूलते परिवार से यह जीव ऊर्ध्व गति की ओर नही बढ़ेगा, जीवन ऊपर की ओर नहीं उठेगा। जीवन तो ऊपर उठेगा भीतर में जो है उससे। सूरत नहीं, सीरत कारण है पुण्य का, निर्जरा का, मोक्ष का। भीतर जो है वह कौन ? आत्मा! उसी आत्मा का विकसित रूप ही वास्तविक जीवन-विकास है। "As You think, So you will be" आपके अन्तर का चिन्तन ही आपका निर्माण करेगा।

चिन्तन कौन कर सकता है ? चेतन ! इस चेतन को चैतन्य बनाने के लिए भेद-विज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। भेद-विज्ञान वह है जो शरीर और आत्मा, जड़ और चेतन के अन्तर को सिखाता है, जताता है। बताता है कि शरीर अन्य है और आत्मा अन्य है। आत्मा ही चेतन है। यह चेतन स्वयं में

अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन आदि गुणों का धारक है। प्रत्येक चेतन में, जीवात्मा में महात्मा एवं परमात्मा बनने की सामर्थ्य है। यह भेद-विज्ञान ही जीव को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कराता है। सम्यग्दर्शन को परिभाषित करते हुए आचार्यों ने कहा है-स्व संवेदनम् एव सम्यग्दर्शनं। स्व का संवेदन करना है और इसके लिए पर की जानकारी का होना आवश्यक है।

जीवन में दु:ख का समय जब आये तब अन्तर में क्या विचार आते हैं? यही न कि मुझे अमुक ने व्यथा दी, टीस-ठेस पहुँचाई, अत: मैं उससे बदला लूंगा, उसे ऐसा सबक दूँगा कि आगे से वह मेरे साथ किसी तरह का बुरा व्यवहार करना ही भूल जायेगा। यह चिन्तन अशुभ कर्मो के भार में वृद्धि करेगा। इस विचार से जीव का संसार-भ्रमण बढ़ेगा। जो दु:ख आया वह इस चिन्तन के कारण पुन: दु:ख पाने की राह बना देगा।

वस्तुत: दु:ख के समय इस जीव को चिन्तन यह करना चाहिये कि यह मेरे ही पूर्वार्जित कर्मो का परिणाम है। वे कर्म जो मेरे अन्तर में भरे हुए पड़े हैं उनके कारण मैं दु:ख का या असाता का वेदन कर रहा हूँ। मेरे किए कर्मो का ही यह फल है जिनके द्वारा या जिनके कारण दु:ख हुआ, अन्य तो निमित्त मात्र हैं। जीव अपने को जाने 'मैं कौन'? इस प्रश्न पर चिन्तन करे। इस प्रश्न का सही उत्तर मिल गया, उस उत्तर पर विश्वास हो गया तो समझ लीजिए हमने अपने को जान लिया, आत्मज्ञान के पथ पर कदम अग्रसर हो गए। जीव के इस दशा में आने पर जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन हो पायेगा।

आप में से अनेक हैं, जो कहते हैं कि हमने अमुक आचार्य को सुना, अमुक उपाध्याय को सुना, अमुक संत-सती को सुना, वर्षों तक सुना, वर्षों से सुनते आ रहे हैं। वर्तमान आचार्य भगवन्त को भी कई बार सुना, शासनप्रभाविकाजी से भी प्रभु वाणी सुनने का अनेक बार अवसर मिला। इतना-इतना, इतने-इतने समय से सुना, पर हमारे जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। हमारे विचार-आचार में अब तक बदलाव नहीं हुआ।

कैसे हो बदलाव ? बैठे स्थानक में हैं, गुरु की वीतराग वाणी का प्रवाह चल रहा है, किन्तु सुन रहे हैं कान, पर मन कहीं अन्यत्र है? आपका मन बाह्य जगत के रिश्ते-नातों में, व्यवसाय की उलझनों में, परिवार की समस्याओं में घूमता हुआ बाहर ही बाहर सुन रहा है। बात तो तब बने जब आपका अन्तर भी, आत्मा भी कान के साथ-साथ वीतराग वाणी सुने। जिस

जीव ने अपनी आत्मा को सुना दिया, जिसकी आत्मा ने गुरुवाणी सुन ली, वीतराग वाणी का रसास्वादन कर लिया फिर उसे बाहर की बात सुनने की आवश्कता नहीं-**उद्देसो पासगस्स णत्थि।** वह बाहर में रमता, घूमता हुआ भी उससे अलग ही रहेगा।

जब तक भीतर की नहीं सुनेगा तब तक सुननी पड़ेगी बाहर की। सुननी तो भीतर की सार्थक होगी, पर भीतर की नहीं सुन पा रहे आए हुए अवरोधों से, जल-निकास के लिए आपके घरों में नालियाँ बनी हुई हैं। कई बार जब किसी नाली में कचरा एकत्रित हो जाता है तो वह पानी के प्रवाह को बाधित कर देता है और जल-निकासी अवरुद्ध हो जाती है। ऐसे समय क्या करते हैं आप ? नाली में बाहर से कुछ डालते हैं, बांस, लोहे की छड़ आदि, जिससे वह कचरा हट जाये और जल-निकासी की राह बन जाए। बस यही बात जीव के साथ है। प्राणिमात्र के भीतर में कचरा इकट्ठा हो रखा है। वह कचरा अशुभ कर्मो का है, आपके वर्तमान जीवन के सकषाय विचारों का है। यह कचरा ही आपके अन्तर से आने वाली आवाज आप तक नहीं पहुँचने देता और गुरुवाणी, जिनवाणी को भी भीतर में जहाँ तक पहुँचना है, जिस आत्म-तत्त्व को स्पर्शित करना है वहाँ तक जा नहीं पाती। ये बाहर के शब्द, बांस की भाँति उस अवरोध को हटाकर भीतर के शब्द भीतर की आवाज सुनने में सहकारी बनते है, उपकारी बनते हैं।

अन्तर से, भीतर से आवाज आती है-यह आप भी जानते हैं। जब भी कोई गलत कंार्य, नियम विरुद्ध आचरण, असामयिक व्यवहार करते हैं तो अन्दर की आवाज आपको सावधान करती है-यह क्या कर रहा है ? अकरणीय है यही। पर चैतन्य बनने की राह ऐसी अवरुद्ध है कि उसे सुनकर भी अनसुना कर देता है जीव। झूठ बोलकर किसी को ठेस पहुँचातें, असली माल दिखाकर नकली माल देकर ठगी करते हैं, बाहर भ्रमणार्थ दोस्तों के साथ जाते हैं तब मद्यपान कर लेते हैं, जाने कितने अनैतिक काम मान, माया, लोभ वश कर लेते हैं। याद करिए, क्या उस समय भीतर से कोई आवाज नहीं आती? क्या आपको नहीं लगता कि आपका अन्तर्मन इस तरह की अनैतिक कार्यवाही करने से लगातार मना कर रहा है। सचेत-सावधान कर रहा है कि यह कार्य गलत हो रहा है, पाप का कार्य है यह, कर्मबन्धन हो रहा है इससे। डरते भी हैं कि किसी को मालूम पड़ गया तो क्या होगा ? पोल खुल गई तब क्या स्थिति

बनेगी ? पकड़ लिया गया तो सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि होगी। पुलिस में बात गई तो जेल भी जाना पड़ सकता है। किसी को भी पता नहीं लगे तब भी कर्मबन्धन तो निश्चित ही है।

आप प्रतिपल, प्रतिक्षण अपने भीतर की आवाज को नकार देते हैं, दबा देते हैं। हमारे जैन आगम प्रतिपल सावधान करते हैं, पर श्रोता सुनकर उसे यहीं छोड़ जाते हैं। आगम का अर्थ क्या है ? आगम का अर्थ है आना, भीतर में आना। आए तब अलौकिक प्रकाश। जिस दिन आगम का कोई शब्द, कुछ सार भीतर में आ गया तो समझ लीजिए सर्वस्व मिल गया, सब कुछ हासिल हो गया। आपने आगम के कुछ अंशों से जो जागृति प्राप्ति की, उसका प्रभाव भी बहुत सुन्दर रहेगा। एक व्यक्ति जो पूरी निद्रा के बाद जग जाता है, वह अपने आस-पास किसी अन्य को सोया हुआ देखे तो उसके मन में खलबली मचती है। सोचता है- अरे ! यह अभी तक सो ही रहा है ? वह उसे उठाने, जगाने का प्रयत्न करेगा। जब तक स्वयं सोया था, तब तक किसी तरह की विचारधारा नहीं थी, पर अब जागृत है तो जगाना चाहेगा।

मान लीजिए एक व्यक्ति आपके देखते-देखते किसी गड्ढे में गिर गया है। वह बालक, युवा या वृद्ध हो सकता है। आपका मन क्या कहेगा ? क्या करेंगे आप ? देखकर चल देंगे आगे ? नहीं ! आप उसे बाहर निकालने का प्रयत्न करेंगे। एक बार किसी युवक ने समुद्र में छलाँग लगा दी, रहा होगा कोई कारण, आया होगा किसी बात पर क्रोध, अन्तर का तूफान, बन गया बेभान, दुर्लभ अवसर को नष्ट कर रहा नादान। समुद्र में उसे डूबते देख लिया, किनारे खड़े मछुआरों में से तुरन्त कुछ मछुआरे समुद्र में कूद पड़े। तैरकर पहुँच गए युवक तक और बचा लिया डूबते युवक को। क्यों बचाया ? क्या लगता था वह उनका? कोई सम्बन्ध नहीं, कोई स्वार्थ नहीं, पर अन्दर की भावना, एक आवाज अन्दर से कि मर जायेगा बेचारा। बचाना चाहिये उसे। अन्तर में उठी इन करुणा की लहरियों ने उनसे यह शुभ कार्य करवाया। सामान्य करुणाशील भी सोते को जगाना चाहते हैं, डूबतों को बचाना चाहते हैं तो भीतर में पहुँचे हुए, तिरते हुए खेदज्ञ वीतरागी तीर्थंकर भगवन्त प्रत्येक जीव की दया से, प्राणिमात्र की रक्षा के लिए अर्थ रूप से जो बोलते हैं वही गणधरों द्वारा ग्रथित होने पर कहलाता है आगम। आप्त प्ररूपित गणधर ग्रथित महर्षि आचरित-आगम।

प्रसंग चल रहा था बाहर के चटकीले, भड़कीले या सीधे-सादे रंगों

के कारण से गुब्बारा ऊपर की तरफ नहीं उठता। यह गहन चिन्तन का विषय है, क्योंकि अधिकारी भी बाहर के रंगों की दौड़ में लगे हैं। कौनसे रंग ? अच्छा बड़ा बंगला, कार, एल.सी.डी., ए.सी., नौकर-चाकर, मोटा बैंक-बैलेन्स, फलता-फूलता व्यवसाय, सुन्दर पत्नी, बाल-बच्चे आदि कितने-कितने बाहरी रंगों में आपकी दौड़ निरन्तर जारी है। पर याद रखिए परम शांति, अक्षय सुख बाह्य रंग से नहीं, भीतर के संग से प्राप्त होगा। जीव पर-पदार्थों की भीड़ से ऊपर नहीं उठने वाला, उसकी ऊर्ध्व गति में विकास के लिए तो अनिवार्य है- ज्ञानी गुरुओं के श्रीमुख से वीतराग-वाणी का श्रवण और फिर उसी के अनुरूप चिन्तन-मनन एवं आचरण। ठाणांगजी सूत्र तो उस आचरण की आंतरिक भावना से भी महानिर्जरा, महापर्यवसान की बात कह रहा है। आगम आए भीतर, भीतर में भरे, तभी ऊपर उठ पाती है, यह आत्मा।

क्षेत्र की महापुण्यवानी और आप सभी का प्रबल सौभाग्य कि यहाँ आचार्य भगवन्त का चातुर्मास हुआ है। चार मास श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक। श्रावण का एक पक्ष, कृष्ण पक्ष व्यतीत हो गया है। आपमें में से अनेक ने अपने भीतर के कृष्ण पक्ष का कुछ न कुछ अनुभव किया है और गुरुवाणी, गुरुआज्ञा शिरोधार्य कर धर्म-ध्यान, तप-त्याग, सामायिक-स्वाध्याय, पौषध-प्रतिक्रमण, दया-सँवर आदि के क्षेत्र में कुछ कदम रखकर अपने भीतर के कृष्ण पक्ष को यत्किंचित् उज्ज्वल बनाने का कार्य किया है। कई आगे बढ़े हैं, कई कुछ-कुछ बढ़ रहे हैं, कुछ आगे तो नहीं बढ़े, पर सुकृत करने वालों, आगे बढ़ने वालों की तहेदिल से अनुमोदना करने में पीछे नहीं रहते। प्रयत्न कर पुरुषार्थ बढ़ाइए। सुलभ बोधि बनने के लिए आगे बढ़ना जरूरी है। नहीं बढ़े, वे बढ़े। कुछ-कुछ बढ़ें वे और बढ़ें। उत्साह बढ़ाएं अपना। इस स्थानक में, इस धर्मनगरी में इस चातुर्मास का एक कीर्तिमान बने, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है अपने जीवन के लक्ष्य का परिचय प्राप्त करे, लक्ष्य की ओर चरण धरें।

विक्रम संवत् 2000 में गुलाबपुरा की नदी में बाढ़ आई थी, भीषण बाढ़ थी। बड़ा भारी अनर्थ हुआ था। अपार धन हानि के साथ अत्यधिक जन-हानि भी हुई थी। क्यों ? पूर्व में जघन्य पाप-कार्यों का फल। महाभयंकर हिंसा आदि का परिणाम। दु:ख पाया हजारों-लाखों परिवारों ने पर पाया अपने ही कर्मों के कारण।

दुःख आज भी है। कौन है जगत में जो दुःखी नहीं। संसार तो दुःखों का दावानल ही है। संसारम्मि दुःखपउराए (उत्त. 8/1) अहो दुक्खो हु संसारो (उत्त. 19.16) कभी चिन्तन किया, मुझे पर-दुःख क्यों ? एक दुःख से निवृत्त होते हैं तो दूसरे दो तैयार क्यों मिलते हैं ? अमुक ने मुझे व्यापार में हानि पहुँचाई ? और भी अनेक बातें.........पर यह अमुक कौन ? जिसका नाम जिगर में, जुबान पर आ रहा है, वह वास्तविक दोषी नहीं ,उसके कारण नहीं पहुँचा अपने को कष्ट, क्लेश, दुःख। वह तो निमित्त मात्र है। सारे दुःखों की जड़ में हम स्वयं हैं। अपने ही कर्मो का फल पा रहे हैं। कर्मफल तो तीर्थंकरों, अरिहन्तों को भी भोगना पड़ता है। अन्तर जरूर है भोगने-भोगने में। एक भोगकर कर्म निःशेष कर जन्म-मरण मिटा देता है। इतने समत्व भाव से भोगता है वह कि नये कर्म भी नहीं बंधते और पुराने भी झड़ जाते हैं। दूसरा भोगते हुए हाय-त्राय, आर्त्त, रोना-पीटना करता है और पुराने भोगता हुआ नये कर्मो का बंध कर लेता है। अंतर में भरे हुए का परिणाम। भोगी भोग रहे है। साथ ही संसारभ्रमण भी कर रहे हैं। इस भ्रमण से छूटना है, जन्म-मरण से पीछा छुड़ाना है, कर्मो के सर्वबंधन को सर्वदा के लिए तोड़ना है तो शुरू कर दीजिए, अपनी वास्तविक पहचान। चिन्तन प्रारम्भ कर दीजिए कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? कहाँ जाऊँगा ? हो गई पहचान, मिल गई ओलखाण, तो मोक्ष में रिजर्वेशन पक्का समझिए। गुलाबपुरा की बाड़ में कई परिवार बह गए। अनेकों बचे भी। उनमें एक परिवार के पिता-पुत्र भी संयोगवश बचे रहे गए। उनका चिन्तन चला-हम क्यों बच गए ? चिन्तन आगे बढ़ा। दिशा सही थी चिन्तन की। विरक्ति आ गई और उन दोनों ने दीक्षा ग्रहण कर ली। यहाँ जो आत्म-जागृति आई दोनों को वह आकस्मिक विपत्ति से आई।

शास्त्रों में उल्लेख मिलता है-वेदना व वियोग वैराग्य के प्रधान निमित्त बन सकते हैं। ध्यान रखिए, यहाँ निमित्त शब्द का प्रयोग हुआ है। क्यों ? क्योंकि वास्तविक रूप से तो यह जागृति उनके पूर्व संचित पुण्यों, शुभ कर्मो के साथ वर्तमान के सत्पुरुषार्थ का परिणाम है। यदि ऐसी बात नहीं तो सभी बचने वालों का वैराग्य आ सकता था। पूर्व भव में पिता व पुत्र के सुपुण्य किए तभी वे सुलभबोधि बन सके। मुनिराज आचारांग के माध्यम से सुलभबोधि की चर्चा कर रहे थे। भले ही ठाणांगजी के तीसरे ठाणे में मनोरथ की चर्चा है। भले ही गुबारे के अन्दर भरी हवा की वार्त्ता करें, सब कुछ भीतरी परिणति पर निर्भर

है। तीन मनोरथ उसी अन्तर के ऊर्ध्वगामी चिन्तन की चर्चा कर रहे। आगम स्वाध्याय इसीलिये प्रारम्भ किया जा रहा है।

सुलभबोधि के प्रसंग में भगवती सूत्र तीसरे उद्देशक के पहले शतक में सनत् इन्द्र के लिए जो गणधर श्री गौतम प्रभु ने भगवान महावीर से पृच्छा की और प्रभु ने जो कहा, वह बहुत ही ध्यान पूर्वक सुनने, मनन-चिन्तन करने योग्य है। गौतम स्वामी प्रभु से पृच्छा करते हैं- हे भगवन् ! तीसरे देवलोक का इन्द्र-(2) भव सिद्धिक है या अभव सिद्धिक? (2) सम्यग्दृष्टि है या मिथ्यादृष्टि ? (3) परीत्त संसारी है या अनन्त संसारी ? (4) सुलभ बोधि है या दुर्लभ बोधि (5) आराधक है या विराधक और (6) चरम है या अचरम ? यही प्रश्न राजप्रश्नीय में सूर्याभ देव के लिए भी किये गये।

सर्वज्ञ, सर्वदर्शी भगवान महावीर ने गौतम गणधर की जिज्ञासा का समाधान करते हुए तीसरे देवलोक के इन्द्र को भवसिद्धिक, सम्यग्दृष्टि, परीत्त संसारी, सुलभबोधि, आराधक और चरम बताया।

सुनकर गणधर गौतम स्वामी ने पुन: पृच्छा की- भगवन् यह कैसे ? तब प्रभु ने फरमाया- बंहूणं समणाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावगाणं, बहूणं साविगाणं हियकामए, सुहकामए, पत्थकामए, आणुकंपिए, निस्सेयसिए, हिय-सुह-निस्सेसिए, से तेणट्ठेणं भवसिद्धिए जाव नो अचरिमे ।

इस पूरे कथन में एक बात जो समझनी है, वह यह कि बहुत से साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका का हित, सुख और नि:श्रेयस् (कल्याण) को चाहने वाला होने पर जीव सुलभबोधि बन जाता है।

पहले हित की बात है। सर्वप्रथम वह इनका हित चाहता है। फिर सुख की बात की गई है। हित एवं हित के साथ सुख की भावना हो। हित की उपेक्षा न हो। सुख की कामना, उसी के लिए प्रयत्न, पर हित का कोई विचार, कोई भावना नहीं तो समझ लीजिए आप अपनी भी हानि कर रहे हैं और जो सम्मुख है उसको भी हानि पहुँचा रहे हैं।

प्राप्त वस्तु के सदुपयोग से जीवन आगे बढ़ सकता है, जीवन का सदुपयोग करें तो संयम में आगे बढ़ेंगे और वह संयम ही जीवन का हित है, जहाँ तिल-तुस मात्र भी चिंता, रंच मात्र भी फिक्र नहीं। जिस संयम का चिन्तन जिस संयम का मनोरथ भी महानिर्जरा महापर्ववसान वाला है। प्रेरणा दी जा रही है, आत्मा को जगाने की। बड़ा पवित्र स्थान है यह पावटा स्थानक। अर्थ तो पाप

को हटा, बता ही दिया आचार्य भगवन्त ने। एक बात और स्मृति में ले लीजिए। महासती छोगाजी का जन्मदिन आज त्याग-तप से मनाने की बात चल रही है। उन्हीं की शिष्या महासती श्री सुन्दरकँवरजी म.सा. यहाँ पावटा स्थानक ग्यारह वर्ष विराजमान रहे। महाभाग्यवती प्रवर्तिनी ने कितना-कितना हित अपने हित-वचनों, अपने त्याग-तप मय व्यवहार से किया होगा ?

भीतर की भावना शुद्धि के साथ संयमियों के हित, सुख एवं निश्रेयस सम्पादन में सहकारी बन, स्वयं के हित सुख का सम्पादन करने वाले पात्रों का विवेचन प्रस्तुत करने वाला आगम है-सुखविपाक। आगम शब्द भी यही प्रेरणा कर रहा है- आगमयति हिताहितं बोधयति इति आगमः, अर्थात् जो हित अहित का बोध कराये वह आगम। हित सम्पादन के साथ सम्यक्त्व रत्न को प्राप्त करने वाले, सम्यग्दर्शन को प्रकटाने वाले साधकों की मुक्ति यात्रा की विवेचना करने वाला शास्त्र है- सुखविपाक। महासती श्री छोगाजी की संयमी यात्रा का वर्णन आचार्य भगवन्त के मुखारविन्द से श्रवण करें इसी मंगल भावना के साथ...। ■

रत्नद्वय का क्या कहना

श्री गजेन्द्र कुमार जैन

(तर्ज- दुनिया में देव अनेको हैं...।)

हीरा गुरुवर और मान गुरु, इन रत्नद्वय का क्या कहना।
प्रवचन की छटा निराली है, अब इन श्रमणों का क्या कहना।।
पीपाड़ शहर में जन्म लिया, और मारवाड़ को धन्य किया।
गुरुवर हस्ती का पाट लिया, ऐसे साधक का क्या कहना।।
गुण छत्तीस से ये सुशोभित हैं, और रत्न संघ के नायक हैं।
संत अनुशासन में प्रेरक हैं, ऐसे गुरुवर का क्या कहना।।
जोधाणा शहर में जन्म लिया, और सेठिया कुल को धन्य किया।
प्रिय नाम मान गुरु इनका है, आगम ज्ञाता का क्या कहना।।
गुण पच्चीस के ये धारी हैं, मुख-मंडल की छवि न्यारी है।
जो शान्त-सौम्य-तेजस्वी हैं, इनकी प्रज्ञा का क्या कहना।।
समभावों के निर्झर हैं, मन से करुणा के सरोवर हैं।
श्रद्धा से 'गजेन्द्र' का वंदन हैं, ऐसे आश्रय का क्या कहना।।

-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर-302001 (राज.)

तत्त्वबोध

बहुश्रुत : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री

जैन संस्कृति चारित्र-धर्म और श्रुत-धर्म का समानरूपेण प्रतिनिधित्व करती है। अन्य दृष्टि से ऐसा कथन भी यथार्थ है कि श्रुत धर्म ही जैन संस्कृति के आचार एवं विचार इन दोनों पक्षों का समीचीन समन्वय करता है। जो साधक श्रुत अर्थात् आगम में पारंगत होगा वह चारित्रनिष्ठ अवश्य होगा। चारित्रनिष्ठा श्रुत पारगामिता का अनिवार्य पक्ष है। चारित्र-निष्ठा के बिना जो साधक आगम के सागर में गोता लगाने जायेगा, वह अनेकान्त-दृष्टि के रहस्य को न समझ कर विकल्पों के भ्रमजाल में फंस जायेगा। स्याद्वाद शैली में प्ररूपित शास्त्रोक्त रहस्य को न समझकर संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय के भंवरजाल में फंस जायेगा। अतः बहुश्रुत में श्रुतनिष्ठा एवं चारित्रनिष्ठा ये दोनों आवश्यक हैं।

जो साधक गुरुचरणों में बैठकर विनय-भक्ति और सरलता-निश्छलता पूर्वक आसेवन-शिक्षा के साथ ग्रहण शिक्षा या शास्त्रज्ञान प्राप्त करता है वह प्रारम्भ में अल्पश्रुत होते हुए भी शनैःशनैः सर्व शास्त्रों की ग्रहण शिक्षा के साथ आसेवन शिक्षा प्राप्त कर लेता है। वह एक दिन बहुश्रुत बन जाता है। बहुश्रुत में केवल शास्त्रज्ञान ही नहीं, उसके साथ-साथ श्रद्धा और चारित्रिक गुणों से भी उसका जीवन ओत-प्रोत होना चाहिये। उसके श्रुतज्ञान युक्त जीवन की धवल चादर पर दुर्गुणों का काला धब्बा नहीं होना चाहिये। बहुश्रुत होने के लिये अबहुश्रुतता के पांच कारणों से दूर रहना चाहिये। बहुश्रुत बनने वालों को अभिमान, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य से दूर रहने के लिये सावधान किया है।[1] पूर्वोक्त पांच कारणों से साधक उभय प्रकार की शिक्षा के योग्य नहीं होता है। शिक्षा के अभाव में ऐसा साधक बहुश्रुत नहीं हो पाता है।

बहुश्रुत का शब्दशः अर्थ होता है बहुत सुना हुआ, अथवा बहुत विद्या पढ़ा हुआ। किन्तु जैन संस्कृति में बहुश्रुत का मात्र यह अर्थ विवक्षित नहीं है। बहुश्रुत के विभिन्न अर्थ हैं। जैसे कि जो बहुत से सूत्र अर्थात् शास्त्रों एवं उनके अर्थों और तदुभय-तात्पर्यों का धारक हो, वह बहुश्रुत कहलाता है। बहुश्रुत

वह है जो शास्त्रार्थ-पारंगत हो।[2] आगम वृद्ध को बहुश्रुत कहा गया है।[3] जिसको अंग प्रविष्ट, अंग बाह्य आदि बहुत प्रकार के आगमों का गम्भीर परिज्ञान हो, तथा जो बहुत से साधकों की शास्त्राध्ययन के साथ चारित्र-विशुद्धि कराने वाला युग प्रधान साधक हो वह बहुश्रुत है।[4] बहुश्रुत का अर्थ यह भी है कि सूत्र और अर्थ रूप से जिसका बहुत से सूत्रों पर अधिकार हो।[5] बहुश्रुत की जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट शैक्षणिक योग्यता का निरूपण करते हुए कहा गया है कि जघन्य बहुश्रुत वह है जो आचार-प्रकल्प एवं निशीथ सूत्र का ज्ञाता हो, मध्यम बहुश्रुत वह है जो बृहत्कल्प और व्यवहार सूत्र का ज्ञाता हो, तथा उत्कृष्ट बहुश्रुत वह है जो, नौवें, दसवें पूर्व तक का धारक हो।[6] जैन संस्कृति में बहुश्रुत का अपना महत्त्व है।

बहुश्रुत की तेजस्विता, परिपूर्णता, श्रेष्ठता और अपराजेयता के विषय में जितना भी निर्णय किया जाय, उतना ही न्यून है। जैसे शंख में रखा हुआ दूध विकृत नहीं होता है, वैसे ही बहुश्रुत के धर्म आदि सद्गुण सुरक्षित रहते हैं।[7] बहुश्रुत की तेजस्विता और पूर्णता के विषय में स्पष्टतः उल्लेख है कि जिस प्रकार अन्धकार का विध्वंसक उदीयमान सूर्य अपने तेज से जाज्वल्यमान होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी सहस्रों व्यक्तियों के अज्ञानान्धकार का विध्वंसक होकर अपने तप के तेज से जाज्वल्यमान होता है। जैसे नक्षत्रों के परिवार से परिवृत उडुपति चन्द्रमा पूर्णमासी की रात्रि में अपनी सकल कलाओं से परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी अनेक श्रुत साधकों ज्ञानाराधकों से तथा ज्ञानादि सकल कलाओं से परिपूर्ण प्रकाशमान होता है। जिस प्रकार कृषकादि सामाजिकों का कोष्ठागार अर्थात् अन्न-कोठार अनेक जनों के लिये सुरक्षित होता है, विविध धान्यों से परिपूर्ण होता है। उसी प्रकार बहुश्रुत भी अनेक जिज्ञासुजनों के लिये सुरक्षित ज्ञान भंडार के समान, अंग, उपांग, मूल, छेद आदि विविध श्रुतज्ञान विशेष से परिपूर्ण रहता है। जिस प्रकार अक्षय जलनिधि स्वयम्भूरमण समुद्र नानाविध रत्नों से परिपूर्ण होता है, उसी प्रकार सम्यग्ज्ञान का अक्षय-सागर बहुश्रुत भी नानाविध ज्ञान रत्नों से वास्तव में परिपूर्ण होता है।

बहुश्रुत की श्रेष्ठता के विषय में स्पष्टतः उल्लेख मिलता है कि जिस प्रकार कम्बोज देश में उत्पन्न अश्वों में कन्थक अश्व अपने शील, स्वभावादि

गुणों से जातिमान-आकीर्ण और वेग-स्फूर्ति में श्रेष्ठ होता है उसी प्रकार बहुश्रुत साधक भी श्रुत-शील प्रभृति गुणों से तथा शास्त्राध्ययन, अध्यापनादि में स्फूर्ति के गुणों से श्रेष्ठ होता है। जिस प्रकार अनाहत देव का सुदर्शन नामक जम्बूवृक्ष सर्ववृक्षों में श्रेष्ठ होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी अमृतफल तुल्य एवं श्रुतज्ञान में वरिष्ठ दिव्य आत्माओं द्वारा पूज्य होने से समस्त श्रमणों में श्रेष्ठ होता है। जैसे नीलवान् वर्षधर पर्वत से निःसृत जल-प्रवाह से परिपूर्ण और समुद्रगामिनी शीतानदी सकल नदियों में श्रेष्ठ मानी जाती है, उसी प्रकार महाप्रभु महावीर रूपी हिमाचल से निःसृत निर्मल श्रुतज्ञान-सलिल से परिपूर्ण और मोक्ष रूपी महासमुद्रगामी होने से बहुश्रुत भी समस्त श्रुतज्ञ साधुओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। जिस प्रकार नानाविध औषधियों से परिदीप्त, अतिमहान् मन्दर-मेरु पर्वत सर्व पर्वतों में श्रेष्ठ है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी श्रुतज्ञानाधिकता के कारण स्वभाव में स्थिर, आमर्षौधि आदि लब्धियों से प्रदीप्त, विद्याचरण में पारगामी अति महान् होने से सर्व साधुओं में श्रेष्ठ हैं।

इसी परिपार्श्व में बहुश्रुत की अपराजेयता का भी समुल्लेख करना प्रासंगिक होगा। जिस प्रकार हथिनियों से परिवृत साठ वर्ष का बलिष्ठ हाथी किसी से पराजित नहीं होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत साधक भी औत्पातिकी आदि बुद्धियों रूपी हथिनियों एवं विविध विद्याओं से युक्त होने से किसी से भी पराजित नहीं होता है। जैसे तीक्ष्ण दाढ़ों वाला पूर्ण वयस्क सिंह अपराजेय एवं वन्य पशुओं में प्रवर होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत मुनिराज भी नैगम, संग्रह, व्यवहार आदि नयों रूप दाढों तथा प्रतिभा, विद्वत्ता आदि गुणों के कारण सर्वमत वादियों से अपराजेय एवं साधकों में श्रेष्ठ होता है। जिस प्रकार शंख, चक्र और गदा धारक वासुदेव अप्रतिहत बलशाली योद्धा होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूप विविध आयुधों से युक्त एवं कर्म शत्रुओं को पराजित करने में अपराजेय योद्धा के समान अप्रतिहत ज्ञान दर्शन आदि से शक्तिमान होता है।

इसी परिप्रेक्ष्य में बहुश्रुत मुनिराज की पूज्यता, गरिमा एवं महिमा को जानना भी अनिवार्य है। जिस प्रकार सहस्राक्ष वज्रपाणि और पुरन्दर शक्रेन्द्र देवों का अधिपति एवं पूज्य होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी दिव्यात्माओं द्वारा पूज्य होने से देवों का स्वामी होता है। अर्थात् देवता भी उसे पूज्य मानकर उसकी सेवा करते हैं। जैसे तीखे सींगों एवं बलिष्ठ स्कन्धों वाला वृषभ

यूथाधिपति के रूप में सुशोभित होता है, उसी प्रकार स्व-शास्त्र, पर-शास्त्र अथवा स्व-पर सिद्धान्त ज्ञान रूप तीक्ष्ण शृंगों से संघ, गण, अथवा गच्छ का गुरुतर भार उठाने में वरिष्ठ स्कन्ध रूप बहुश्रुत भी धर्म-संघ के आचार्य-अधिपति के रूप में सुशोभित होता है। जिस प्रकार आकीर्ण अर्थात् जातिमान अश्व पर आरूढ़ शूरवीर योद्धा अपने दोनों ओर से होने वाले नान्दीघोषों, विजय वाद्यों तथा जयकार के नादों से सुशोभित होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत भी स्वाध्याय के मांगलिक-स्वरों से सुशोभित रहता है। जिस प्रकार शंख में रखा हुआ दूध अपने और अपने आधारभूत शंख के गुणों के कारण दोनों प्रकार से अकलुषित और निर्विकार रहता है, उसी प्रकार बहुश्रुत साधक में धर्म, कीर्ति और श्रुतज्ञान भी अपने आधारभूत साधक के गुणों से निर्मल, अबाधित एवं निर्विकार रहते हैं।

बहुश्रुत साधक में संनिहित उपर्युक्त धर्मादि सद्गुण वास्तव में मलिन, विकृत, अथवा क्षतियुक्त नहीं होते हैं, अबाधित रहते हैं। अथवा योग्य साधक रूपी भाजन में ज्ञान-प्रदाता बहुश्रुत का धर्म, कीर्ति एवं शास्त्रज्ञान अबाधित रूप होते हैं। जिस प्रकार महान् ऋद्धि सम्पन्न चातुरन्त चतुर्दिग्विजयी चक्रवर्ती चतुर्दश रत्नों का अधिपति अर्थात् स्वामी होता है, उसी प्रकार बहुश्रुत मुनिराज भी आमर्ष आदि ऋद्धियों तथा पुलाक आदि लब्धियों से सर्वथा सम्पन्न, चारों दिशाओं में विजय कीर्ति से युक्त भी होते हैं तथा चतुर्दश पूर्वों एवं चतुर्दश विद्याओं स्वामी के होते हैं। किं बहुना, बहुश्रुत साधक श्रेष्ठ के जीवन में विनयशीलता, अचपलता, निश्छलता, सरलता, अकुतूहलवृत्ति, विशेषतः कृतज्ञता, सागर-सी गम्भीरता, धरा सी क्षमाशीलता, पर-निन्दा-निर्वृत्तता, लज्जाशीलता, जितेन्द्रियता, अध्ययन-परायणता, व्यर्थ वाद-विवाद से विमुखता और आत्मध्यानलीनता प्रभृति सद्गुणों की प्रतिष्ठा होती है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि जैन संस्कृति में बहुश्रुत का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तविकता यह है कि बहुश्रुत होना सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से एक अनुपम उपलब्धि है। किन्तु बहुश्रुत की कार्यक्षमता, आध्यात्मिक-शक्ति, तेजस्विता, श्रेष्ठता और पूज्यता उसके शास्त्रीयज्ञान की अगाधता एवं चारित्रिक गुणों की सम्पन्नता पर आधारित है। बहुश्रुत स्वाध्यायनिष्ठा, श्रुतनिष्ठा एवं चारित्रनिष्ठा के समन्वय-कारी मधुर निर्झर होते हैं, जहाँ निरन्तर ज्ञान-दर्शन और चारित्र का

शीतल प्रवाह बहता रहता है।

सन्दर्भ :-

1. उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन-11, गाथा-3
2. सूत्रकृतांग सूत्र-श्रुतस्कन्ध 1,अध्याय 2, उद्देशक-1
3. दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन-8
4. व्यवहार सूत्र - गाथा 251
5. स्थानांग सूत्र, स्थान 8 वृत्ति
6. बृहत्कल्प सूत्र - उद्देशक 1, गाथा-404
7. उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन- 11, गाथा-15

ब्रह्मचर्यधारी बनें

श्री अजीत भण्डारी

श्रावक के पाँच अणुव्रतों- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह में श्रेष्ठ स्थान दिया गया है ब्रह्मचर्य को। रत्नसंघ के महान् आचार्य पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं संतों-महासतियों ने बह्मचर्य व्रत आराधन करवाने हेतु बहुत प्रयास किए हैं, लोगों को प्रबल प्रेरणा प्रदान की है। कई सदगृहस्थों ने 31, 35, 38-40 वर्ष की भरीपूरी जवानी में शीलव्रत ग्रहण किए हैं। शास्त्रों में जम्बूकुमार के द्वारा नव विवाहिता पत्नियों को छोड़, साधु-जीवन स्वीकार करने का उल्लेख है। विजय सेठ एवं विजया सेठानी का उदाहरण भी मिलता है।

हमारे महान संत-मुनिराजों ने भी 10,12,15 वर्ष की उम्र में महाव्रतों को अंगीकार किया है और हम 60-65-70 वर्ष की उम्र तक भी संसार के कीचड़ में फंसे हुए रंग भोग नहीं छोड़ना चाह रहे हैं। हम कच्चे घड़े जैसे हैं, जिसमें कोई उपदेश या समझाइश नहीं ठहरती। आज हमारा शरीर कमजोर हो गया है, इन्द्रियाँ निर्बल हो गई हैं, मुँह में दांत नहीं रहे, याद कमजोर हो चली है, बाल सारे सफेद हो गए हैं, फिर भी हम संतों के उपदेश एवं प्रेरणा से भी टस से मस नहीं हो रहे हैं। 58 से 60 वर्ष की उम्र तक तो सरकार भी रिटायर्ड कर देती है, फिर हम भोग-विलास से किस उम्र में रिटायर्ड होंगे। ज़रा सोचें एवं आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के मुखारविन्द से शीलव्रत का नियम ग्रहण करें।

-बी-1, दासपा हाउस, लोको रोड़, रातानाड़ा, जोधपुर-342003 (राज.)

English-Section

Religious Harmony and Fellowship of Faiths: A Jaina Perspective

Prof. Sagarmal Jain

Among the most burning problems, the world is facing today, religious fundamentalism and intolerance is the most crucial. The miraculous advancement in science and technology, provided us light-legged means of transportation and communication. As a result physical distances have no bars to meet the people of different nations, culture and religions. Our world is shrinking, but unluckily and disdainfully the distances of our hearts are widening day by day. Instead of developing mutual love, co-operation and faith, we are spreading hatred and hostility and thus ignoring the values of harmonious living and co-existence. The blind and mad race of nuclear weapons is a clear indication that the human race is proceeding towards its formidable funeral procession. Rabindranath Tagore rightly observed "For man to come near to one another and yet to ignore the claims of humanity is the sure process of suicide."[1] In the present circumstances, the only wayout left for the survival of mankind is to develop a firm belief in mutual co-operation and co-existence. Religious harmony and fellowship of faiths is the first and foremost need of our age.

Humanity as a Binding Force

Undoubtedly, we belong to different faiths, religions and cultures. Our modes of worship as well as way of living also differ to some extent. There is also no denying the fact that our philosophical approaches and viewpoints are divergent, but among these diversities there is a common thread of unity which binds all of us, and it is nothing except humanity. We all belong to the same human race. Unfortunately, at present, humanity as such is largely shoved into the background and differences of caste, colour and

creed have become more important for us. We have forgotten our essential unity and are conflicting on the basis of these apparent diversities. But we must bear in our mind that it is only humanity, which can conjoin the people of different faiths, cultures and nationalities. Jaina ācāryas declared the, human race as one (ega maṇussa jāi)[2]. The difference of caste, culture and creed are not only superficial but mostly the creation of man.

What is True Religion

The ultimate end in view of all religions is to ensure peace and happiness for the individual and to establish harmony within human society. However, as is known from history, countless wars have been fought in the name of the religion. The religion thus remains accused for the inestimable amount of bloodshed of mankind. Of course, it is not of the so-colled men of religion responsible for this horrible consequence. At present religion as such is largely shoved into the background or at best used in the service of political ideologies. If one believes that only his faith, his mode of worship and his political ideologies are the right means for securing peace and happiness for mankind, he cannot be tolerant to the view-points of his opponents. The immediacy, therefore, is to develop tolerance to and friendship for others. It is the only approach by which we can generate peace and harmony inside human society.

Can religion as a category, of which Jainism is a part, meet with this challenge of our times? Before answering this question, we must make a distinction between a true and a false religion. Because a true religion never supports violence, intolerance and fanatical outlook and it cannot be made responsible for the ignominious acts committed in the name of religion by such religious leaders who want to serve their vested interest. The barbarity committed in the past and perpetrated in the present in the name of religion is due very largely to the intolerance and fanaticism of the so-called religious leaders and their ignorant followers.

The only way of freeing oneself from this sordid situation is to comprehend to the true nature, indeed, to grasp the 'essence' of religion and to develop tolerance and respect for other's ideologies and faiths.

For the Jainas, a true religion consists in the practice of equanimity and its foundation is the observance of non-violence. In the Ācārāngasūtra, the earlier Jaina text (late 4th cent. B.C.) we come across these two definitions of religion: Equanimity is the essence of religion, while the observance of non-violence is its external exposition or a social aspect of religion. The Ācārānga mentions that practising of non-violence is the true and eternal religion.

Jainism, since its inception, believes in and preaches for peace, harmony and tolerance. It has been tolerant and respectful toward, other faiths and religious ideologies throughout its history of existence. In Jainism one hardly comes across instances of religious conflicts involving violence and bloodshed. At most one meets with instance; of disputations and strongly worded debates concerning ideological disagreements. The Jaina men of learning while opposing the different ideologies and religious standpoints, fully paid regard to them and accepted that the opponents' convictions may be valid from a certain standpoint.

Huminity as a true form of religion

First of all we are human being and then anything else i.e. Hindus, Buddhists, Christians, Muslimes, Sikkhas, Jainas and the like. To be a real human being, is a pre-condition for being a real Hindu etc. Our prime duty is to be a human in its real sense. This spirit is echoed in one of the earlier Jaina text Uttarādhyayana wherein Lord Mahāvira has laid down four conditions for a true religious being. viz- 1. Humanity, 2. true faith, 3. control over senses and 4. efforts for self-purification[3]. Thus we see that among these four conditions of a religious being, humanity occupies the first and the foremost position.

In Jainism religion is defined as a true nature of a

thing (Vatthu Sahāvo Dhammo[4]) and in the light of the above definition it can be said that humanity is the true religion of mankind, for, it is its essential nature. As a human being if we fail to behave like a human being, we have no right to call ourselves a religious being or even a human being. Bertrand Russell, the eminent philosopher and scientist of our age, suggests "I appeal as a human being to the human beings that remember your humanity and forget the rest. If you can do so the way lies open to a new paradise. If you cannot, nothing lies before you but universal death"[5]. And thus, I want to emphasize that humanity is our first and the foremost religion.

What is Humanity?

The question may be raised what we mean by the term humanity? The simple answer is, humanity is nothing but the presence of self awareness, reasonableness and self-control. These three qualities are accepted as distinguishing features between a human being and animal being by all the humanist thinkers of our age. These three basic qualities are comprehended in Jaina concept of three jewels, i.e. Samyak-Darśana (right vision), Samyak Jñāna (right knowledge) and Samyak cāritra (right conduct) respectively, which also constitute the path of liberation.[6] The presence of these three makes a being a perfect human being.

Fellowship means Unity in Diversity

Jaina thinkers assert that unity implies diversity. For them unity and diversity are the two facets of the same reality. Reality itself is unity in diversity. Absolute unity i.e. monism and absolute diversity i.e. pluralism, both of the theories are not agreeable to Jainas. According to them from the generic view point reality is one, but when viewed from modal view-point, it is many, Once a question was asked to Lord Mahāvira, O Lord! whether you are one or many. To this, Mahāvira replied, "From substantial view point I am one, but if viewed from changing conditions of mind and body, I am

different each moment and thus many. This view is further elaborated by Ācārya Mallişena. He says "What soever is one, is also many[7]." Really, unity in diversity is the law of nature. Nature everywhere is one, but there is diversity in it, as the natural phenomena differ from each other, so is the case with human beings also. Though all the human beings have some common characteristics and features, yet every individual-being differed from others has some specific qualities, It is also true about religions. All the religions have some common characteristics sharing with others as well as specific qualities of their own. Universal virtues such as non-violence, friendliness, service to the needy, truthfulness, honesty, control over senses, etc. are commonly shared by all the religions of the world. Unfortunately, at present, these common universal virtues, which are the essence of religious practices, have been shoved into background and external rituals, which are divergent in their nature, have become more important. Thus we have forgotten the essential unity of all the religions and are stressing their diversities. Though I am emphasizing the essential unity of all the religions, this does not mean that I am the supporter of one world religion or undermining the specialities and diversities of them. What I intend to say is that the absolute unity and absolute diversity, both are illusory concepts and fellowship of faith means unity in diversity. **(Continue in next issue)**

References:-

1. David C.V. The Voice of Humanity, (Manika-chand Depot. Ujjain) p.1.
2. ekkā manussā Jāi.Gāthā compiled by Yuvacāraya MahāPrajña, Jaina Vishva Bhārati Sansthān, Ladnun, 1993, 1.26.
3. Uttarādhyayana Sūtra, Translated by Sādhvi Chandanā, Sanmati Jñānpeeth, Agra, 3/1
4. Kārtikeyānuprekṣa, Edited by A.N. Upadhye, Shrimad Rajchandra Āshram, Agās 1960, 478.
5. David C.V. The Voice of Humanity.
6. Tattvārthasūtra, Umāsvati, Translated by Pt. Sukhlalji, P.V. Research Institute, Varanasi-5, 1.1.1.
7. Bhagavatīsūtra, 18.10

चिन्तन

जैन एकता के नये समीकरण की तलाश

डॉ. अनेकान्त कुमार जैन

'संघे शक्तिः कलौ युगे' – का सीधा अर्थ यही है कि वर्तमान में किसी भी समुदाय को अपने अस्तित्व की रक्षा यदि करनी है तो उसे सबसे पहले सामुदायिक रूप से एकता का परिचय देना होगा। मैं सोचता हूँ कि सामाजिक रूप से जैन समाज और संस्कृति में जो नये समीकरण बन रहे हैं वे वर्तमान में एकता के लिए सबसे बड़े बाधक तत्त्व हैं, उन पर चिन्तन करना आवश्यक है।

बढ़ता व्यक्तिवाद

जैन परम्परा का इतिहास रहा है कि यहाँ व्यक्ति पूजा को कभी प्रमुखता नहीं दी गयी। हमारा 'णमोकारमंत्र' इसका एक प्रबल उदाहारण है। सभी प्राचीन आचार्यों ने तीर्थंकरों की ही स्तुतियाँ की हैं, कभी किन्हीं आचार्य ने कुन्दकुन्द, समन्तभद्रादि पर स्तोत्रों की रचना नहीं की, न ही इनपर किन्हीं पुराणों की रचना हुयी। किन्तु वर्तमान में ऐसा लगने लगा है कि तीर्थंकरों का गुणगान कम और साक्षात् गुरुओं का गुणगान ज्यादा हो रहा है। यह प्रश्न हो सकता है कि इसमें हर्ज ही क्या है? सिर्फ साधु संस्था ही नहीं, बल्कि जैन समाज की अधिकांश सामाजिक संस्थाओं पर व्यक्तिवाद जमकर हावी है। इससे कई हानियाँ प्रबल रूप से सामने आ रही हैं।

मुनिभक्ति का बदलता स्वरूप

'प्रत्येक मुनि हमारा गुरु है' – इस भावना पर कुठाराघात हो रहा है। आज हम सिर्फ मुनिभक्त नहीं हैं बल्कि मात्र अमुक-अमुक मुनि के भक्त हैं। किन्हीं निश्चित मुनि या आचार्य का भक्त होने के नाते जैन श्रावक विभक्त हो गये हैं। कितने ही परिवार ऐसे हैं जो सिर्फ तभी चौका लगाते हैं या चातुर्मास समिति में रहते हैं जब उनके निजी कृपालु संत आते हैं अन्य मुनिराजों के प्रति उनकी वैसी भक्ति नहीं रहती। अतः समाज विभक्त हो जाता है। जब कि श्रावक के मन में ऐसा भेद नहीं होना चाहिए। विद्वानों को भी ऐसा भेद नहीं करना चाहिए। समाज़ की एकता में यह एक बाधक तत्त्व है।

एकता की समस्या और हमारी सोच

जैन समाज के सार्थक अस्तित्व की तलाश में 'एकता' एक महत्त्वपूर्ण

घटक है, खासकर आज जैसे वातावरण में कौमी एकता एक आवश्यक तत्व है। एकता के नाम पर हमने बहुत नारे लगाये हैं, किन्तु सच तो यह है कि प्रत्येक पंथ का अनुयायी अंदर ही अंदर अन्य पंथ के अनुयायियों को घोर एकान्तवादी, वज्र मिथ्यादृष्टि और जिन धर्म का ह्रास करने वाला समझते हैं। हमारे लिए एकता की परिभाषा यह है कि शेष सभी जैन पंथों और परम्पराओं का हमारी परम्परा में विलय हो जाये। वास्तविकता यह है कि इस प्रकार की एकता की कल्पना ही हमारे विघटन का मूल कारण है। अस्तित्व के संकट का सामना करने के लिए समस्त जैन पंथों, परम्पराओं, जातियों का एकजुट होना जरूरी भी है, परन्तु इस समरसता का अर्थ परम्पराओं और संस्कृतियों की विविधता का ह्रास नहीं है। आवश्यकता है परम्पराओं और संस्कृतियों के सहअस्तित्व के नये आधार की। समान लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समस्त जैन अवश्य एक हों, परन्तु सर्वव्यापी सांस्कृतिक व पारम्परिक एकरूपता न जरूरी है और न संभव है।

धर्मात्मा का मापदण्ड

सामाजिक दृष्टि से हम कितने धर्मात्मा हैं इसका मापदण्ड इस बात से शतप्रतिशत नहीं लगाया जा सकता कि हम कितनी तपस्या करते हैं? कितनी धार्मिक क्रियायें करते हैं? कितने व्रत करते हैं? - क्यों कि ये तो आत्मशोधन के मार्ग हैं, समाजशोधन से इनका सीधा-सीधा सम्बन्ध नहीं दिखायी देता। सामाजिक दृष्टि से धर्मात्मा होने का मापदण्ड इस बात पर निर्भर करता है कि आपका अपने विरोधियों के प्रति रवैया कैसा है? आप उनसे कैसे निपटते हैं? वहां पर आपका समत्व कितना सुरक्षित रहता है? अगर हम अपने विरोधियों के प्रति भी उदार भावना रख सकते हैं तो हमें एकता की बातें करनी चाहिए; अन्यथा सिर्फ अपनों से प्रेम तो दुनिया रखती है और यही बात एकता के लिए खतरा भी बन जाती है। विरोधियों के अस्तित्व को जड़ से उखाड़ फेंकने की संस्कृति को हम अनेकान्त संस्कृति नहीं कह सकते और न ही वह व्यक्ति धर्मात्मा हो सकता है जो ऐसा विचार करता है।

उदारवादी विचारों की कमी

यदि हम सचमुच यह चाहते हैं कि विभिन्न पंथों और विचारों के मध्य सामाजिक समरसता कायम रहे तो हम सभी को विचारों में तो उदार बनना होगा और चरित्र में कठोर। हमारी वैचारिक उदारता एवं सहिष्णुता हमें समाज के प्रत्येक वर्ग के बीच कषाय रहित सम्बंध बनाने में मदद देगी और हमारी

चारित्रिक कठोरता हमें हमारी मूलभूत परम्पराओं से असंपृक्त नहीं होने देगी। यह दृष्टि हम संपूर्ण भारतीय समाज के मध्य भी निर्मित कर सकते हैं। किन्तु दुर्भाग्यवश हम चरित्र में तो उदार हैं और विचारों में कठोर। हम अपनी जैन संस्कृति में ही विकसित अपने से इतर पंथ के प्रवचन नहीं सुन सकते। उनका साहित्य पढ़ नहीं सकते। उनके आगे विनयपूर्वक हाथ जोड़ने से हमें हमारा मोक्षमार्ग बाधित होता दिखायी देता है। हम खुद हर बात पर मूलधारा से अलग होकर चलना चाहते हैं। सांस्कृतिक, वैचारिक और सैद्धान्तिक विभिन्नताएं तो सदा से रहीं हैं और अगर इसका हम उज्ज्वल पक्ष देखें तो पायेगें कि इन विभिन्नताओं ने सदा हमें जड़ता से बचाया है। नये विचारों ने जन्म लेने के साथ संस्कृति को दिशा और गति ही प्रदान की है। अगर ये विभिन्नताएं न हों तो हम कूप मण्डूक हो जायेंगे। नयी सोच, नयी दिशा और नये परिवेश के लिए हमारे हर द्वार बन्द हो जायेंगे। तो हमें कितनी लम्बी दूरियां तय करनीं है। हम सर्जन में इतने अधिक व्यस्त हों कि इन संकीर्ण विवादों के लिए हमारे पास अवकाश ही न हो।

पहले जरूरी है सामाजिक समरसता

हम निश्चित तौर पर चाहेंगे कि जैन सिद्धांत 'अनेकान्त' सामाजिक मतभेदों का समाधान बने। हम पूरे विश्व से कहते हैं कि अनेकान्त को अपनाओ, क्यों कि संयुक्त राष्ट्र संघ वास्तव में अनेकान्त के धरातल पर ही स्थापित है। पर विडम्बना यह है कि हम खुद उसे अपनाने में असमर्थ हैं। हम परम्परा और विकास के बीच सन्तुलन नहीं अपना पा रहे हैं। वैचारिक कठोरता सामाजिक समरसता स्थापित करने में बाधक बनी हुयी है। जिनके पास इतना उदार हृदय ही न हो कि सबको सुन पढ़ सके, स्वीकार करें या न करें, पर सहन कर सकें उनसे यह उम्मीद कैसे की जाय कि वे जैन संस्कृति को कोई उन्नतिशील व व्यापक दिशा दे पायेंगे। इसलिए हमें हर कीमत पर यदि किसी बात पर सबसे पहले बल देना चाहिये तो वह है 'सामाजिक समरसता'। इसके बिना हमारे हर ख्वाब अधूरे हैं।

निरर्थक आलोचनाओं से बचना होगा

यह सच है कि वर्तमान युग आलोचना का युग है। जिस प्रकार वर्तमान हिन्दी साहित्य जगत् में आलोचना रचना से कहीं अधिक आगे निकल गयी है उसी प्रकार हमारी समाज में किसी सर्जनात्मक या रचनात्मक कार्य की अपेक्षा उन कार्यों की आलोचना अधिक महत्त्वपूर्ण मानी जा रही है। आलोचनाओं से

निष्कर्ष क्या निकलता है? यह आज तक समझ में नहीं आया। वैसे भी आजकल निन्दा या आलोचना से कोई नहीं घबड़ाता। हर प्रकार के विकृत आचार और विचार, क्रिया और काण्ड एक प्रकार से स्थायित्व ग्रहण कर चुके हैं। उन्हें बदलना संभव नहीं। दूसरी तरफ हमारा व्यक्तित्व 'विरोधी' हो गया है। हम प्रत्येक उचित अनुचित का विरोध करके उसे रोकना चाहते हैं, उसे जड़ से उखाड़ना चाहते हैं। यह हमारी ऐतिहासिक भूल है जिसे हम दुहराते जा रहे हैं। यदि वास्तव में हम कुछ करना चाहते हैं तो 'दोस्त' बनना होगा 'विरोधी' नहीं। किसी को अपना बनाकर या खुद उसका बनकर ही हम उसे कुछ समझा सकते हैं। किसी को जड़ से नहीं उखाड़ा जा सकता और अनेकान्त स्वरूपी लोकतंत्र में ऐसा करने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। यदि हम कुछ कर सकते हैं तो वह है 'परिष्कार'। जो स्थापित है उसे स्वीकारते हुये उसमें 'परिष्कार'। बस यही एक मंत्र है जो कुछ रच सकता है। हमारी निरर्थक आलोचनाओं का जाल हमें कुछ रचने के लिए अवकाश ही प्रदान नहीं करता। निरर्थक आलोचना सामाजिक समरसता स्थापित करने में एक बाधक तत्त्व है। हम सभी उससे बचें।

आइये! सहनशील बनें

हम सभी के सामने कई बड़ी चुनौतियां हैं जिनसे हमें निपटना है। इसके लिए हम सभी अपनी अपनी विचारधाराओं, परम्पराओं और सिद्धान्तों को कायम रखते हुए तथा एक दूसरे के ऊपर उन्हें न थोपते हुये कम से कम हम उन बिन्दुओं पर एक रहें जिन पर हम एक हैं। यहां व्यक्तिगत कषायों को अवकाश न रहे। अपने वैभव अपनी संस्कृति और अपने धर्म की रक्षा के लिए यदि किसी बात पर हमारा सम्मान न हो, कहीं कुछ सहना भी पड़े-तो सहें, कहीं कुछ सुनना भी पड़े-तो सुनें, हमें पद विसर्जित करना पड़े-तो करें, और अधिक क्या कहें? कहीं झुकना भी पड़े-तो झुकें; बशर्ते कोई बड़ा काम न रुके। अभी मंजिल दूर है, भगवान की कितनी सी वाणी हमारे पास सुरक्षित है। जो कुछ सुरक्षित है वह पूरी समझ में नहीं आयी है। हमें सत्य के अनेक अनुद्घाटित पक्षों को खोजना है। अतः हम किसी भी संभावना से इन्कार नहीं कर सकते। और करना भी नहीं चाहिए। यह कैसी विडम्बना है कि हम जैनेतर भाइयों के साथ तो हर प्रकार का समन्वय और वैचारिक साम्य स्थापित करके साथ उठ-बैठ लेते हैं, हँसबोल लेते हैं, किन्तु अपने ही जैन कुल में जन्म लेने वाले सभी भाइयों के साथ इसलिए उठ-बैठ नहीं पाते, क्योंकि वे अलग पंथ या विचारों के हैं? इस संदर्भ

में आचार्य विद्यानन्द मुनिराज का यह सन्देश हम सभी के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है-

'मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ'

अपकर्ष जब चरम पर पहुंचेगा तब उत्कर्ष भी प्रारम्भ होगा ही। हम शुभ के प्रति आश्वस्त रहें और कुछ रचते जायें और यदि खुद कुछ नहीं रच सकते तो जो रच रहा है उसका उत्साह वर्धन करें उसे हतोत्साहित न करें। याद रखें, परम्परा और संस्कृति के मजबूत बुनियाद वाले महल और प्रासाद एक दिन में निर्मित नहीं हुये हैं और न ही एक व्यक्ति ने निर्मित किये हैं। उनके निर्माण में हजारों वर्ष लगे हैं, तथा हजारों ऋषि-मुनियों, विद्वानों तथा कर्मठ लोगों ने निर्मित किये हैं। हम वर्तमान की उपेक्षा न करते हुये, विगत का पूरा सम्मान करते हुये सेवा, सहिष्णुता और संतुलन से जब भविष्य की ओर बढ़ेंगे तभी कर पायेंगे जैनधर्म, दर्शन, समाज और संस्कृति के सार्थक सह-अस्तित्व की तलाश।

सहायकाचार्य-जैनदर्शनविभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मा. विश्वविद्यालय), नई दिल्ली- 110016

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2011] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'बोरियत से कैसे बचें?' आलेख के प्रश्नों के उत्तर 64 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लोटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	विमलचन्द सुराणा-पीपाड़सिटी	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मेघना खिंवसरा-जोधपुर	20
तृतीय पुरस्कार- 150/-	पिंकी जैन-जयपुर	20
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	प्रियंका जैन-सवाईमाधोपुर	20
	मंजु जैन-जोधपुर	20
	ऋषभ जैन-हिण्डौन सिटी	19.5
	वंदना गेलड़ा-भदेसर	19.5
	कविता जैन-आलनपुर	19.5

जीवन-व्यवहार

शब्दों का सौंदर्य

श्री सुरेश सोजतिया

वाणी और विचारों का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मनुष्य के मन में जो भाव उठते हैं, वह उनकी अभिव्यक्ति शब्दों द्वारा करता है। शब्द हर्ष उत्पन्न कर सकते हैं, तो संघर्ष भी। शब्दों के बोलने का इतना महत्त्व होता है कि किसी के बोलने पर ऐसा लगता है कि यह बोलता ही रहे और हम सुनते ही रहें, तो किसी के बोलने से ऐसा लगता है, कि कब यह चुप हो और शांति हो। किसी के शब्द सुई-धागे का काम करते हैं, तो किसी के शब्द कैंची का कार्य करते हैं। कोई बोलता है, तो जैसे मुख से सदा फूल झरते हैं तो किसी के जैसे बोल कांटों की ही बरसात करते हैं।

शब्द किसी को राहत देने वाले होते हैं, तो किसी के तंग करने वाले होते हैं।

शब्द प्रेरणादायी हो सकते हैं, तो भड़काने वाले भी।

शब्द प्रभु की महिमा भी कर सकते हैं, तो किसी की निंदा भी।

शब्दों द्वारा ही मनुष्य लाखों करोड़ों के सौदे तय कर सकते हैं।

शब्द सच्चे भी हो सकते हैं, तो झूठे भी हो सकते हैं।

शब्द प्रवचन का रूप ले सकते हैं, तो गाली का भी।

इस प्रकार हम देखते हैं, कि शब्दों का कितना महत्त्व है। अतः मनुष्य को चाहिए कि मुख से कोई भी शब्द निकालने के पूर्व वह सोच ले कि इसके परिणाम क्या हो सकते हैं। शब्दों से अशांति, उपद्रव, अहित भी हो सकता है।

वास्तव में मनुष्य के शब्द लौटकर उसी के पास आते हैं, यदि वह शब्दों द्वारा किसी का सम्मान करता है, तो लोग भी उसके लिए आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं, और यदि वह इसके विपरीत शब्द बोलता है, तो बदले में उसे भी वैसे शब्दों की बरसात का सामना करना पड़ता है। एक बार एक राजा, उसका मंत्री और दरबान जंगल में रास्ता भूल गये, तीनों ही एक दूसरे से बिछुड़ गये। एक अंधा फकीर उस भयानक जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठा था। राजा ने उससे पूछा- "हे प्रज्ञाचक्षु! क्या यह रास्ता नगर की ओर जायेगा।" फकीर बोला- "हाँ राजन्! यह रास्ता नगर की ओर जायेगा।" कुछ समय पश्चात्

मंत्री वहाँ आया और पूछा– हे 'सूरदास' क्या यह रास्ता नगर की ओर जायेगा, हाँ मंत्रीवर, थोड़ी देर पहले ही राजा भी यहाँ से निकले हैं। थोड़ी देर बाद दरबान वहाँ आया और पूछा– "ओ अंधे" क्या यह रास्ता नगर की ओर जायेगा। हाँ, दरबान जी अभी कुछ समय पहले ही राजा और मंत्री आये थे, वे भी इसी रास्ते से नगर की ओर गये हैं। कुछ समय पश्चात् राजा, मंत्री और दरबान तीनों मिले, और उस अंधे फकीर से हुई बातचीत तीनों ने बताई, तीनों ही आश्चर्य चकित थे, कि उस अंधे फकीर ने कैसे जान लिया कि कौन राजा, कौन मंत्री, कौन दरबान है, अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु राजा, मंत्री और दरबान फिर से उस अंधे फकीर के पास पहुँचे और पूछा– "आपने यह कैसे जान लिया कि कौन क्या है, जबकि आपको तो आँखों से कुछ भी नहीं दिखता है।" उस अंधे फकीर ने कहा– "मैंने तो आपके द्वारा मुझे किए सम्बोधन से ही जान लिया था।" 'प्रज्ञाचक्षु' जैसा कर्ण मधुर शब्द राजा का ही हो सकता है, 'सूरदास' शब्द इतना मधुर नहीं तो कठोर भी नहीं था, सो मैंने जान लिया था, यह मंत्री द्वारा कहा गया शब्द हो सकता है। 'ओ अंधे' रौब में कहा शब्द दरबान के अलावा कौन बोल सकता है। शब्द के सम्बोधन से एक अन्धा फकीर भी जान गया।

"वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आपे शीतल होय।।"

इसलिए हमें चाहिए कि शब्द रचना करना सीखें।

मंथरा द्वारा कैकयी को कहे शब्दों ने ही रामायण की रचना कर डाली, तो द्रौपदी द्वारा दुर्योधन को किए सम्बोधन "अंधे का बेटा अंधा" ने महाभारत का युद्ध करा दिया। अब हम देखें कि सामने वाला जो शब्दों का प्रयोग हमारे लिए कर रहा है, उसे ग्रहण करना या नहीं, यह तो हमारे ऊपर निर्भर करता है।

एक ज्ञानी संत सड़क मार्ग से चले जा रहे थे। एक व्यक्ति बुरी गालियों की बौछार उनके ऊपर करता पीछे चला आ रहा था, पर संत पर उनका कोई प्रभाव नहीं हो रहा था, आखिरकार वह व्यक्ति गालियाँ देते-देते थक गया, और संत से कहने लगा– "आपने तो कुछ जवाब ही नहीं दिया।" तब संत ने मुस्कुराते हुए कहा– "भैय्या! मैंने तो तेरी एक भी गाली कबूल नहीं की, तो फिर जवाब देने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता है।" वह व्यक्ति संत के चरणों में गिर पड़ा। शब्दों का महत्त्व तो इतना अधिक है, कि हम इन्हीं शब्दों

से वैरी को अपना बना सकते हैं, तो स्वजन को अपना वैरी भी बना सकते हैं।

एक झूठ को छिपाने के लिए कई बार सौ झूठ बोलने पड़ते हैं, पर सत्य बोलने पर यह नहीं करना पड़ता है। हमारे द्वारा झूठ बोला गया हमें बहुत समय तक याद रखना पड़ता है, कि हमने उस समय क्या कहा था, यहाँ भी वह कहना है, सत्य बोलने में हमें कुछ भी याद नहीं रखना पड़ता है। इसीलिए तो कहते हैं- कि बोलना है, तो सच बोलो, सच किसी कारणवश न बोल सको, तो मौन रखो, लेकिन झूठ कदापि न बोलो।

हमारे मुँह से बोले शब्द किसी की जान बचा सकते हैं, तो किसी को फाँसी के फंदे पर भी चढ़ा सकते हैं।

"शब्द अमूल्य है, उनकी कीमत जानें"

- राजेश एजेंसीज, 65, न्यू क्लॉथ मार्केट, अकोला (महा.)

प्रेरक-विचार

1. हर परिस्थिति में अभाव रहा हुआ है। परिस्थिति को बदलने व बनाये रखने का चिन्तन आर्तध्यान है। जैसी परिस्थिति मिली है उसे स्वीकार कर सदुपयोग करना धर्मध्यान है।
2. हृदय की कोमलता विनय है।
3. आत्मीयता के भाव को जगाकर कषाय को शीघ्रता से घटा सकते हैं।
4. संसार की वह घटना जो अध्यात्म में प्रवेश करने की हेतु बनती है, वह धर्मकथा है।
5. बाहर की वस्तुओं से सुख मिलता है- इस मिथ्या धारणा से जीव पाप करता है।
6. साफ करने वाला पानी रंग के संयोग से गन्दा करने वाला हो जाता है। उसी तरह आत्मशुद्धिकारक दान अहंकार से युक्त होने पर मलिन करने वाला हो जाता है। अतः संयोग को हटाओ।
7. राग-द्वेष का उत्पन्न नहीं होना अहिंसा है।
8. कषाय भीतर की क्रिया है और भ्रष्टाचार बाह्य क्रिया है। कषाय कारण है एवं भ्रष्टाचार उसका कार्य है।
9. बाहर से जुड़ना प्रमाद है और भीतर से जुड़ना अप्रमाद है।

-सन्त-प्रवचनों से संकलित

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 71)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(निर्ग्रन्थ का स्वरूप)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं?

समाधान– जो मोह रहित हो, उसे निर्ग्रन्थ कहते हैं। अथवा निकल गयी है राग-द्वेष की ग्रन्थि जिसकी, उसे निर्ग्रन्थ कहते हैं। दूसरे शब्दों में जिनके मोहनीय कर्म का न तो प्रदेशोदय है और न ही विपाकोदय है, ऐसे चारित्रात्माओं को निर्ग्रन्थ कहते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ के प्रमुख भेद कौन-कौन से हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ के प्रमुख दो भेद हैं- 1. उपशान्तमोह निर्ग्रन्थ और क्षीणमोह निर्ग्रन्थ।

उपशान्तमोह निर्ग्रन्थों के मोहनीय कर्म सत्ता में रहता है, किन्तु उदय बिल्कुल भी नहीं रहता, इनका गुणस्थान एक मात्र ग्यारहवाँ है। जबकि क्षीणमोह निर्ग्रन्थों के मोहनीय कर्म न तो उदय में रहता है और न ही सत्ता में। अर्थात् मोहनीय कर्म को जो जड़मूल से सदाकाल के लिए समाप्त कर वीतरागी बन जाते हैं, ऐसे साधकों को क्षीणमोह निर्ग्रन्थ कहते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ के उक्त भेदों के अन्य भेद कौन-कौन से हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ के उपशान्त-मोह और क्षीण-मोह इन दो भेदों के अन्य पाँच भेद होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

1. प्रथमसमय निर्ग्रन्थ- जिन्हें निर्ग्रन्थ बने अभी एक ही समय हुआ है, ऐसे निर्ग्रन्थ।

2. अप्रथमसमय निर्ग्रन्थ- जिन्हें निर्ग्रन्थ बने एक से अधिक समय हो चुके हैं, ऐसे निर्ग्रन्थ। अर्थात् प्रथम समय को छोड़कर शेष समयों में वर्तमान निर्ग्रन्थ अप्रथम समय निर्ग्रन्थ हैं।

3. चरमसमय निर्ग्रन्थ- जिन निर्ग्रन्थों का अन्तिम समय चल रहा है। ऐसे निर्ग्रन्थ अर्थात् अगले समय में या तो वे स्नातक

बन जायेंगे अथवा कषाय कुशील निर्ग्रन्थ बन जायेंगे अथवा काल करके पाँच अनुत्तर विमानवासी देव बन जायेंगे।

4. अचरम समय निर्ग्रन्थ- जिन निर्ग्रन्थों का अभी अन्तिम समय नहीं आया है, ऐसे निर्ग्रन्थ अचरम समय निर्गन्थ कहलाते हैं।

प्रथम-अप्रथम समय निर्ग्रन्थ के भेद पूर्वानुपूर्वी की अपेक्षा से हैं, जबकि चरम-अचरम समय निर्ग्रन्थ के भेद पश्चानुपूर्वी की अपेक्षा से किये गये हैं।

5. यथासूक्ष्म निर्ग्रन्थ- प्रथम समय, चरम समय आदि की विवक्षा किये बिना सामान्य रूप से सभी समयों वाले निर्ग्रन्थों को यथासूक्ष्म निर्ग्रन्थ कहते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ सवेदी होते हैं अथवा अवेदी?

समाधान– निर्ग्रन्थ ग्यारहवें तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती साधक होते हैं, जबकि तीनों वेदों का उदय नवें गुणस्थान के दूसरे भाग तक होता है। अतः निर्ग्रन्थ अवेदी ही होते हैं। अवेदी में भी यदि उपशम श्रेणी वाले हैं तो उपशान्त वेदी तथा क्षपक क्षेणी वाले हैं तो क्षीण वेदी कहलाते हैं। दूसरे शब्दों में ग्यारहवें गुणस्थान-वर्ती उपशान्तवेदी तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती क्षीणवेदी होते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ सरागी होते हैं अथवा वीतरागी?

समाधान– राग का उदय दसवें गुणस्थान तक रहता है, जबकि निर्ग्रन्थ दसवें गुणस्थान से ऊपर होते हैं, अतः वे सरागी नहीं होकर वीतरागी ही होते हैं। इसमें भी ग्यारहवें गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थ उपशान्त कषाय छद्मस्थ वीतरागी तथा बारहवें गुणस्थानवर्ती क्षीण कषाय छद्मस्थ वीतरागी निर्ग्रन्थ कहलाते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ कौनसे कल्प में होते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थ स्थित कल्प तथा अस्थित कल्प दोनों ही कल्पों में होते हैं। स्थितकल्प भरत-ऐरवत क्षेत्र में प्रथम व अन्तिम तीर्थंकर के शासनकाल में होता है। जबकि अस्थित कल्प मध्य के 22 तीर्थंकरों के शासन काल में तथा महाविदेह क्षेत्र में होता है।

दूसरी अपेक्षा से कल्प के दो भेद- जिनकल्प और स्थविर कल्प भी किये जाते हैं। इन दोनों ही कल्पों में जो नहीं हो, उन्हें 'कल्पातीत' कहते हैं।

निर्ग्रन्थ कल्पातीत ही होते हैं, उनमें जिनकल्प और स्थविर कल्पधर्म नहीं होते। अर्थात् निर्ग्रन्थ जिनकल्प और स्थविर कल्प से अलग कल्पातीत कहलाते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में कौन-कौन से चारित्र होते हैं?

समाधान– निर्ग्रन्थों में वर्तमान पर्याय की अपेक्षा से कथन करें तो एक यथाख्यात चारित्र ही होता है।

यथाख्यात चारित्र में भी ग्यारहवें गुणस्थान वाले की अपेक्षा उपशान्त कषाय यथाख्यात चारित्र तथा बारहवें गुणस्थान वाले निर्ग्रन्थ की अपेक्षा क्षीण कषाय यथाख्यात चारित्र होता है।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थ प्रतिसेवी होते हैं अथवा अप्रतिसेवी?

समाधान– प्रतिसेवना अर्थात् मूलगुण- उत्तर गुणों में दोष लगाना। मूलोत्तर गुणों में दोष प्रायः प्रमाद अवस्था में लगते हैं। जबकि निर्ग्रन्थ पूर्ण अप्रमत्त होते हैं, ग्यारहवें-बारहवें गुणस्थान में विद्यमान होने के कारण वे न तो मूल गुणों में दोष लगाते हैं, और न ही उत्तर गुणों में। अर्थात् प्रमाद व कषाय दोनों का ही उदय नहीं होने के कारण निर्ग्रन्थ अप्रतिसेवी ही होते हैं।

जिज्ञासा– निर्ग्रन्थों में ज्ञान व श्रुत कितना होता है?

समाधान– निर्ग्रन्थों में दो,तीन अथवा चार ज्ञान होते हैं। दो ज्ञान हो तो मति व श्रुत ज्ञान होते हैं। यदि तीन ज्ञान हों तो मति, श्रुत, अवधि अथवा मति, श्रुत और मनःपर्याय ज्ञान होते हैं। यदि चार ज्ञान हों तो मति, श्रुत, अवधि व मनःपर्याय ज्ञान होते हैं। उक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि बिना अवधिज्ञान के भी मनःपर्याय ज्ञान हो सकता है।

निर्ग्रन्थों में श्रुत की अपेक्षा विचार करें तो जघन्य पाँच समिति-तीन गुप्ति अर्थात् अष्ट प्रवचन माता का तथा उत्कृष्ट चौदह पूर्वों का श्रुत पढ़ते हैं।

इससे यह फलित होता है कि समिति गुप्ति का ज्ञान करके भी उसके अनुसार संयम-जीवन का पालन करने वाला साधक

ज्ञान, दर्शन व चारित्र का उत्कृष्ट आराधक बनकर उसी भव में निर्ग्रन्थ व स्नातक बनता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। जिनकी जानकारी और जीवन एक रूप हो जाये अर्थात् जानकारी और जीवन में अन्तर न रहे, वही साधक वीतरागी बनकर शाश्वत सिद्धि को प्राप्त कर सकता है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

है अभिलाषा आचार्यप्रवर...

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

आचार्यप्रवर!
आप चातुर्मासार्थ पधारे हमारे नगर
हमारी आराधना-अर्चना की स्वीकार
हुआ सचमुच में जन-उद्धार।

आपकी पद-रज को पाकर
हुआ है आनन्दमय महानगर।

आपका पधारना हुआ सुकृत
आपको पा हुआ महानगर उपकृत
सुप्त-सा धर्म हुआ झंकृत।

हमारे भर तो आचार्य नहीं
हो समूचे देश के श्रद्धेय अति सुनाम
रत्नसंघ हीरा-मान महान्।

आपको रोकना चाहते हम
हमारे घर-आंगन में
बढ़कर आप रुक गए
हमारे दुखिया मन में।

है अभिलाषा, आचार्यप्रवर
इस तन को, मन को
मिले पुनः आशीष धर्म जागरण की
जोधपुर महानगर के
जन-मन-गण को।

-"हुकम", 5-ए / 1, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर (राज.)

पत्र-स्तम्भ

दीवार जब टूट जाती है (9)

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरि जी

दो भाइयों में परस्पर किसी भी बात को लेकर अनबन हो सकती है एवं वे एक-दूसरे के प्रति घृणा तथा द्वेष से आविष्ट होकर कलह कर सकते हैं। ऐसे भाइयों में सुलह होना कितना कठिन है, यह तथ्य जानें यहाँ भाई यश एवं महाराज के पारस्परिक पत्रों के संवाद से।-सम्पादक

यश,

तुम्हारे पिछले तीनों पत्र मैंने पढ़े।
पलभर के लिए विश्वास ही नहीं हुआ कि तुमने जो कुछ लिखा है
वह सबकुछ सत्य ही है, परन्तु तुम्हारे शब्दों की सत्यता की प्रतीति
मुझे तभी हुई जब तुम्हारे बड़े भैया ने स्वयं मेरे पास आकर
तुम दोनों भाइयों के संबंधों में निर्मित हुई मधुरता की बात बताई।
उसमें भी उन्होंने एक बात तो गजब की कह दी।
''महाराज साहब,
यश के हृदय की महानता को समझने की मेरी कोई हैसियत नहीं है।
अन्याय मैंने उस पर किये हैं और
माफी आप होकर उसने मुझसे माँगी है।
भाई और भागीदार के नाते उसे जो भी अधिकार मुझे देने चाहिए थे
वे मैंने उसे नहीं दिये इसके बावजूद
आज तक उसने इस विषय में मुख से एक शब्द भी नहीं निकाला।
आज भले ही मैंने उसे व्यापार में आगे किया है, किन्तु
भविष्य में मैं उसे परिवार में भी आगे करना चाहता हूँ।
आखिर मेरा छोटा भाई आगे बढ़े और सभी क्षेत्रों में विकास करे
इसमें मेरा ही गौरव बढ़ेगा ना?
यश, इतना बोलते-बोलते तुम्हारे बड़े भैया भावविभोर हो गए।

उनकी आँखों में आँसुओं की बूंदों को देख मैं भी आश्चर्यचकित हो गया।
धन्यवाद तो मैं तुम्हें देना चाहता हूँ कि पारमार्थिक सत्य की विजय की खातिर
अहंकार का गला घोंट देने का पराक्रम तुमने करके दिखाया है।
कटु भूतकाल को भूल जाने की जबरदस्त ताकत
तुमने आत्मसात् करके दिखाई है।
न्याय-अन्याय को प्रधानता देने के बजाय
समाधान को प्रधानता देने की सम्यक् समझ तुमने प्राप्त कर ली है।
पदार्थ को केन्द्र में रखकर संघर्ष को जीवंत रखने की बजाय
प्रेम को प्रधानता देकर संघर्ष की शवयात्रा निकालने के विकल्प पर
तुमने सहमति की मुहर लगा दी है।
क्या लिखूँ तुम्हें?
ज़िद चाहे वस्तु के लिए हो अथवा विचार के लिए,
व्यक्ति के लिए हो या मान्यता के लिए,
संघर्षों को जन्म देने के सिवाय वह और कुछ भी नहीं करती।
परंतु जब व्यक्ति इन तमाम प्रकार की ज़िद में से
पीछे हटने के लिए तैयार हो जाता है तब उसे
उन संघर्षों को समाप्त करने में सफलता अवश्य मिलती है।
इतना ही नहीं,
संघर्षों के स्थान पर संवाद को,
क्लेश के स्थान पर प्रसन्नता को,
शत्रुता के स्थान पर मित्रता को,
उद्विग्नता के स्थान पर आनंद को और
निराशा के स्थान पर उत्साह को जन्म देने में भी
अवश्य सफलता मिलती है।
"पीछे हटने" के दुर्लभ विकल्प को अमल में लाकर
ऐसे सुन्दर परिणाम का सर्जन करने में तुम्हें सफलता मिली है इसके लिए
मैं तुम्हें हृदय से बधाई देता हूँ।
तुम्हारे बड़े भैया भी समान रूप से धन्यवाद के अधिकारी हैं।

तुम समाधान के मार्ग पर एक ही कदम आगे बढ़े होंगे,
जबकि उस मार्ग पर तुम्हारा सत्कार करने के लिए वे निन्यानवे कदम
सामने होकर आए हैं।
तुमने उनसे क्षमा मांगी होगी
जबकि उन्होंने तुम्हें प्रेम से भिगो दिया है।
"व्यापार में वे तुम्हें साथ रखें।" तुमने शायद
इतनी ही अपेक्षा रखी होगी जबकि व्यापार का सम्पूर्ण
काम-काज उन्होंने तुम्हें सौंप दिया।
याद रखना।
कुदरत मैदान का नहीं, गुफा का प्रतिनिधित्व करती है।
मैदान में आप जो बोलते हैं, वह सामने वाले को सुनाई देता है।
जबकि गुफा में आप जो भी बोलते हैं वह आपको सुनाई देता है।
मैं क्या कहना चाहता हूँ, तुम समझ गए होगे।
महाराज साहब,
आपसे एक बात पूछूँ?
हम दूसरों को जो देते हैं
वहीं हमें मिलता है
क्या यह बात शत-प्रतिशत सही है?
यह बात पूछने की इच्छा मुझे इसलिए हुई कि
बीते हुए जीवन में मुझे जो अनेक अनुभव हुए हैं वे सर्वथा विपरीत ही हैं।
मैंने दिया है प्रेम,
मुझे मिली है घृणा!
मैंने अपनाई सरलता,
मेरे नसीब में मूर्ख बनने का प्रसंग आया है।
मैंने रखी है क्षमा,
मेरी गणना "कमजोर" में हुई है।
मैंने किया है विश्वास,
मुझे विश्वासघात का सामना करना पड़ा है।

एक ही वाक्य में कहूँ तो
मैंने गुण अपनाएँ हैं फूलों के और
मुझे पीड़ा सहन करनी पड़ी है कंटकों की।
क्या समझना?

यश,

तुमने वृत्त तो देखा ही होगा?
उसकी सबसे गजब विशेषता कौनसी है यह तुम जानते हो?
वह जहाँ शुरु होता है, वहीं खत्म होता है।
हो सकता है कि वृत्त बिलकुल छोटा हो तो वह अपने प्रारंभबिन्दु पर
जल्दी पहुँच जाता है, किन्तु
यदि वह बड़ा है तो उसे अपने प्रारंभबिन्दु पर
वापस लौटने में देर लगती है।
तुमने जो सवाल पूछा है उसका यही जवाब है।
व्यक्ति का व्यवहार, वचन अथवा विचार
चाहे अच्छा हो या बुरा
उसका स्वरूप 'रेखा' का नहीं, बल्कि, 'वृत्त' का है।
वह जहाँ से प्रारंभ होता है, वहीं पर समाप्त होता है।
हो सकता है, कभी उसके परिणाम का अनुभव जल्दी हो,
और कभी उसके परिणाम का अनुभव होने में वर्षों वर्ष,
इतना ही नहीं जन्मोजन्म भी बीत जाते हैं।
परमात्मा महावीरदेव का जीवन तुम्हें पता ही होगा।
सत्रहवें भव में उन्होंने शय्यापालक के कानों में
धधकता सीसा डलवाकर जो वृत्त शुरु किया था वह वृत्त
सत्तावीसवें भव में उनके कानों में खीले ठोके गए तब
पूर्ण हुआ। क्या बताऊँ तुम्हें?

कर्मसत्ता का यही तो कमाल है।
कारण और कार्य के बीच, कभी-कभी वह
इतना दीर्घ अंतराल रख देती है कि सामान्य मनुष्य तो

कार्य की जड़ अर्थात् कारण को समझ ही नहीं पाता, पकड़ ही नहीं पाता।

और इसी कारण वह अपने व्यवहार, विचार और वचन को

सम्यक् रखने हेतु गंभीरता से प्रयत्न नहीं करता।

तुम्हें यही कहूँगा कि

तुम इस विषय में एकदम स्पष्ट हो जाना। क्योंकि

मैं अथवा तुम जीवन में वृत्त प्रारंभ किये बिना नहीं रह सकते।

जब तक हम संसार में हैं, वृत्त का प्रारंभ तो होगा ही।

बस इतनी ही सावधानी बरतनी है कि

अनजाने में भी हम कहीं गलत वृत्त का प्रारंभ न कर बैठें।

कठोर विचार, कर्कश वचन और क्रूर व्यवहार- इन तीनों में से

हम किसी के भी शिकार न बन जाएँ, क्योंकि तीनों का स्वरूप

''गलत वृत्त का है। यदि गलती से भी हम-कहीं इनका

प्रारंभ कर बैठे तो वह हम पर ही पूर्ण होगा इसमें

मुझे या तुम्हें जरा भी संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

कल दिये गये प्रेम का जवाब आज यदि हमें घृणा से मिला है

तो वह वास्तविकता इतना ही सूचित करती है कि किसी जन्म में

हमारे द्वारा शुरु किया गया घृणा का वृत्त आज अपने स्थान पर आकर पूर्ण हुआ है।

(क्रमशः)

सुखी होने के उपाय

निम्नलिखित की एक-एक माला प्रातःकाल प्रतिदिन फेरें।

1. नमस्कार मंत्र (पांच पद) की एक माला।
2. क्रोध मेरा नष्ट हो, क्षमा गुण प्रकट हो।
3. मान (अहंकार) मेरा नष्ट हो, विनय गुण प्रकट हो।
4. माया (कपट) मेरी नष्ट हो, सरलता गुण प्रकट हो।
5. लोभ (तृष्णा) मेरा नष्ट हो, संतोष गुण प्रकट हो।

प्रेषकः जौहरीमल छाजेड़, जोधपुर

कविता

जिनशासन के हम हैं प्रहरी, जिनशासन चमकाएंगे

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जिनशासन के हम हैं प्रहरी, जिनशासन चमकाएंगे,
जिनवाणी का सम्बल लेकर, उत्तम शिक्षा पाएंगे।
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।टेर।।

धर्म साधना बढ़े हमारी, घर घर में प्रचार हो,
जैनी हैं, हम जैनी बनकर, जीवन का उत्थान करें।
गूंजे जिनवाणी घर-घर में, भोर सुनहरी लाएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।1।।

ज्ञान पीपासु बन करके हम, ज्ञान ध्यान को सीखेंगे,
ज्ञान सुधा के अमीरस से हम, अपना अंतर सींचेंगे।
आगम का स्वाध्याय करेंगे, हीरे, मोती पाएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।2।।

भौतिकता की आंधी से हम, धर्म साधना भूल गए,
सुख के साधन जुटा रहे हैं, विषयों में हम झूल रहे।
वीर प्रभु का सुमिरन करके, सत-पथ को अपनाएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।3।।

महावीर के हम अनुयायी, इस पर जरा विचारो तुम,
मानव भव अनमोल मिला है, मत जीवन को हारो तुम।
मर्यादाओं में रह करके, जीवन सफल बनाएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।4।।

पौषध, दया, संवर की बातें, हमको ध्यान में लेना है,
सामायिक, प्रतिक्रमण की आदत, हमको रोज निभाना है।
तीन मनोरथ, चौदह नियम, प्रतिदिन हम दुहराएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।5।।

गुरु चरणों में आ करके हम, जीवन का निर्माण करें,
उत्तम शिक्षा पाकर गुरु से, अज्ञान अंधेरा दूर हरें।
बच्चा-बच्चा दृढ़ धर्मी हो, ऐसा अलख जगाएंगे,
जिनशासन के हम हैं प्रहरी.....।।6।।

-जनता साड़ी सेन्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

युवा-स्तम्भ

देश को क्या दे सकता हूँ मैं?

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

भ्रष्टाचार मुक्त समाज के लिये ''मैं क्या ले सकता हूँ'' के स्थान पर ''मैं क्या दे सकता हूँ'' की भावना आनी चाहिए।

देश के नागरिकों और खास तौर पर युवाओं को खुद से यह सवाल पूछना चाहिए- 'मैं देश को क्या दे सकता हूँ।''

प्यारे दोस्तों, एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक देश के रूप में भारत 64 वर्षों का सफर तय कर चुका है। यह हम सभी के लिए गौरव और खुशी का क्षण है। साथ ही हमें एक राष्ट्र के रूप में अपने विचारों को पुनर्जीवित करने, अपनी प्रगति की समीक्षा करने और इन चुनौतियों का सामना करने के लिए नई रणनीतियाँ बनाने की भी जरूरत है, जो 21 वीं सदी के भारत के समक्ष मुंह बाएँ खड़ी हैं। मेरा मानना है कि ऊर्जा और प्रेरणा से भरे युवा हमारी सबसे बड़ी सम्पदा हैं। भारत के पास ऐसे 60 करोड़ से भी अधिक युवा हैं और देश के समक्ष चुनौतियों का सामना करने, उपलब्ध संसाधनों का उपयुक्त दोहन करने और वर्ष 2020 तक आर्थिक रूप से विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए वे हमारी सबसे बड़ी उम्मीद हैं। यहाँ मैं विशेष रूप से दो युवाओं के बारे में बताना चाहूँगा, जो इस बात के बड़े उदाहरण हैं कि प्रेरणा से भरे युवा किस तरह खुद को और समाज को बदल सकते हैं।

मैं कर सकता हूँ:– दोस्तों, जब मैं भारत का राष्ट्रपति था, तब 28 अगस्त, 2006 को मैं आंध्रप्रदेश के आदिवासी विद्यार्थियों के एक समूह से मिला। मैंने उन सभी से एक ही सवाल किया– 'तुम क्या बनना चाहते हो?' कई छात्रों ने इस सवाल का अपनी तरह से जवाब दिया, लेकिन 9वीं कक्षा में पढ़ रहे **एक दृष्टिबाधित लड़के ने कहा कि 'मैं भारत का पहला दृष्टिबाधित राष्ट्रपति बनूंगा।'** मुझे उसकी महत्त्वाकांक्षा अच्छी लगी। मैंने उसे शुभकामनाएँ दी। इसके बाद उस लड़के ने कड़ी मेहनत की और 10वीं की परीक्षा में 90 फीसदी अंक पाए। बारहवीं की परीक्षा में उसने और अच्छा

प्रदर्शन करते हुए 96 फीसदी अंक पाने में कामयाबी हासिल की। उसका अगला लक्ष्य था एमआईटी कैम्ब्रिज में इंजीनियरिंग की पढ़ाई। उसकी कड़ी मेहनत और लगन के कारण उसे न केवल एमआईटी कैम्ब्रिज में सीट मिली, बल्कि उसकी फीस भी माफ कर दी गई। उसकी प्रतिभा को देखते हुये जीई (जनरल इलेक्ट्रिक) के वालंटियर्स ने उसकी अमेरिका यात्रा के लिये आर्थिक मदद की। जब जीई ने उसका ग्रेजुएशन पूरा होने पर उसके समक्ष जॉब का प्रस्ताव रखा, तो उसने जवाब दिया कि यदि वह भारत का राष्ट्रपति नहीं बन पाया तो जरूर इस पर विचार करेगा। इस लड़के का आत्मविश्वास अद्भुत है। संकल्प और दृढ़ता एक दृष्टिबाधित लड़के के जीवन में भी व्यापक बदलाव ला सकते हैं।

सपनों से सोच, सोच से हकीकतः- 7 जनवरी 2011 को मैं मीनाक्षी मिशन हॉस्पिटल में पीडियाट्रिक ऑन्कोलॉजी कैंसर यूनिट का शुभारंभ करने मदुरै गया था। कार्यक्रम के दौरान अचानक मैंने देखा कि एक व्यक्ति मेरी तरफ बढ़ा चला आ रहा है। मुझे उसकी शक्ल जानी-पहचानी लगी। करीब आने पर मैंने देखा कि वह मेरा पूर्व ड्राइवर था। 1982 से 1992 के दौरान जब मैं हैदराबाद में डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेन्ट लैब का डायरेक्टर था, तब वह मेरे लिये काम किया करता था। उसका नाम था वी. काथिरेसन। उन दस सालों के दौरान मैंने गौर किया था कि जब वह कार में मेरी प्रतीक्षा किया करता था तो वह उस समय का उपयोग कुछ न कुछ पढ़ने में किया करता था। मैंने उससे पूछा तुम फुर्सत के क्षणों में कुछ न कुछ पढ़ते क्यों रहते हो ? उसने जवाब दिया कि उसके बच्चे उससे बहुत सवाल पूछते हैं, इसलिये उसने पढ़ना शुरू कर दिया है, ताकि उनके सवालों का कुछ तो जवाब दे पाए। पढ़ाई के प्रति उसकी इस लगन ने मुझे प्रभावित किया। मैंने उससे कहा कि वह पत्राचार पाठ्यक्रम के जरिये फिर से पढ़ाई की शुरुआत करे और बारहवीं पास करने के बाद उच्च शिक्षा के लिये तैयारी करे। उसने इसे एक चुनौती की तरह लिया। बी.ए. पास करने के बाद उसने इतिहास में एम.ए. किया। इसके बाद उसने राजनीति विज्ञान में एम.ए. के साथ ही बी.एड़ व एम.एड. भी किया। फिर उसने डॉक्टोरल स्टडीज के लिये पंजीयन कराया और वर्ष 2001 में उसने पी-एच्.डी. कर ली। तमिलनाडु सरकार के शिक्षा विभाग में उसने कई वर्षों तक

सेवाएं दीं। वर्ष 2010 में वह मदुरै के निकट मेल्लूर में शासकीय कला महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक बन गया। हाल ही में, लगभग दस दिन पहले कोविलपटी तमिलनाडु के यूपीएमएस स्कूल में मेरी फिर प्रोफेसर काथिरेसन से भेंट हुई। मैंने सभी से उनका परिचय कराया और बताया कि किस तरह वे दो दशक की कड़ी मेहनत के बाद पी-एच्.डी. ग्रेजुएट और यूनिवर्सिटी प्रोफेसर बन पाए हैं। उनकी प्रेरक कहानी ने युवा श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया।

निष्कर्ष : 'मैं क्या कर सकता हूँ' – दोस्तों, हमारा देश आजादी के 65वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस मौके पर मैं आपसे एक बहुत अहम् बिन्दु पर बात करना चाहता हूँ जो वर्ष 2020 तक आर्थिक रूप से विकसित देश के निर्माण में हमारे लक्ष्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यकीनन, हम सभी क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रहे हैं, जिसके कारण हमारा देश आठ फीसदी की विकास दर के साथ आगे बढ़ रहा है। लेकिन हमारे समक्ष कई गंभीर चुनौतियाँ भी हैं। ये हैं भ्रष्टाचार और नैतिक पतन, पर्यावरण को क्षति और समाज में बढ़ती संवेदनहीनता। कुछ बुराइयाँ हैं जिन्हें युवावस्था की भलाइयों के साथ परास्त किया जा सकता है। ऐसी बुराइयाँ आखिर आती कहाँ से हैं? तमाम बुराइयों की जड़ है अंतहीन लोभ। भ्रष्टाचार-मुक्त नैतिक समाज और स्वच्छ पर्यावरण के लिये 'मैं क्या ले सकता हूँ' के स्थान पर ''मैं क्या दे सकता हूँ' की भावना आंनी चाहिये। देश के नागरिकों और खास तौर पर युवाओं को खुद से यह सवाल बार-बार पूछना चाहिये- 'मैं अपने देश को क्या दे सकता हूँ।'

क्या मैं पर्यावरण के लिये कुछ कर सकता हूँ? क्या मैं इस धरती और इस पर रहने वाले मनुष्यों की रक्षा, पर्यावरण की क्षति से होने वाली आपदाओं से कर सकता हूँ? अरबों लोगों के लिये अरबों वृक्ष, इस बात को ध्यान में रखते हुये आज हम यह तय कर सकते हैं कि हम सभी पांच-पांच पौधे रोपेंगे और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी लेंगे। क्या मैं कुछ संवेदनाओं का परिचय दे सकता हूँ? क्या मैं उन लोगों की सेवा कर सकता हूँ, जो कष्ट में हैं और उनकी मदद करने वाला कोई नहीं है? हम किसी अस्पताल में जाकर उन मरीजों को थोड़ी सी खुशी दे सकते हैं, जिनसे मिलने कोई नहीं आता। आप

फूल दे सकते हैं, फल दे सकते हैं, उनके मन में कुछ उत्साह जगा सकते हैं।

या फिर क्या मैं मुस्कुराहटें बांट सकता हूँ? क्या मैं अपने देशवासियों के लिए कुछ ऐसा कर सकता हूँ कि उनके जीवन में मुस्कुराहटें खिल जाएं? आज के दिन हर युवा यह शपथ ले सकता है कि मैं अपनी मां को खुशियाँ दूंगा। मां खुश होंगी तो घर खुश होगा, घर खुश होगा तो समाज खुश होगा और समाज खुश होगा तो पूरा देश खुश होगा या क्या मैं गांवों की स्थिति सुधारने के लिये ही कुछ प्रयास कर सकता हूँ? क्या मैं प्रोवाइडिंग अर्बन एमेनेटीज इन रूरल एरियाज (पीयूआरए) कार्यक्रम के जरिये अपने गांव और देश भर के गांवों की तस्वीर बदल सकता हूँ?

दोस्तों, मैं चाहूंगा कि यह लेख पढ़ने वाला हर व्यक्ति 'मैं क्या दे सकता हूँ' अभियान (www.whatcanigive.info) का एक हिस्सा बने। मैंने और मेरी युवा टीम ने अभियान के लिये नौ चेप्टर तय किये हैं, जो कई महत्त्वपूर्ण सामाजिक, नैतिक और पर्यावरणगत प्रश्नों का सामना करते हैं। इस अभियान के केन्द्र में हैं देश के युवा। 'मैं क्या दे सकता हूँ' अभियान का लक्ष्य है नैतिक रूप से सम्पन्न युवाओं की पीढ़ी तैयार करना। हम युवाओं को बदल पाए तो देश को भी बदल पाएंगे।

-संकलयिता:भीकमचन्द चोरडिया, 151,आनन्दपुरी, कानपुर (उ.प्र.)

सम्यक्त्व

श्रीमती पारसकंवर भण्डारी

अध्यात्म-साधना में श्रद्धा न हो या मन डावांडोल हो जाय, तो हमें मंजिल मिलनी मुश्किल होती है। विश्वास रखने से ही किसी कार्य में सफलता मिलती है तथा आगे का रास्ता अपने आप खुलता जाता है। सम्यक्त्व के अभाव में जीव पाप कार्य करने में हिचकिचाता नहीं, निडर होकर पापों में रत रहता है। उसमें ही आनन्द मानने वाला व्यक्ति अनमोल जिन्दगी को व्यर्थ गवां देता है। अगले भव में नरक का मेहमान बन कर अनेक दुःख उठाता है। वह मोक्ष नगर से दूर हो जाता है। महापुरुषों की वाणी पर संदेह नहीं करने वाला व्यक्ति धर्म करणी में पुरुषार्थ करके सम्यक्त्व प्राप्तकर मोक्ष पथ पर आगे बढ़ जाता है।

-128, मिन्ट स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-19

कविता

युवा-शक्ति

श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

(1)

सम्भाल नहीं होने से, अच्छे-अच्छे काठ भी सुळ जाते हैं।
सम्भाल नहीं होने से, अच्छे-अच्छे पेय भी ढुल जाते हैं।
यौवन की आँधी इतनी जोरों से आती है कि-
सम्भाल नहीं होने से, अच्छे-अच्छे युवक भी रुळ जाते हैं।

(2)

बुजुर्गों को साथ लेकर चलते तो, युवक बदनाम न होते।
युवकों को साथ लेकर चलते तो, बुजुर्ग बदनाम न होते।
दोनों में एक-दूसरे की निन्दा और घृणा के स्थान पर-
थोड़ा भी स्नेह होता तो, क्या अच्छे काम न होते?

(3)

अंधेरा है तो, दीपक को जलना ही चाहिए।
कलियों को फूल बनकर, खिलना ही चाहिए।
युवाओं को यदि आगे बढ़ाना है हमें तो-
समय रहते, उन्हें मार्गदर्शन मिलना ही चाहिए।

(4)

युवकों! समय आ गया है, समाज को बदलो।
युवकों! समय आ गया है, रिवाज को बदलो।
इन्हें बदलने का काम युवक ही करेंगे-
कल को बदलने के लिए, आज को बदलो।

(5)

चेतना के बिना, यह समाज बदलेगा नहीं।
ऊष्मा के बिना, हिमालय पिघलेगा नहीं।
यह राष्ट्र तब तक ऊपर उठ नहीं सकता-
देश का युवक, जब तक सम्भलेगा नहीं।

नारी-स्तम्भ

संवाद-हीनता रिश्तों के लिए घातक

श्रीमती वीना जैन

आज जीवन इतना जटिल हो गया है कि मनुष्य की व्यस्तता चरम सीमा पर है। इसका मुख्य कारण है अधिक धन की लालसा एवं जीवन स्तर को ऊँचा उठाने की अभिलाषा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वैध और अवैध तरीकों से धन कमाना ही मनुष्य को उचित लग रहा है। लेकिन इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ रहा है पारिवारिक सम्बन्धों पर। आगे बढ़ना, प्रगति करना अच्छी बात है, पर व्यस्तता के कारण हम अपने परिवार के लिए समय न निकाल पाएँ यह दुःखद स्थिति है। आज संवादहीनता रिश्तों की गर्माहट को समाप्त कर रही है। मनुष्य के शरीर की कार्यक्षमता की एक सीमा होती है। प्रातः 8 बजे से कार्य पर निकला आदमी रात्रि नौ दस बजे जब घर में घुसता है तो इतना थका होता है कि उसका शरीर विश्राम ही मांगता है, पर यदि ऐसा न हो सका तो क्रोध एवं चिड़चिड़ाहट स्वाभाविक है। रही सही कमी पूरी हो जाती है यदि पति-पत्नी दोनों ही कामकाजी हैं। दोनों एक ही नाव पर सवार हैं, कौन किससे क्या कहे? उपेक्षित होते हैं बच्चे। जो दिन में स्कूल से लौटने के बाद ट्यूशन, होमवर्क में समय निकालते हैं या मोबाइल, दूरदर्शन, लैपटॉप से अपना अकेलापन दूर करते हैं। क्योंकि माँ-बाप से इस समय बात करने का अर्थ है- टकराहट और फिर डाँट फटकार। स्थिति और भी अधिक गंभीर हो जाती है जब माँ तो किचन में कार्य कर रही होती है या नौकरानी से करवा रही होती है और पापा से बात करने का अवसर देखो तो वह मोबाइल पर बात कर रहे हैं। वे इशारे से चुप कर देते हैं। बच्चों को अपने स्कूल की बातें करनी होती हैं। कुछ अपनी उपलब्धियाँ बताने की उत्सुकता होती है। यही कारण है कि बच्चे भी अपनी एक अलग दुनियाँ बनाने लगते हैं। वे मित्रों में, मोबाइल या घर से बाहर रहने की आदत डाल लेते हैं, जहाँ जरा सी असावधानी से भटकाव संभव है। माता-पिता से भावनात्मक जुड़ाव की जड़ें ढीली पड़ने लगती हैं। यह सम्बन्ध आर्थिक निर्भरता पर आधारित हो जाता है। बाल-सुलभ चंचलताएँ महत्त्वाकांक्षाओं की बलि चढ़ जाती हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व विकसित होने

लगता है जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ और धन को सर्वोपरि समझा जाने लगता है। रक्त सम्बन्धों का महत्त्व और गरिमा की समाप्ति हो जाती है।

लोग एक छत के नीचे रहकर भी अजनबी बन जाते हैं। सामाजिक दायरा मोबाइल में सीमित हो जाता है। वर्षों साथ रहने के बाद भी व्यक्ति अपना दुःख अपनी आवश्यकताओं या किसी समस्या पर विचार-विमर्श न कर पाए अपने को असहाय समझे तो ऐसे सम्बन्ध केवल ढोए जाते हैं कोई ऊष्मा नहीं होती उनमें। इस प्रकार की संवाद-हीनता कई कारणों से उत्पन्न होती है।

संवाद-हीनता एक तरह से वर्तमान समस्याओं और स्थितियों का कोई हल न निकाल पाने के कारण जन्म लेती है। यह एक प्रकार से पलायन की प्रवृत्ति है। जीवन में प्राप्त असफलताएँ मनुष्य को उत्साहहीन बना देती हैं। यह असफलता आर्थिक क्षेत्र में, पारिवारिक क्षेत्र में हो सकती है। कभी-कभी हम अपने द्वारा किए गए किसी अकृत्य का उत्तर नहीं देना चाहते और संवादहीनता का आवरण ओढ़ लेते हैं। अन्तर्मन में हम जानते हैं कि हम गलत हैं, अतः किसी बात का उत्तर आक्रामक स्वर में देते हैं, हर समय अपने को सही सिद्ध करने के लिए हमारी आदत दूसरों की बात काटने की तथा आलोचनात्मक टिप्पणी करने की हो जाती है। प्रशंसात्मक टिप्पणी करना मानो स्वप्न बन जाती है। जीवन में कुछ न कर पाने के कारण एक कुंठा जन्म लेती है एवं सफल व्यक्ति उनकी आँख की किरकिरी बन जाते हैं।

संवाद-हीनता के कारण बाह्यरूप से व्यक्ति शांत दिखायी पड़ता है, किन्तु अंतस् अशांत होता है। यह व्यक्ति के लिए घातक है, क्योंकि मनोभावों व परिस्थितियों का हल न निकालने के कारण मन में घुटन रहती है। निकट सम्बन्धों में दूरी आने लगती है, इससे और धक्का लगता है। इस स्थिति से उबरने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह सम्पर्क में आने वाले घनिष्ठ व्यक्तियों से विचारों का आदान-प्रदान करे, पारिवारिक उत्सवों में उत्साह व खुशी के अवसरों पर मन की खिन्नता को दूर करे। नकारात्मक विचारों से दूर रहे। अपने को अलग-थलग न समझे। जिन्दगी में प्राप्त असफलताओं के लिए सदा दूसरों को दोषारोपित न करे। सामाजिक उत्सवों में मित्रों के साथ गर्मजोशी से मिले तथा समयाभाव का रोना न रोए।

-के/15, ज्ञानसरोवर कॉलोनी, रामघाट रोड़, अलीगढ़ (उ.प्र.)

स्वास्थ्य-विज्ञान

हास्य चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

शरीर में निःश्वास के साथ विजातीय तत्त्वों को विसर्जित करने का सरलतम उपाय है हास्य योग अर्थात् मुस्कुराना, खुलकर हँसना।

मुस्कान में छिपा है जीवन की समस्याओं का समाधान-

तनाव, चिंता, भय, क्रोध, निराशा, चिड़चिड़ापन, हड़बड़ी, अधीरता आदि नकारात्मक प्रवृत्तियों से हमारी अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ खराब होती हैं जो शरीर में विभिन्न रोगों को निमन्त्रण देने में अहं भूमिका निभाती है। जिस प्रकार अंधेरा और उजाला साथ-साथ नहीं रह सकते, ठीक उसी प्रकार मुस्कान के साथ रोग के उपर्युक्त कारणों को स्वतः दूर होना पड़ता है। जिस घर में अतिथि का आदर सत्कार नहीं होता, उस घर में समझदार मेहमान अधिक देर नहीं रहना चाहते। अतः यदि हमारा चेहरा सदैव मुस्कराता हुआ प्रसन्नचित्त रहे तो व्यक्ति अनेक रोगों से सहज ही बच सकता है। उसकी कार्यक्षमता बढ़ जाती है। सोच सकारात्मक हो जाती है। दूसरी बात अकारण भी मुस्कराने से तनाव, भय, चिंता, अशांति, स्वतः दूर भाग जाते हैं। प्रेम, मैत्री,आनन्द, प्रसन्नता बढ़ने लगती है। प्रतिकूलता में भी अपने चेहरे को मुस्कराते हुए रखना चाहिए एवं रोग की अवस्था में दवा की भांति इसका उपयोग करना चाहिए। रक्तचाप चाहे बढ़ा हो अथवा कम हो मात्र 10 से 15 मिनट मुस्कराने से वह सामान्य हो जाता है। मधुमेह के रोगी को दवा लेने की आवश्यकता नहीं रहती।

मुस्कान न केवल एक जीवन्त प्रक्रिया है, उससे भी कहीं अधिक एक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक घटना भी है, जिससे दो व्यक्तियों के बीच शुभ संवाद आरम्भ होने में सुविधा मिलती है। जब दो परिचित मिलते हैं तो दूर से दिखते ही चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। अतिथियों का मुस्कराते हुए ही स्वागत किया जाता है। अर्थात् मुस्कान हमारे जीवन में आनन्द, सुख, प्रसन्नता की सूचक होती है। मुस्कान की उपमा खिलते हुए फूल से की जाती है। जिस प्रकार खिला हुआ पुष्प अच्छा लगता है, ठीक उसी प्रकार मुस्कान से व्यक्ति को सुख की अनुभूति होती है। जिसके चेहरे की मुस्कुराहट चली जाती है, उसके जीवन की प्रसन्नता चली जाती है। जिसके जितनी ज्यादा मुस्कान रहती है, उतना अधिक

स्वास्थ्य अच्छा रहता है। मुस्कराना प्रकृति की मानव को अनुपम देन है, जो उसको स्वस्थ, सुखी प्रसन्नचित्त रखने का उसके स्वयं के हाथ में सहज, सरल, सस्ता, प्रभावशाली उपाय है। जिसमें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव की संभावना नहीं होती। जितना अधिक व्यक्ति आन्तरिक मुस्कराहट से ओतप्रोत रहता है, उतनी ही उसकी सहनशीलता बढ़ती जाती है। वह प्रतिकूलता और वियोग में समतामय जीवन जी सकता है। उसकी पर-दोष दृष्टि समाप्त होने लगती है, चिन्तन सकारात्मक होने लगता है, जो मानव जीवन की सफलता एवं उद्देश्य-प्राप्ति का मूलाधार होती है। सकारात्मक भाव से शरीर के लिए उपयोगी रसायन पैदा होने लगते हैं। कार्य क्षमता बढ़ जाती है। अशान्ति की आग में आकुल-व्याकुल व्यक्ति के लिए हास्य एक वरदान होता है। मुस्कराहट तभी आकर्षक लगती है, जब वह होठों के साथ-साथ आंखों में भी नजर आये। मुस्कुराहट से अच्छा दूसरा तोहफा और दवा प्रायः हमारे पास नहीं होता।

हँसना मानवीय स्वभाव

मानव ही एक मात्र ऐसा प्राणी है, जिसमें हंसने की क्षमता होती है। यह उसका स्वभाव भी है तथा उसके खुशी की अभिव्यक्ति का माध्यम भी। किसी बात पर मुस्कराना अथवा हँसना, किसी को देखकर हँसना, कुछ व्यंग सुनकर हँसना, कुछ पढ़कर हँसना, किसी को हँसते हुए देख कर हँसना किसी से मुस्कराते हुए मिलना, खुशी के प्रसंगों पर मुस्कराना मानव व्यवहार की सहज क्रियाएँ हैं।

स्वास्थ्यवर्धक औषधि : हास्य

जब मुस्कान हंसी में बदल जाती है तो स्वास्थ्यवर्धक औषधि का कार्य करने लगती है। हँसना स्वस्थ शरीर की पहचान है जो मानसिक प्रसन्नता के लिए आवश्यक है। नियमित हंसने से शरीर के सभी अवयव ताकतवर और पुष्ट होते हैं।

हास्य तनाव का विरेचन है। सच्चा हास्य तोप के गोले की तरह छूटता है और मायूसी की चट्टान को बिखेर देता है। हास्य से रोम-रोम पुलकित होते हैं, दुःखों का विस्मरण होता है, खून में नयी चेतना आती है। शरीर में कुछ भाग हास्य ग्रन्थियों के प्रति विशेष संवेदनशील होते हैं। हंसी मानसिक रोगों के उपचार का प्रभावशाली माध्यम होता है।

खुलकर हँसने से रक्त की गति बढ़ जाती है एवं रक्त परिभ्रमण में आने

वाले अवरोधक तत्त्व दूर होने लगते हैं। श्वसन क्रिया सुधरती है। आक्सीजन का संचार अधिक मात्रा में होने लगता है और दूषित वायु का पूर्ण निष्कासन होता है। शरीर के अधिकांश चेतना केन्द्र जागृत होने लगते हैं। अधिक हँसने वाले बच्चे फुर्तीले एवं अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली होते हैं। 10 मिनट हँसने मात्र से इतनी ऊर्जा मिलती है, जो साधारणतया लगभग एक किलोमीटर प्रात: स्वच्छ वातावरण में भ्रमण करने से प्राप्त होती है।

अमेरिका के प्रख्यात कार्डियोलिजिस्ट डॉ. विलियम फ्रार्ड के अनुसार एक मिनट का हँसना लगभग 40 मिनट आराम के बराबर होता है। मेक अस लॉफ (Make Us Laugh) में उन्होंने लिखा- हँसने से दर्द से छुटकारा मिलता है। रक्त-चाप सुधरता है। रक्त नलिकाएं साफ होती हैं एवं रक्त संचार सुधरता है। हास्य से जो हारमोन्स बनते हैं वे गठिया, एलर्जी एवं वात रोगों से मुक्ति दिलाते हैं, दर्द दूर करते हैं। हँसने से चेहरे की मांसपेशियाँ सक्रिय होती हैं। उनमें झुर्रियां नहीं पड़ती। अनिद्रा, तनाव, भय, निराशा आदि दूर होते हैं। श्वसन आदि रोगों में विशेष लाभ होता है।

हँसी से शरीर में वेग के साथ ऑक्सीजन का अधिक संचार होने से मांसपेशियाँ सशक्त होती हैं। जमे हुए विजातीय, अनुपयोगी, अनावश्यक तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं, जिससे विशेष रूप से फेंफड़े और हृदय की कार्य क्षमता बढ़ती है। अवरोध समाप्त होने से रक्त का प्रवाह संतुलित होने लगता है। शरीर स्वस्थ एवं बलिष्ठ होने लगता है। हँसी से शरीर में ताज़गी आती है। अच्छी स्वाभाविक निद्रा आती है, बुखार दूर हो जाता है। दर्द और पीड़ा में राहत मिलती है। वास्तव में हँसी सभी प्रकार के रोगों में प्राय: लाभकारी होती है। हृदय रोगियों के हृदय की शल्य चिकित्सा का हास्य चिकित्सा एक सरलतम एवं प्रभावशाली उपचार है।

दु:खी, चिन्तित, तनावग्रस्त, भयभीत, निराश, क्रोधी आदि हँस नहीं सकते और यदि उन्हें किसी भी कारण से हँसी आती है तो उस समय तनाव, चिंता, भय, दु:ख, क्रोध आदि उनमें रह नहीं सकते, क्योंकि दोनों एक दूसरे के विरोधी स्वभाव के होते हैं। अत: यदि हम काल्पनिक हँसी भी हँसेंगे तो तनाव, चिंता, भय, निराशा आदि स्वत: दूर हो जाते हैं। ये ही वे कारण होते हैं जो व्यक्ति को अस्वस्थ, असंतुलित, रोगी बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हँसने से शरीर के आन्तरिक भागों की सहज मालिश हो जाती है। अन्त:स्रावी

ग्रन्थियाँ और ऊर्जा चक्र सजग और क्रियाशील होने लगते हैं। जिससे रोग प्रतिकारात्मक क्षमता बढ़ती है। मन में सकारात्मक चिन्तन-मनन होने लगता है। शुभ विचारों का प्रादुर्भाव होता है। नकारात्मक भावनाएँ समाप्त होने लगती हैं। आज के तनावयुक्त वातावरण से मुक्त होने के लिए हास्य-योग सरलतम, स्वयं के पास, सभी समय उपलब्ध, सहज, सस्ता साधन है।

हास्य हेतु आलम्बन सहायक

हँसने के लिए व्यक्ति बाह्य आलम्बनों पर निर्भर रहता है, जो हमारे पास सदैव उपस्थित नहीं होते। चुटकलों के सहारे हम 365 दिन नहीं हँस सकते, क्योंकि नित्य नवीन ज्ञानवर्धक प्रभावशाली चुटकले भी पढ़ने को नहीं मिलते और न ऐसे व्यक्तियों का नियमित सम्पर्क होता है, जो दूसरों को हँसाने में दक्ष होते हैं।

हास्य संगठनों की उपयोगिता

आज सारे विश्व में हास्य योग संगठन बनते जा रहे हैं, जो प्रात:काल खुले मैदानों अथवा बगीचों में नियमित एकत्रित होकर सामूहिक रूप से कृत्रिम ढंग से हँसते हैं, हँसाते हैं। हम प्राय: अनुभव करते हैं कि साधारण परिस्थितियों में कभी-कभी सामने वाले को हँसते हुए देख *अकारण ही हँसी स्वत: आने* लगती है। इसका छुआछुत के रोग की भांति आपस में फैलाव अथवा प्रसार होने लगता है जिससे समूह में हँसी का सहज माहौल हो जाता है।

हास्य में बाधक सामाजिक मर्यादाएँ

आज के सभ्य समाज में अकारण हँसने वालों को मूर्ख अथवा पागल समझा जाता है। सामाजिक मर्यादाओं के प्रतिकूल होने से बिना बात हँसने से लज्जा आती है। अत: घर में बच्चों के अलावा अन्य परिजन विशेषकर महिलाओं एव वृद्धों का, धर्म-संघ में संतों का, कार्यालय में पदाधिकारियों एवं नेताओं का समूह में ऐसी हँसी हँसना प्राय:असंभव होता है।

बिना आवाज हँसी का महत्त्व

चाहे अकेले में हों या समूह में, व्यक्ति को हँसना तो स्वयं ही होता है। आलम्बन भले ही कुछ भी क्यों न हो। अत: जो व्यक्ति अकेले या भीड़ में खुलकर हँसने का साहस न जुटा सकें, उन्हें मुंह बंद कर मन ही मन में जितनी लम्बी देर एक ही श्वास में हँस सकें, बिना आवाज निकाले हँसना चाहिए। ऐसी हँसी से प्राणायाम का लाभ भी स्वत: मिल जाता है। इस प्रकार बार-बार

पुनरावर्तन कर हँसने से हास्य योग का लाभ मिल जाता है। कोई भी प्रवृत्ति का सर्वमान्य स्पष्ट मापदण्ड नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति को स्वविवेक और स्वयं की क्षमताओं तथा हँसने से होने वाली प्रतिक्रियाओं का सजगता पूर्वक ध्यान रख अपने लिए उपयुक्त और आवश्यक विधियों का चयन करना चाहिए, न कि देखा-देखी, सुनी-सुनायी, पद्धति के आधार पर। प्रदूषण रहित स्वच्छ एवं खुले प्राणवायु वाले वातावरण में प्रात:काल उदित सूर्य के सामने हँसना अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रद होता है, क्योंकि हास्य क्रिया के साथ-साथ सौर-ऊर्जा एवं ऑक्सीजन अधिक मात्रा में सहज प्राप्त हो जाते हैं।

हास्य योग हेतु आवश्यक सावधानियाँ

कभी-कभी किसी को देखकर, उसकी असफलता पर, उसकी बात सुनकर अथवा व्यंगात्मक भाषा में हँसते हुए उनका उपहास या मजाक करना क्रूर हास्य होता है। जिससे वैर और द्वेष बढ़ने की संभावना होने से कषाय का कारण बनता है। अत: ऐसी हँसना, इसका निषेध करना चाहिए। हमको कब, क्यों, कहाँ, कितना, कैसे हँसना, इसका विवेक आवश्यक है, अन्यथा तनाव-चिन्ता दूर करने वाली हँसी स्वयं उसको पैदा करने का कारण बन जाती है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोन: 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,
Website: www.chordiahealthzone.com

महावीर का अर्थशास्त्र

श्री एन. के. खीचा (आ.ए.एस.)

महावीर का अर्थशास्त्र अहिंसा का अर्थशास्त्र है। जबकि वर्तमान अर्थशास्त्र की सारी अवधारणाएँ हिंसा की ओर ले जाती हैं, भोगोन्मुखी बनाती हैं, स्पर्धा को जन्म देती हैं। ज्यादा इच्छा, ज्यादा आवश्यकता, ज्यादा संग्रह, ज्यादा उत्पादन, ज्यादा लाभ, आज अर्थशास्त्र की अवधारणा है।

भगवान महावीर ने आर्थिक असमानता को मिटाने का उपाय अपरिग्रह बताया है। उन्होंने आवश्यक उत्पादों के अधिक संग्रह को निषिद्ध किया है। संग्रह को पाप एवं लोभवृत्ति को त्याज्य बताया है। लोभ व परिग्रहवृत्ति से सामाजिक जीवन में कटुता, घृणा, शोषण बढ़ता है।

-जयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

क्यों करें रात्रि-भोजन त्याग?

आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित आलेख को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 दिसम्बर 2011 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

पहला सुख निरोगी काया है और इस पहले सुख की प्राप्ति के लिए ही उपाय बताया जा रहा है-**काले कालं समायरे।**

जो भी कार्य करना है समय पर करो और भोजन करने का सर्वोत्तम समय है सूर्य की रोशनी। प्रातः और सायं दो बार एक स्थान पर बैठ कर खाना उचित है। जब भूख न लगे तब भी खाना, दिन भर खाना, भोजन का कोई समय नहीं होना-ये सब पशुवृत्ति के सूचक हैं, 'आप मानव हैं, आपके भोजन का समय नियत होना चाहिए। आरोग्य शास्त्र के अनुसार प्रातःकाल का भोजन लगभग 10 बजे एवं शाम का भोजन 5 बजे कर लेना चाहिए।

योग-आरोग्य शास्त्रों का अभिमत

हम जो कुछ भी खाते हैं, उसे पचाना आवश्यक है। भोजन का पाचन नहीं होने पर भोजन करना विष के समान है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है-

अनभ्यासे विषं विद्या, अजीर्णे भोजनं विषम्।
विषं सभा दरिद्रस्य, वृद्धस्य तरुणी विषम्।।

अभ्यास छूट जाने पर विद्या और पाचन नहीं होने पर भोजन विषवत् है। दरिद्र का सभा में बैठना और वृद्ध का तरुणी से विवाह करना

भी विष कहा गया है।

रात्रि में किया गया भोजन प्रायः भलीभाँति नहीं पचता है। न पचने पर अजीर्ण, वायुविकार, पित्त जैसी अनेक बीमारियाँ शरीर को घेर लेती हैं।

भोजन का पाचन नहीं होने पर हैजा, दस्त लगने आदि के रोग भी उत्पन्न हो सकते हैं। कहा गया है-

अजीर्णं तपसः क्रोधः ज्ञानाजीर्णमहङ्कृतिः।
परनिन्दा क्रियाजीर्णं, अन्नाजीर्णं विसूचिका।।

तप का अजीर्ण होने पर क्रोध, ज्ञान का अजीर्ण होने पर अहंकार, क्रियापालन का अजीर्ण होने पर परनिन्दा एवं अन्न का अजीर्ण होने पर हैजा जैसा रोग हो सकता है।

आमाशय में पहुँची हुई वस्तुएँ (खाद्य-पदार्थ) जठराग्नि के द्वारा पचती हैं। जिस प्राणी की जठराग्नि जितनी अच्छी है, जितनी प्रदीप्त है, उसकी पाचन शक्ति उतनी ही बढ़िया होती है। प्रयत्न ऐसा करना चाहिए कि यह जठराग्नि मन्द न पड़े। नीति यह कह रही है-

'तथा भुञ्जीत, यथा सायमन्येद्युश्च न विपद्यते वह्निः'

(नीति वाक्यामृत 25/42)

खाना इस प्रकार से खाना चाहिए कि जिससे जठराग्नि संध्या समय या दूसरे दिन भी मन्द न पड़े।

हमारे आमाशय में जो पेट की अग्नि है, उस जठराग्नि का आकार कमल जैसा है। इसे नाभि-कमल भी कहते हैं। सूर्योदय के साथ जैसे कमल खिल उठते हैं, वैसे ही नाभि-कमल भी सूर्योदय के साथ प्रदीप्त होने लगता है और जैसे सूर्यास्त के साथ कमल मुरझा जाते हैं, वैसे ही सूर्यास्त के बाद नाभि-कमल भी मुरझाने या मन्द होने लगता है। अतः आयुर्वेद शास्त्रों का अभिमत है कि रात्रि-भोजन नहीं करना चाहिए।

हृन्नाभिपद्मसंकोचः चण्डरोचिरपायत।
अतो नक्तं न भोक्तव्यं, सूक्ष्मजीवादनादपि।।

(योगशास्त्र 3/60)

योगशास्त्र के इस श्लोक में आयुर्वेद की पुष्टि के साथ ही रात्रि-भोजन-निषेध पर बल देते हुए कहा गया है कि रात्रि में पर्याप्त प्रकाश न होने से छोटे-छोटे जीव खाने में आ जाते हैं।

आरोग्य शास्त्री मानते हैं कि भोजन और शयन के बीच कम से

कम तीन घण्टों का अन्तर तो होना ही चाहिए। तभी भोजन पचता है और पेट सम्बन्धी विकारों की गति मन्द पड़ती है। भोजन करते ही सो जाने पर अथवा पर्याप्त अन्तराल न मिलने पर विकृतियाँ बढ़ती हैं और शरीर का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। परिणामस्वरूप हमें वैद्यों, डॉक्टरों के पास जाना पड़ता है, अस्पताल के चक्कर लगाने पड़ते हैं, दवाइयाँ और इन्जेक्शन लेने पड़ते हैं। भोजन देर से करेंगे तो रात्रि में, देर से ही सोना होगा और यह भी स्वास्थ्य के नियमों के सर्वथा प्रतिकूल है। स्वस्थ, सम्पन्न और समृद्धिशाली बनना है तो दिन में भोजन करें, रात्रि में जल्दी सोएँ, प्रातःकाल जल्दी उठें।

विज्ञान के अनुसार दिन में पेड़-पौधे ऑक्सीजन छोड़ते हैं तथा रात्रि में कार्बन-डाइ-ऑक्साइड छोड़ते हैं। पाचन की दृष्टि से ऑक्सीजन उपयोगी है एवं कार्बन-डाइ-ऑक्साइड हानिकारक है।

वैज्ञानिक दृष्टि

वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो सूर्य के प्रकाश में रही हुई अल्ट्रावायलेट किरणें सूक्ष्म कीटाणुओं की उत्पति व संचालन को अवरुद्ध बनाती हैं, जबकि रात्रि में इन सूक्ष्म कीटाणुओं की उत्पत्ति व संचरण का आधिक्य होता है। कई लोग तर्क देते हैं कि हमारे यहाँ रात-दिन में कोई अन्तर नहीं। पाँच-दस ट्यूबलाइटें लगा देते हैं। सूर्य की तरह प्रकाश जगमगा उठता है, पर वह कृत्रिम प्रकाश ठण्डा होता है अतः वह कीटाणुओं को, मच्छर आदि जन्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। गर्मी की अपेक्षा सर्दी में कीटाणु अधिक उत्पन्न व विकसित होते हैं। आसाम आदि प्रान्तों में जहाँ सूर्य का प्रकाश बहुत कम देर के लिए उपलब्ध होता है, जहाँ दिन छोटे, रातें बड़ी होती हैं वहाँ ठण्डक के कारण जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति अधिक होती है। लाइटों से तो जन्तुओं का ढेर उनके इर्द-गिर्द इकट्ठा हो जाता है।

अतः रात्रि में लाइट जलाकर खाना भी अत्यन्त हानिकर है। लाइट के आस-पास मँडराते जीवों, कीटाणुओं का भोजन में पड़ने का स्पष्ट खतरा है। लाइट जलती है अतः तेजस् काय के जीवों की हिंसा, लाइट पर मँडराते जीव भोजन में पड़ते हैं तो वह हिंसा, फिर जो खाना आप खा रहे हैं इसमें क्या है, क्या गिरा, कहाँ से गिरा? कुछ भी पता नहीं लगता। चींटी को राई और जूँ को जीरा समझ कर उदरस्थ कर लिया जाता है।

कभी-कभी भोजन में त्रस जीव भी गिर जाते हैं, खाने में आ जाते हैं तो त्रसकाय के जीवों की हिंसा भी लग जाती है।

क्या रात्रि में भोजन करने वाले खाने के जूठे बर्तन रात्रि में ही साफ कर लेते हैं? नहीं। नतीजा? उन जूठे बर्तनों की जूठन से आकर्षित अनेक कीड़े-मकोड़े बेमौत मारे जाते हैं। नौ बजे भोजन और ग्यारह बजे चाहिए चाय। पत्नी सो गई। नौकर ने चाय बनाई। साहब ने चाय पी। प्याले में एक-दो घूँट छोड़ दी। मक्खी, मच्छर कीड़ियों आदि के ढेर उसमें लग जाते हैं, इस प्रकार अनेक त्रस जीवों की हिंसा होती है। उन्हें कुछ कह भी दो तो जवाब तैयार। कहेंगे कीड़ियाँ हैं ही बहुत। कुछ निर्दयी यह भी कह डालते हैं कि ये तो हैं ही मरने हेतु। चिन्तन कीजिए कि वे किस तरह के लोग हैं? क्या आप भी उनमें से हैं?

रात्रि-भोजन त्यागा तो जीवन शान्त, स्वस्थ एवं सुखद बन गया

अजमेर में मेरा ऑपरेशन होने वाला था। ऑपरेशन का दिन निश्चित हुआ। डॉ. सदासुख जी ऑपरेशन करने वाले थे। ऑपरेशन के पश्चात् मैंने उनसे कहा- "वैसे तो डॉक्टर रोगी से फीस वसूल करते हैं पर हम सन्तों के पास फीस के रूप में देने के लिए धन-सम्पत्ति तो है नहीं। जो कुछ हमारे पास है वह आप लेना चाहें तो ले सकते हैं, इससे जीवन में आपको कुछ सुकून, सन्तोष, चैन ही मिलेगा। बोलिए कोई नियम, व्रत, संकल्प लेंगे? ये समझ लीजिए कि हमेशा आप फीस लेते हैं पर आज एक सन्त आपसे फीस ले रहा है। बोलिए मुझे क्या दे रहे हैं?

डॉक्टर सरल-हृदय थे, कुछ उनमें संस्कार थे। अतः बोले-" आप मुझे चार माह तक के लिए रात्रि में भोजन न करने का नियम दिला दीजिए।" कुछ महीनों पश्चात् पति-पत्नी दोनों दर्शनार्थ आये तो बोले- "महाराज! रात्रि-भोजन छोड़ने के बाद जीवन में अत्यन्त शान्ति है, तन-मन दोनों पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ रहते हैं, नींद भी आराम से आती है। शरीर में ऐसा हल्कापन लगता है कि आलस्य तो नजदीक ही नहीं आ पाता। आपने चार महीनों का नियम दिलाया था, पर मैंने विशिष्ट कारणों को छोड़ आज तक उसका पालन किया है और आगे भी करते रहने की भावना है।"

उनकी पत्नी ने भी कहा-"महाराज श्री आपने यह नियम इन्हें बहुत अच्छा दिलाया। इनको तो शान्ति मिलती ही है, मैं भी इनके साथ दिन

रहते भोजन कर लेने से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। और अनेक उलझनों, चिन्ताओं से बची रहती हूँ।''

बन्धुओं! वे एक डॉक्टर थे, जिनका धन्धा ही ऐसा है कि इस व्रत का निर्वहन भी कठिन होता है, परन्तु उनके जीवन में रात्रि-भोजन-त्याग का यह नियम अत्यन्त फलीभूत हुआ। आप चाहें तो बड़ी आसानी से इस नियम को जीवन में ग्रहण कर उसका पालन कर सकते हैं, किन्तु इसके लिए दृढ़-इच्छा-शक्ति चाहिए।

(आहार-संयम और रात्रि-भोजन-त्याग पुस्तक से संकलित)

प्रश्नः-

1. भोजन करने का सर्वोत्तम समय कौनसा है और क्यों?
2. तप, ज्ञान, क्रिया और अन्न के अजीर्ण होने पर क्या होता है? इनमें अजीर्णता का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
3. सूर्य के साथ भोजन का क्या सम्बन्ध है?
4. डॉक्टर का अनुभव आपको कैसा लगा?
5. रात्रि-भोजन-त्याग में कोई तीन वैज्ञानिक आधार दीजिए।
6. रात्रि-भोजन न करने पर आपकी दिनचर्या कैसी रहेगी?

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2011] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2011 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'जय जिनेन्द्र हम बोलें' कविता के प्रश्नों के उत्तर 28 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेताओं का चयन लोटरी द्वारा किया गया है। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	यश जैन-इन्दौर	19.5
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	19.5
तृतीय पुरस्कार- 150/-	गजेन्द्र कुमार जैन-जयपुर	19.5
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	प्रणत धींग-उदयपुर	19.5
	चिराग सरुपिया-भदेसर (चित्तौडगढ़)	19.5
	अमन जैन-खेरली (अलवर)	19
	विपुल कुमार-मैसूर	19
	उमेश कुमार-गंगाशहर	19

(माह सितम्बर-2011 का परिणाम पेज नं. 45 पर प्रकाशित किया गया है।)

प्रासङ्गिक

स्थानक तो खुले रहें

श्री जशकरण डागा

हिन्दू, मुस्लिम, जैन, ईसाई, बौद्ध आदि सभी धर्मावलम्बी अपने-अपने धर्मस्थान मंदिर, मस्जिद, रामद्वारा, गुरुद्वारा, चर्च आदि स्थानों पर नित्य पहुँचकर वहाँ अपना नित्य नियम पूजा-पाठ, उपासना, स्वाध्याय, सत्संग, भजन, भक्ति आदि निष्ठा पूर्वक करते हैं। हमारे स्थानकवासी भाई-बहिन भी जब श्रमण वर्ग स्थानक में आया हुआ होता है, तब वहाँ बड़ी संख्या में उनकी सेवा में पहुँचकर धर्म ध्यान का लाभ लेते हैं। किन्तु जैसे ही श्रमण वर्ग का स्थानक से विहार होता है, तो वैसे ही अधिकांश भाई-बहिन स्थानक आना बंद कर देते हैं। परिणामतः अनेक क्षेत्रों के स्थानक जहाँ स्थानकवासी कम होते हैं प्रायः बंद पड़े रहते हैं। उदाहरणार्थ मैं एक बार राजकाज से एक तहसील मुख्यालय पर गया था। वहाँ स्थानक सामायिक करने पहुँचा तो वहाँ का स्थानक साधु-साध्वियों के कुछ वर्षों से न आने से काफी अर्से से बंद पड़ा था और स्थानक में काफी धूल व कचरा जमा पड़ा था। वहाँ कोई सामायिक करने वाला भी नहीं मिला। यह एक महान् आचार्य की जन्मस्थली भी है, जिसे देख बड़ा खेद हुआ। साधु-साध्वियों के अनेक क्षेत्रों में विचरण कम होने से अनेक क्षेत्रों में सामायिक-स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी कम हुई है। सभी क्षेत्रों में साधु-साध्वी सदा उपलब्ध रहें, ऐसा संभव नहीं है। फिर भी उनके न होने पर स्थानकों में सदा धर्म-ध्यान होता रहे, सामायिक-स्वाध्याय की प्रवृत्ति चलती रहे, और समाज में धर्म-जागृति बनी रहे इसके लिए पूजनीय श्रमण वर्ग व समाज के कर्णधारों की सेवा में मेरा एक विशेष विनम्र निवेदन है, एक सुझाव है। पूज्य साधु-साध्वीगण विचरण करते जहाँ-जहाँ पधारे, वहाँ-वहाँ के श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरणा करे कि जैसे मुस्लिम बंधु नित्य नियमित नमाज पढ़ने मस्जिद में जाते हैं, हमारे मंदिरमार्गी भाई-बहिन बिना मन्दिर गए चाय नाश्ता भी नहीं लेते, वैसे ही स्थानकवासी कहलाने वाले सभी भाई-बहिन भी नित्य स्थानक में आकर कम से कम एक माला नवकार की, देव गुरु धर्म की प्रार्थना या दस मिनिट जिनवाणी का स्वाध्याय करके जायेंगे। कारण विशेष की छूट हो। श्रमणवर्ग की ऐसी प्रेरणा के साथ समाज के कर्णधारों का भी पूरा समर्थन व सहयोग होना चाहिए। यह प्रेरणा मात्र उपदेश तक ही सीमित न हो, वरन् सभी भाई बहिनों को इस प्रकार का संकल्प-नियम कराकर उनसे व्यक्तिगत या सामूहिक पत्र भराकर अध्यक्ष-मंत्री संघ के रिकार्ड में रखे तथा गृहीत नियम की पालना होती रहे, इस पर ध्यान रखा जाए। सभी स्थानकों में नियमित साधना होने से वे भी नित्य खुले मिल सकेंगे।

-डागा सदन, संघपुरा, टोंक-304001 (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

SANSKAR- Dr Sadhvi Chinmay Shri, ***Publisher-*** Shree veer Sangh, 61, Heerabhai Market, Deewan Ballu Bhai Road, AHMEDABAD-22, ***Available at-*** Vinod Kothari, Udaipur. Ph. 094602-08022, Vijay Patwa, Pune-09850127307, Ashok Pokharana, Mumbai-09820210238, ***Price-*** Rs. 300 & $10 (out of India Postage charge is extra). ***Year-*** 2011

This in an English translation of **संस्कार** Book, previously published in Hindi and widely welcomed by the readers. This translation has been done by vandna shah and it has been designed and printed in a very attractive way by multy Graphics, Mumbai. Book has 60 Chapters for guiding the children on different aspects of the conduct in life. It's presentation is in such a way that every chapter conveys a good message for purification of the thoughts of a child which is helpful in developing a good character and personality. Names of some chapters are- (1) How to study (2) Take care of your things (3) Failure is the first step towards success (4) Non-violence is supreme (5) Eat fresh food (6) Teachings of Lord Mahaveer (7) Avoid tit for tat (8) General tips for Housewives (9) Character lost, everything lost (10) Inner beauty requires no polish.

जैनधर्म में आचारशास्त्रीय सिद्धान्त (खण्ड-2 एवं खण्ड-3)- डॉ. कमलचन्द सोगाणी, ***हिन्दी अनुवादक***- श्रीमती शकुन्तला जैन, ***प्रकाशक***- जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीर जी-322220 (राज.), दूरभाष: 07469-224323, ***प्राप्ति स्थान***- साहित्य विक्रय केन्द्र, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004 (राज.) दूरभाष: 0141-2385247, ***पृष्ठ***- द्वितीय खण्ड 34+115, तृतीय खण्ड- 34+98, ***मूल्य***-350 रुपये प्रत्येक, ***सन्***- 2011

डॉ. कमलचन्द सोगाणी की प्रसिद्ध पुस्तक Ethical Doctrines in Jainism के हिन्दी अनुवाद का प्रथम खण्ड चार अध्यायों में प्रकाशित हो गया था। द्वितीय खण्ड एवं तृतीय खण्ड अब हाथ में आए हैं। द्वितीय खण्ड में 'मुनि का आचार' एवं 'जैन आचार का रहस्यात्मक तत्त्व' ये दो महत्त्वपूर्ण अध्याय हैं। मुनि के आचार में यह स्पष्ट किया गया है कि पूर्ण त्यागमय जीवन अशुभ भावों के उन्मूलन को सम्भव बनाता है, जो गृहस्थ के आंशिक-त्याग की स्थिति में सम्भव नहीं है। मुनिधर्म क्रिया-जगत् से पीछे हटना नहीं, बल्कि हिंसा-जगत् से पीछे हटना है। डॉ. सोगाणी ने मुनि आचार विषयक पंचम अध्याय में 12 अनुप्रेक्षाओं, पांच महाव्रतों, तीन गुप्ति, पांच समिति, षडावश्यक, परीषह, तप, चार ध्यान, समाधिमरण आदि की प्रामाणिक चर्चा की है, जिनमें दिगम्बर ग्रन्थ प्रमुख आधार रहे हैं। षष्ठ अध्याय 'जैन आचार का रहस्यात्मक तत्त्व' के अन्तर्गत रहस्यवाद की चर्चा की गई है तथा रहस्यवाद का समानार्थक शब्द 'शुद्धोपयोग' को स्वीकार किया गया है। इस अध्याय में मिथ्यात्वादि 14 गुणस्थानों का विस्तृत प्रतिपादन है।

तृतीय खण्ड में मूल अंग्रेजी पुस्तक के सातवें से दसवें अध्याय के हिन्दी अनुवाद का प्रकाशन है। सप्तम अध्याय में जैन आचार शास्त्र का जैनेतर भारतीय आचारशास्त्रीय सिद्धान्तों से तुलना की गई है। आठवें अध्याय में पाश्चात्त्य आचारशास्त्रीय सिद्धान्तों से जैनाचार की तुलना प्रस्तुत की गई है। नवम अध्याय वर्तमान समस्याओं के निराकरण में जैन आचार की भूमिका को प्रस्तुत करता है। दसवें अध्याय में ग्रन्थ का सारांश दिया गया है। डॉ. सोगाणी की महत्त्वपूर्ण पुस्तक अब हिन्दी पाठकों के लिए भी सुलभ हो गई है, यह प्रमोद का विषय है।

बच्चों को दें प्यार

श्रीमती मोनिका डांगी

बच्चों को मारने की बजाए उन्हें अपनी बात तर्क सहित सरल शब्दों में समझाइये वे समझ जायेंगे और याद भी रखेंगे। बच्चों को हर छोटी-छोटी बात के लिये न टोंके। घर का खुशनुमा माहौल बच्चों में समझदारी के स्तर को बढ़ाता है। माता-पिता को भाषा और हाव-भाव का भी ध्यान रखना चाहिये। बच्चों को बात-बात पर मारना गलत है। इससे वे ढीठ हो जाते हैं और अपने मन की करने के लिये तरीके खोज लेते हैं। *-किशनगढ़ (राज.)*

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (20)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

अ. भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग दो-सामान्य पूर्वधर खण्ड)** के आधार पर संचालित मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह आठवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 दिसम्बर 2011 तक मिल जाने चाहिए।

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग-2)

(पृष्ठ 351 से 400 तक से प्रश्न)

इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. आचार्य भद्रबाहु ने योगों की वृत्तियों का निरोध कर एक.... संलेखना की।
2. महामुने! आज्ञा दीजिये, मैं आपके किस अभीष्ट..... करूँ ?
3. इस ..... को उसने अपने आचरण में ढाल रखा था।
4. वररुचि के .... की प्रतिष्ठा क्षणभर में ही धूलि में मिल गई।
5. बारह वर्ष के ...... भीषण दुर्भिक्ष में गृहस्थों और मुनियों को दुःख सहने पड़े।
6. दुष्कर साधना करने वाले ..... तुम्हारा स्वागत है।
7. आर्य व्रजस्वामी को ..... द्वारा नमस्कार किया गया है।
8. .... महामुने! मेरे सब अपराध क्षमा कर दीजिये।
9. आचार्य भद्रबाहु चतुर्दशपूर्वधर अर्थात्.... थे।
10. महामंत्री शकटार जो कुछ करना चाहता है, उसे .... नन्द नहीं जानते।

11. एक प्रबल और ठोस प्रमाण है, पार्श्वनाथ बस्ती का .... ।
12. गंगा स्वयं अपने हाथ से उसे 108 .... प्रदान करेगी।
13. चार छेद सूत्र श्रुतकेवली भद्रबाहु द्वारा .... है।
14. चतुर्दश पूर्वधर आचार्य .... निर्युक्तियों के कर्ता नहीं हैं।
15. श्रमण वर्ग के मानस में किस प्रकार की उत्कृष्ट कोटि की....... थी।
16. इस गाथा में द्रव्य निक्षेप के तीन .... का विवेचन किया गया है।
17. बारह योजन लम्बे चौड़े क्षेत्र में .... बसाया।
18. राजन्! प्रतिदिन 108 स्वर्ण मुद्राएँ .. को किस अभिप्राय से दी जा रही हैं?
19. यह राजमुद्रा....... उत्पन्न करने वाली और मनुष्यों के सुख का विनाश करने वाली है।
20. उन दिनों .... विश्वविद्यालय चरम उत्कर्ष पर पहुँच चुका था।
21. श्राविके! चार मास तक तुम्हारी .... में निवास करने की स्वीकृति दो।
22. मंत्री ऊहड़ का पुत्र 'त्रैलोक्यसिंह' को भयंकर .... ने डस लिया।
23. तात! वैसा कुकृत्य तो संभवतः कोई....... भी नहीं करेगा।
24. कोशा वेश्या के गृह में रहते हुए भी पूर्ण .... रहकर असंभव को संभव कर बताया।
25. यह मार्ग मुक्तिप्रद नहीं, अपितु अनन्त काल तक .... कराने वाला है।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (18) का परिणाम

जिनवाणी सितम्बर, 2011 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 225 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- राजकुमारी लोढ़ा-जयपुर (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- रिखबराज बोहरा-दिल्ली

तृतीय पुरस्कार- मिलाप पारसमल लुणावत-अहमदाबाद (गुजरात)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. अखिलेश जैन-जोधपुर (राज.)
2. ज्ञानचन्द कोठारी-अजमेर (राज.)
3. निर्मला चौपड़ा-जबलपुर (मध्यप्रदेश)
4. सरला भंसाली-डोंडी लोहरा, दुर्ग (छतीसगढ़)
5. नीलम जैन-गुड़गांव (हरियाणा)

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव द्वारा आयोजित

(सत्प्रेरक- स्व. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.)

श्री रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगाँव द्वारा प्रायोजित

अखिल भारतीय उत्तराध्ययन सूत्र बम्पर प्रोत्साहन योजना

भगवान् महावीर से जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है उनकी अन्तिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र। 2000 गाथाओं में निबद्ध यह सूत्र अपने में चारों अनुयोगों को समेटे हुए है। इसका स्वाध्याय कर्म-निर्जरा व ज्ञानवृद्धि का अमोघ उपाय है। आचार्य हस्ती इसे जैन धर्म की गीता कहते थे। ऐसे महत्त्वपूर्ण सूत्र का अधिकाधिक श्रावक-श्राविका प्रतिदिन स्वाध्याय करें इसके लिए उसकी मूल गाथाओं का कंठस्थ करना अनिवार्य है। गाथा कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों के लिए प्रोत्साहन योजना इस प्रकार रखी है-

योजना	प्रोत्साहन	समयावधि
1 से 10 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कण्ठस्थ	1000/-	1 वर्ष
1 से 22 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कण्ठस्थ	5000/-	1 वर्ष
1 से 36 अध्ययन शुद्ध उच्चारण सहित कण्ठस्थ	10000/-	1 वर्ष

कण्ठस्थ करते समय गाथा के भावार्थ को ध्यान में रखेंगे तो गाथा शीघ्र याद होगी और लम्बे समय तक याद रहेगी, जिससे भावशुद्धि बढ़कर विशेष निर्जरा होगी, अतः भावार्थ ध्यान में लें। परीक्षा मौखक ली जायेगी, जिसमें उच्चारण शुद्धि पर विशेष ध्यान रखा जायेगा। **परीक्षा अक्टूबर 2012** में सम्भावित है। परीक्षा के निश्चित समय और स्थान की सूचना समय पर प्रेषित की जायेगी। यह योजना नया कण्ठस्थ करने वालों के लिए है जो भी इसमें भाग लेना चाहें निम्न प्रारूप में अपना आवेदन पत्र **31 दिसम्बर 2011** तक भिजवाएँ।

आवेदन का प्रारूप

नाम.............:.............पिता/पति का नाम........................उम्र......

पत्र व्यवहार का पूर्ण पता...

पिन कोड................फोन नं. ....मो.नं. ....

जिनके पास आप सूत्र की गाथाएं ले रहे हैं उनका नाम व विवरण..........................

....

उस कार्यकर्ता का नाम, पता व फोन नं. जो यह जानते हैं कि आपने नयी गाथाएँ कण्ठस्थ करना चालू किया है...

आपके नजदीकी बड़े शहर का नाम जहाँ आप परीक्षा देने समय पर पहुँच सकते हैं..........

सम्पर्क सूत्र

हस्ताक्षर

1. नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव (महा.)425001, फोन नं. 0257-2223903
2. श्री प्रकाशचन्द जैन, संयोजक, मो. 09370020005
3. सौ. मंगला चोरडिंया, सह-संयोजक, मो. 09422775692
4. श्री मनोज संचेती, प्रचारक, मो. 09422591423

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 400 स्वाध्यायियों द्वारा 160 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

जिनवाणी के अक्टूबर अंक में महाराष्ट्र एवं दक्षिण क्षेत्रों की रिपोर्ट प्रकाशित की गई थी। शेष क्षेत्रों की रिपोर्ट इस अंक में प्रकाशित की जा रही है।

मध्यप्रदेश क्षेत्र

92	ग्वालियर	-	श्री जम्बुकूमार जी जैन-जयपुर श्री अशोक जी जैन-जयपुर
93	विदिशा	-	श्री गौतम जी जैन-जयपुर श्री अनन्त जी जैन-जयपुर श्री राजकुमार जी जैन-जयपुर
94	हातोद	-	श्री पदमचन्द जी जैन-बजरिया श्री कनिष्क जी जैन-बजरिया
95	इच्छापुर	-	सौ. कंचन जी चौपड़ा-जलगांव श्रीमती मेघा जी सिंघवी-जलगांव श्रीमती सुरेखा जी कांकरिया-जलगांव
96	कालुखेड़ा	-	श्री महावीर प्रसाद जी जैन-कोटा श्री ऋषभ जी जैन-इन्द्रगढ़
97	बेरछा	-	श्री जितेश जी जैन-जयपुर श्री हेमन्त जी जैन-जयपुर श्री सोनू जी जैन-जयपुर
98.	आकोदियामण्डी	-	श्री महावीरप्रसादजी जैन-चौथ का बरवाड़ा श्री बाबूलाल जी जैन-बजरिया
99	बड़वानी	-	मधुबाला जी मनन-जलगांव श्रीमती दर्शना जी अजमेरा-जलगांव
100	छनेरा हरसूद	-	सौ. तिलोत्त्मा जी ओस्तवाल-भड़गांव सौ. माया जी श्रीश्रीमाल-भड़गांव सौ. मंजुला जी लुणावत-जलगांव
101	जबलपुर	-	श्री पारसमल जी बाठिया-घोड़नदी सौ. अनिता जी बाठिया-घोड़नदी
102	सिद्धिकगंज मगरदा	-	श्रीमती हर्षदेवी जी जैन-चौथ का बरवाड़ा श्री नरेश जी जैन-चौथ का बरवाड़ा

			सुश्री नेहा जी जैन–सवाईमाधोपुर
103	पिपलिया बुजुर्ग	–	श्रीमती विमला जी जैन–सवाईमाधोपुर
			सुश्री विशा जी जैन–अलीगढ़
			सुश्री ईशिका जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
104	अंजड़	–	श्री ज्योतिप्रकाश जी जैन–चौरू
			श्रीमती सुजाता जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
			सुश्री तमन्ना जी जैन–चौथ का बरवाड़ा

मारवाड़ क्षेत्र

105	पीह	–	श्री पी.एम. सा चौरडिया–चेन्नई
			श्री सोहनलाल जी संकलेचा–जोधपुर
106	बाड़मेर	–	श्री चंचलमल जी चोरडिया–जोधपुर
			श्रीमती रतनदेवी जी चोरडिया–जोधपुर
			श्री सुनील जी चौपड़ा–जोधपुर
107	मेड़ता सिटी	–	श्री धर्मचन्द जी जैन, रजिस्ट्रार–जोधपुर
			श्री राकेश जी समदड़िया–नवसारी
108	आगोलाई	–	श्री उम्मेदचन्द जी जैन–जरखोदा
			श्री शिवकुमार जी जैन–जरखोदा

मेवाड़ क्षेत्र

109	दरीबामाइन्स	–	श्री प्रेमचन्द जी जैन–जयपुर
			श्री महेन्द्र जी जैन–जयपुर
			श्री निखिल जी जैन–जयपुर
			श्रीमती कान्ता जी जैन–जयपुर
110	मावली जंक्शन	–	श्री लल्लूलाल जी जैन–सवाईमाधोपुर
			श्री अमन जी जैन–सवाईमाधोपुर
111	सुरपुर	–	श्री धर्मचन्द जी जैन–सवाईमाधोपुर
			श्री मोहनलाल जी सर्राफ–सवाईमाधोपुर
			श्री मनोज जी जैन–सवाईमाधोपुर
112	पारसोली	–	श्री पवन कुमार जी जैन–अलीगढ़
			श्री चेतन जी जैन–अलीगढ़
			सुश्री पूजा जी जैन–अलीगढ़
113	जूणदा	–	श्री धर्मचन्द जी जैन–कुश्तला
			श्री रतनलाल जी जैन–कुश्तला
114	मण्डपिया	–	श्री जगदीशप्रसाद जी जैन–कोटा

			श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन-कोटा
			श्री उत्तमचन्द जी जैन-कोटा
115	नवाणिया	-	श्री नन्दलाल जी जैन-उनियारा
			श्री कजोड़मल जी जैन-अलीगढ़
			श्री कमलेशकुमार जी जैन-देई
116	नीमचसिटी	-	श्री मानसिंह जी खारीवाल-सहाड़ा
			श्रीमती चंचलतला जी सुराणा-बेगूँ
			सुश्री प्रिती जी नाहर-बेगूँ
117	बाड़ी	-	श्रीमती सुनीता जी नवलखा-कोटा
			श्रीमती निशा जी जैन-अलीगढ़
			श्री मनोज जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
118	आजादनगर (भीलवाड़ा)	-	श्री पंकज जी जैन-भीलवाड़ा

अन्य क्षेत्र

119	कोलकाता	-	श्री पी.शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई
			श्री कस्तुरचन्द जी बाफना-जलगांव
120	लखनऊ	-	श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना-जोधपुर
			श्री मूलचन्द जी लूणावत-जोधपुर
121	महारानीफार्म, जयपुर	-	श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा-ब्यावर
			श्री लक्ष्मीमल जी छाजेड़-समदड़ी
122	कानपुर	-	श्री हस्तीमल जी डोसी-मेड़ता
			श्री हंसराज जी चौपड़ा-गोटन
123	चलथान	-	श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर
			श्रीमती सज्जनकंवर जी मेहता-जोधपुर
			श्री देवेन्द्र जी कोठारी-बैंगलोर
124	दूदू	-	श्री प्रेमसिंह जी लोढ़ा-जयपुर
			श्रीमती कमला जी जैन-जयपुर
125	जोबनेर	-	श्री जवरीमल जी छाजेड़-जोधपुर
			श्री नमोकार जी जैन-सवाईमाधोपुर
126	बलरामपुर	-	श्री हरकचन्द जी जैन-बजरिया
			श्री पंकज जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
127	बुहारी	-	श्री कुशल जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
128	बालाघाट	-	श्री शिखरचन्द जी जैन-करही
			श्री विमलचन्द जी तातेड़-इन्दौर

पोरवाल क्षेत्र

129	देई	–	श्री सौभाग्यमल जी जैन–कुश्तला श्री रामदयाल जी जैन–बजरिया श्री रामप्रसाद जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
130	सुमेरगंजमण्डी	–	श्री सुरेश जी हींगड़–भीलवाड़ा श्री अनिल जी पोखरणा–उदयपुर
131	इन्द्रगढ़	–	श्री महावीरप्रसाद जी जैन–बजरिया श्री नरेन्द्र जी जैन–चौथ का बरवाड़ा
132	बाबाई	–	श्री महेन्द्र जी जैन–सवाईमाधोपुर सुश्री टीना जी जैन–बाबई
133	कुश्तला	–	श्री अभिषेक जी नाहर–इन्दौर श्री मंयक जी जैन–इन्दौर श्री वीतराग जी जैन–इन्दौर
134	पचाला	–	श्री राजमल जी मेहता–डूंगला श्रीमती राजमल जी मेहता–डूंगला
135	उनियारा	–	श्रीमती पुष्पा जी जैन–जयपुर श्रीमती रतनदेवी जी कर्नावट–जयपुर
136	देवली	–	श्री धमेन्द्र जी जैन–सवाईमाधोपुर श्री प्रेमबाबू जी जैन–सवाईमाधोपुर
137	जरखोदा	–	श्री त्रिलोक जी जैन–नसिया गंगापुर श्री राजेश जी जैन–हिण्डोन
138	चौरू	–	श्रीमती धर्मवती जी मुणोत–जयपुर श्री सुधीर जी जैन–जयपुर
139	अलीगढ़	–	श्री पदमचन्द जी मुणोत–जयपुर श्री विनोद जी जैन–चेन्नई श्री शुभम जी जैन–जयपुर
140	कुण्डेरा	–	श्री पदमचन्द जी अग्रवाल–जयपुर श्री पदमचन्द जी रांका–जयपुर
141	दूनी	–	श्रीमती अकलकंवर जी मोदी–जोधपुर श्रीमती कमला जी मेहता–जोधपुर सुश्री चन्द्रकांता जी बरड़िया–जोधपुर
142	श्योपुरकलां	–	श्रीमती सुशीला जी जैन–बजरिया सुश्री ज्योति जी जैन–आलनपुर

पल्लीवाल क्षेत्र

143	हिण्डौनसिटी	–	श्री राकेश कुमार जी जैन–सुमेरगंजमण्डी
			श्री पदमचन्दजी जैन गोटेवाला–सवाईमाधोपुर
			श्री अंकित जी जैन–सवाईमाधोपुर
144	पहरसर	–	डॉ. विमलचन्द जी जैन–हिण्डौन
			श्री ज्ञानचन्द जी जैन–नदबई
			श्रीमती सुशीला जी जैन–नदबई
145	गोपालगढ़, भरतपुर	–	श्री विरेन्द्र जी जैन–जयपुर,
			श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत–जयपुर
			श्री गगन जी जैन–जयपुर
146	करौली	–	श्री मुरारीलाल जी जैन–हिण्डौनसिटी
			श्री महावीर जी कोठारी–निमाज
			श्री प्रसुन्न जी जैन–खौह
147	बरगमा	–	श्री विनयकुमार जी जैन–बरगमा
			श्री विवेक कुमार जी जैन–बरगमा
148	वर्धमाननगर, हिण्डौन	–	श्री कृष्णमोहन जी जैन–हिण्डौन
			श्रीमती मंजू जी जैन–हिण्डौन
			श्री धीरज जी जैन–हिण्डौन सिटी
149	भरतपूर	–	श्री हुकमचन्द जी जैन–हिण्डौन
			श्री मगनचन्द जी जैन–फाजिलाबाद
150	खौह	–	श्री छगनचन्द जी जैन–खौह
			श्रीमती मिथलेश जी जैन–खौह
			सुश्री अंजली जी जैन–हिण्डौन सिटी
151	नदबई	–	श्री बाबूलाल जी जैन–खेरली
			श्री कस्तूरचन्द जी जैन–खेरली
			श्री नरेशचन्द जी जैन–नदबई
152	खेरली	–	श्री लखपतराज जी भण्डारी–जयपुर
			श्रीमती लाडदेवी जी खारेड–जयपुर
			श्री युवराजजी जैन–जयपुर
153	मण्डावर	–	श्री संजय जी देशलहरा–इन्दौर
			श्री अखिलेश जी नाहर–इन्दौर
154	हरसाना	–	श्री विमलचन्द जी पोरवाल–इन्दौर
			श्री विमलचन्द जी खिंवसरा–खरगौन

नवरतन डागा
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

समाचार-विविधा

चातुर्मास रिपोर्ट

निस्पृही संयम-साधक आचार्य हीरा का यशस्वी जोधपुर चातुर्मास

अनेकविध उपलब्धियाँ

परमाराध्य परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 12 के चातुर्मास के सुयोग का सूर्यनगरी जोधपुरवासियों ने ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के साथ गुरु-भक्ति, संघ-दीप्ति और सत्संग-सेवा, संत-समागम की दृष्टि से लाभ तो लिया ही, समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्री संघों एवं श्रद्धालुओं की आत्मीयता-अपनत्व के साथ स्वधर्मि-वात्सल्य भावना से सेवा का आदर्श भी उपस्थित किया, जो संघ-समाज में यशस्वी चातुर्मास के रूप में सदा स्मरणीय रहेगा।

आचार्यप्रवर ने जोधपुर चातुर्मास की स्वीकृति रविवार 17 अप्रेल, 2011 को फरमा दी थी, मुमुक्षु बहिन सुश्री कान्ता पींचा की भागवती दीक्षा की घोषणानुसार पूज्य गुरुवर्य ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए 22 अप्रेल को जोधपुर के रातानाडा क्षेत्र पधारे, आचार्यप्रवर की अगवानी में आबाल-वृद्ध जन समुदाय गुरु भक्ति में ऐसा उमड़ा कि पाँच-सात किलोमीटर सामने जाकर गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के प्रति गुरु भक्ति की भावना दर्शायी वह उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रही है।

17 वर्ष की सुदीर्घ अवधि पश्चात् चातुर्मास का सुयोग पाकर रत्नसंघ के पट्टधर नगर जोधपुर में हर्ष-उल्लास का होना स्वाभाविक है। इसकी पहली झलक मिली आषाढ़ शुक्ला नवमी दिनांक 9 जुलाई, 2011 को जब आचार्यप्रवर मूथाजी के मंदिर विराज रहे थे। विगत कतिपय वर्षों से आचार्यप्रवर अपने चातुर्मास की प्रवेश तिथि पूर्व से घोषित नहीं करते, जोधपुर के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने जिज्ञासावश कई बार संघ नायक से ही नहीं, मुनिपुंगवों से भी प्रवेश तिथि विषयक संकेत जानने का प्रयास किया, लेकिन जोधपुर के

भक्तों का कब-किस समय विहार होगा या पावटा स्थित सामायिंक-स्वाध्याय भवन में कब प्रवेश होगा, ज्ञात नहीं हुआ, फिर भी सुज्ञजनों को यह आभास हो चुका था कि संत-मुनिराज गोचरी नहीं पधार रहे हैं, इसलिए विहार एवं चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश की आज ही संभावना है। संचार क्रांति के युग में विद्युत वेग की तरह समाचारों का प्रसारण अनहोनी बात नहीं है, अत: जोधपुर महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के भक्तों को ही नहीं, जोधपुर के समीपवर्ती ग्राम-नगर जिनमें पाली मेड़ता, पीपाड़, भोपालगढ़, गोटन, बालोतरा, ब्यावर जैसे क्षेत्रों के श्रद्धालु भी इस विचार से कि विहार होगा तो विहार-सेवा का, अन्यथा दर्शन-वन्दन का लाभ तो मिलेगा ही, जोधपुर पहुँचे।

मूथाजी के मंदिर में भक्तों ने दर्शन-वन्दन कर स्वप्रेरित भावना से नमस्कार महामंत्र का जाप प्रारम्भ कर दिया, आचार्यप्रवर ने लगभग ढ़ाई बजे संत-मुनिराजों को संकेत किया कि विहार के लिए तैयारी कर लो। पूज्य आचार्यप्रवर ने मूथा जी के मन्दिर से संत-मण्डली के साथ विहार किया तो जय-जयकारों के जयनाद करते हुए भक्तजन विहार यात्रा में सम्मिलित हो गये। भगवान महावीर स्वामी की, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की, आर्चाप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की, उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. की, निर्ग्रन्थ संत-सतीवृन्द की जय-जयकारों के साथ गुरु हस्ती-गुरु हीरा के सन्देशों का उच्चारण निरन्तर उत्साहपूर्वक चल रहा था। पूज्य श्री पावटा मुख्य सड़क मार्ग पर पधारे तब तक विहार यात्रा में सैकड़ों भक्तों के जुड़ाव से विहार यात्रा अत्यन्त मनभावक-मनमोहक लग रही थी। शान्त-सहज विहार यात्रा स्वप्रेरित अनुशासन से चल रही थी, सड़क चलते लोगों ने देखा तो उन्हें एहसास हुआ कि जैन साधु का अतिशय कितना प्रभावशाली होता है।

आचार्यप्रवर लगभग 3 बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा पधारे। भण्डोपकरण रखकर आचार्यप्रवर संत-मुनिराज चउवीसत्थव करके हॉल में पधारे तब तक श्रावक-श्राविकाओं ने अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

आचार्यप्रवर ने मंगलाचरण में गुरु हस्ती द्वारा रचित भगवान शांतिनाथ के स्तवन का उच्चारण किया, जनसमुदाय ने भक्ति-भावना से गुरु हीरा के साथ समवेत स्वर में स्वर मिलाकर प्रार्थना में भागीदारी तो निभाई ही, शांति का अनुभव भी किया। मंगल-प्रवेश के पावन पुनीत प्रसंग पर 17 वर्षो के अन्तराल पश्चात् गुरु हीरा के चातुर्मास से जन-जन के मन में हर्ष और उल्लास आबाल-

वृद्ध सबके चेहरों से स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था, संघाध्यक्ष श्री प्रसन्नचन्द जी बाफना ने पूज्य गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की, वहीं जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं से अपेक्षा रखी कि हम सबको चातुर्मास के सुयोग का ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना, व्रत-नियम एवं गौरवशाली रत्नसंघ की रीति-नीति को पुष्ट करते हुए गुरु-भक्ति और संघ-दीप्ति में कोई कोर कसर नहीं रखनी है।

मंगल-प्रवेश पर पूज्य आचार्यप्रवर सहित महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. एवं साध्वी प्रमुखा जी महाराज की भावनानुसार महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. ने जोधपुर के गौरव और जोधपुर के भक्तों की सौरभ को रेखांकित करते हुए चातुर्मास के सुयोग से बालक-बालिकाओं को संस्कारित करने, युवक-युवतियों को जागृत करने और महानगर के सभी श्रावक-श्राविकाओं को संवर-निर्जरा की साधना में आगे बढ़ने का आह्वान तो किया ही, संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की प्रवृत्तियों के पोषण और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सबकी सहभागिता की अपेक्षा मंगल प्रवेश की विशेषता रही।

आचार्यप्रवर के मंगल प्रवेश की मधुर वेला में बहुत कम समय सुलभ हुआ अतः दीर्घद्रष्टा गुरु हीरा ने 10 जुलाई के प्रवचन में भक्तों को अपनी भावना रखने के लिए प्रवचन पूर्व समय दिया। संघ-सेवी भक्तों ने एवं संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों ने गुरु-गुणगान के साथ चातुर्मास में सेवा-भक्ति, साधना-आराधना और व्यवस्था विषयक परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग के साथ काम करने की योजना और योजना-पूर्ति हेतु कार्यक्रम घोषित किया, तदनुसार चातुर्मास निरन्तर-निर्विघ्न गतिमान है। चातुर्मास की प्रमुख विशेषताएँ संक्षेप में इस प्रकार रहीं:-

दैनिक कार्यक्रम

संघशास्ता-संघनायक स्वयं नियत-निर्धारित समय पर दैनिक कार्यक्रम को गतिमान रखते हैं, वहीं चतुर्विध संघ में समय की पाबन्दी बनाए रखने का सतत प्रयास करते हैं। ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी उठकर स्वाध्याय-ध्यान-चिन्तन- मनन के साथ प्रतिक्रमण, सूर्योदय पश्चात् पलेवना, स्थंडिल जैसे दैनिक कर्म सुव्यवस्थित चलते हैं। संघ-स्तर पर प्रातः प्रार्थना से कांर्यक्रम का श्री गणेश होता है। सामूहिक प्रार्थना में समीपवर्ती क्षेत्रों के भक्तों के अलावा आसपास के क्षेत्र जो चातुर्मास में गुरु-भक्ति और सेवा की भावना से चौका

करके रहने वाले परिवारजनों, आगत श्री संघो व श्रद्धालुओं के अतिरिक्त जोधपुर महानगर के विभिन्न उपनगरों व क्षेत्रों के भक्तजन जो दर्शन-वन्दन करने आते हैं वे भी प्रार्थना कार्यक्रम में सम्मिलित हो समवेत स्वर में प्रार्थना करके जीवन में शांति का अनुभव करते हैं। श्रद्धेय श्री मनीष मुनि जी प्रायः प्रार्थना करवाते हैं जिनमें देव-गुरु-धर्म के प्रेरक-प्रभावी भजन-गीतों के माध्यम से प्रार्थना का आनन्द अपने आपमें अनूठा होता है।

यथासमय 9 बजे प्रवचन का शुभारंभ होता है जिसमें सूर्यनगरी के सुज्ञजन भाग लेकर जिनवाणी का पान करते हैं। आचार्यप्रवर प्रवचन सभा में पहले छोटे संतों को अवसर देते हैं जिनमें श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. में से कोई-न-कोई संत करीब 30-35 मिनट तक प्रदत्त विषयानुसार प्रवचन करते हैं। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. या यदा-कदा महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन फरमाते हैं। रविवारीय, अष्टमी-चतुर्दशी एवं विशिष्ट पर्व दिवसों पर प्रायः संघनायक पूज्य गुरुदेव अपनी पीयूष प्रवचन रसधारा के माध्यम से जन समुदाय की जागृति हेतु प्रेरणादायी उद्‌बोधन प्रदान कर जहाँ एक ओर व्रत-प्रत्याख्यानों का महत्त्व बताकर उन्हें संकल्पबद्ध करवाते हैं वहीं जन-जन में रहे दूषण निकन्दन की प्रभावी प्रेरणा कर जीवन को पावन-प्रशस्त बनाने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। आचार्यप्रवर के आदेशानुसार साध्वीप्रमुखा जी म.सा. सहित महासतीवृन्द में से किसी न किसी का प्रवचन भी यदा-कदा करवाया जाता रहा है। सूर्यनगरी के प्रबुद्धजन आचार्यप्रवर के चातुर्मास में प्रवचन-श्रवण में सदा सक्रिय रहते हैं उसके पीछे प्रमुख कारण यदि कोई है तो प्रवचन के माध्यम से जहाँ प्रवचनकार अपने स्वाध्याय के अवसर से लाभान्वित होते हैं, वहीं श्रोता मन्त्रमुग्ध होकर ज्ञानवर्धक-शिक्षाप्रद प्रवचनों का पान कर अपने-आपको धन्य-धन्य समझते हैं। प्रवचन समय में विशुद्ध रूप से आचार्यप्रवर सहित संत मुनिराज व महासतियाँ जी महाराज जीवनोपयोगी विषयों पर समय सीमा में सारगर्भित प्रवचन करते हैं। प्रवचन में श्री संघों को या श्रद्धालुओं को गुणगान करने, भक्ति-भावना रखने, क्षेत्र की विनति प्रस्तुत करने तक का किसी को समय नहीं दिया जाता। विनति करने वाले श्री संघों को प्रवचन के बजाय प्रवचन पश्चात् विनति रखने का कहा जाता है जिसका स्पष्ट अभिप्राय यही है कि प्रवचन समय का अधिकतम उपयोग आगम वचनों को सुनने-समझने में लगाया जाय। स्वयं के गुणगान से बचने का संघनायक का तरीका पहले तो कुछ

अटपटा-सा लगा, लेकिन अब सभी को संघनायक की व्यवस्था रास आ रही है क्योंकि प्रवचन में न कहानी-किस्से हैं, न आमोद-प्रमोद की बातें और न ही औपचारिकतावश समय पूरा करने के लिए इधर-उधर के दृष्टान्त। आचार्यप्रवर बार-बार आग्रह करते हैं कि संघ का हर सदस्य सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करे, अर्थ सहित जानकारी करे। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. अपने प्रेरक प्रवचनों में जब-जब आगमों की गाथाएँ रखते हैं तो विवेचन में मूल-अर्थ और भावार्थ एवं मर्म समझाते हुए सीखने की भी प्रेरणा करते हैं कोशिश तो करनी होगी। ज्ञान के लिए अर्थ सीखना हितावह है। आचार्यप्रवर के चातुर्मास चाहे, बैंगलोर-चेन्नई-मुम्बई जैसे महानगरों में हुए, वहाँ भी प्रवचन समय के अतिक्रमण के बजाय नियत-निर्धारित समय सीमा में प्रवचन पूरा करने से हर आगत की प्रवचन की प्यास बढ़ती रही है। आत्मजागृति के लक्ष्य से आचार्यप्रवर के प्रवचनों में जन-जन की आस्था का ही परिणाम है कि प्रवचन में लोग हर्षित उल्लासित भाव से आते हैं।

मध्याह्न 2 से 3 बजे तक शास्त्र वाचन, फिर प्रश्नोत्तर, ज्ञानचर्चा एवं सायं प्रतिक्रमण का नित्यक्रम पूरी तरह व्यवस्थित रूप से गतिमान रहता है।

अपराह्न लगभग 4 बजे से संत-मुनिराजों के स्थान पर बहिनें न बैठें, महासती मण्डलों के स्थान पर भाई न बैठें, इस नियम की परिपालना की जाने से लोग स्वत: इस नियम में ढलते जा रहे हैं।

मध्याह्न में 12 से 2 बजे तक आचार्यप्रवर ध्यान-मौन की साधना में रत रहते हैं। प्रत्येक सोमवार और कृष्ण पक्ष की दशमी को आचार्यप्रवर के मौन रहती है, संत-मुनिराज भी ध्यान-मौन की साधना हेतु सजग-सक्रिय रहते हैं। सायंकालीन प्रतिक्रमण पश्चात् संत-मुनिराजों द्वारा समूह में महावीराष्टक, कल्याणमन्दिर एवं भक्तियुक्त भजनों का आनन्द भले ही गिने-चुने श्रावक लेते हैं, परन्तु स्तोत्र-स्तुति का प्रभावी प्रस्तुतीकरण श्रोताओं को वहाँ से उठने नहीं देता।

ज्ञानाराधना

आचार्यप्रवर एवं मुनिप्रवर व्यक्ति-व्यक्ति को ज्ञानाराधन की प्रभावी प्रेरणा करते रहते हैं, इस कारण जन-जन में ज्ञान-साधना के प्रति सकारात्मक सोच तो बनी ही है प्रबल पुरुषार्थ से सामायिक-प्रतिक्रमण, बोल-थोकड़े, आगम-शास्त्रों की वाचना एवं कण्ठस्थीकरण के साथ स्वाध्याय की निरन्तरता

बढ़ रही है। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ज्ञान-साधकों के पथ प्रदर्शक तो हैं ही प्रत्येक ज्ञान पीपासु को पाठ देने-सुनने और समझाने के लिए तत्पर रहते हैं। ज्ञान पीपासु संत-सती, विरक्त-विरक्ताएं और श्रावक-श्राविकाएँ तत्त्वचिन्तक मुनि श्री के सान्निध्य का लाभ उठाने में क्षण-पल भी देरी नहीं करते। श्री योगेश मुनि जी म.सा., श्री मनीष मुनि जी म.सा., श्री यशवन्त मुनि जी म.सा. सीखने -सिखाने में विशेष रुचि रखते हैं। आचार्यप्रवर जब भी किसी से बात करते हैं तो प्राय: सामायिक-प्रतिक्रमण सीखने पर बल देते हैं। बालक-बालिकाओं को नमस्कार मंत्र से लेकर सामायिक के पाठ कण्ठस्थ करवाये जा रहे हैं। चातुर्मास में कई श्रावक-श्राविकाओं ने आगमों का अध्ययन किया है, बोल-थोकड़ों का अभ्यास किया है और सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करने वालों में आबाल-वृद्ध सभी रुचिपूर्वक प्रयासरत हैं।

तपाराधन

तप कर्म काटने की अचूक रामबाण औषधि है। आचार्यप्रवर विषय का विवेचन इतना सारगर्भित करते हैं कि तप नहीं करने वालों का अन्तर्मन जागृत हो जाता है। आचार्यप्रवर ने चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश से एकासन-आयंबिल- उपवास और तेले की लड़ी पूरे चातुर्मास तक चले, प्रेरणा रूप संघ का आह्वान किया। गुरु-भक्ति में लीन संघ-सदस्यों ने चारों व्रतों की पूरे चातुर्मास में आराधना की है।

आचार्यप्रवर संवर-साधना और पौषध-आराधना की सतत प्रेरणा करते रहते हैं परिमाण स्वरूप भाइयों में पर्वतिथियों पर ही नहीं, कई लोगों ने श्रावण-भाद्रपद तक तो कुछ ने पूरे वर्षावास तक संवर-साधना का आदर्श उपस्थित किया। श्री पुखराज जी गिड़िया, श्री शांतिलाल जी चौपड़ा, श्री नपरतराज जी चौपड़ा, श्री पुनवान चन्द जी ओस्तवाल, श्री रिखबराज जी मेहता, श्री भोपालचन्द जी सेठिया, श्री इन्दरचन्द जी गांधी आदि ने चातुर्मास में संवर-पौषध की क्रमबद्धता बनाए रखी। संघ के कार्याध्यक्ष श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल ने जोधपुर में रहते सदा गुरुचरण सन्निध में संवर-साधना का अभ्यास किया।

तप-साधना में आबाल-वृद्ध सबकी रुचि एवं भावना का ही सुपरिणाम है कि सूर्यनगरी में इस वर्षावास में जहाँ 18 वर्षीय युवती ने मासखमण किया वहीं 90 वर्षीया वृद्धा श्राविका ने भी प्रबल पुरुषार्थ का परिचय देकर मासखमण तप की साधना की। मासखमण और मासखमण से ऊपर तक की

तपश्चर्या करने वालों में युवारत्न साथियों ने भी इस मिथक को तोड़ दिया कि तप बहिनें और बुजुर्ग श्रावक ही करते हैं। श्री महेन्द्र जी सुराना, श्री महेश जी बुबकिया, श्री मनीष जी लोढ़ा, श्री नरेन्द्र जी बाफना, श्री गणपत जी चौपड़ा, श्री नवरत्न जी लूंकड़ जैसे युवारत्न बन्धुओं ने मासखमण तप की आराधना की। संघमंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल ने पहली बार मासखमण तप करके तपस्वी मंत्री का इतिहास रच दिया। वे अन्त तक गुरुचरण सेवा में ऊपर के हॉल में उपस्थित होकर अचार्यप्रवर के मुखारविन्द से एक-एक दिन की तपश्चर्या बढ़ाते-बढ़ाते मासखमण तप करने में उत्तरोत्तर उत्साहित होते रहे। वीरमाता श्रीमती शशिकला जी गाँधी ने सबसे पहले 35 दिवसीय तपस्या की, वहीं श्रीमती रेणुकादेवी जी ने 42 दिवसीय तपाराधन किया। श्राविका मण्डल, जोधपुर की अध्यक्ष श्रीमती सुनीता जी मेहता ने स्थानीय संघ मंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल की भांति मासखमण तपाराधन के क्षेत्र में उत्साह दर्शाया। आचार्यप्रवर के चातुर्मास में 30 मासखमण व मासखमण से ऊपर की तपश्चर्याएँ हुई हैं। 30वाँ मासखमण श्रीमती मंजु जी चण्डालिया धर्मपत्नी श्री ललित कुमार जी चण्डालिया, पाटवा ने किया। इनके अतिरिक्त महासती श्री निरंजना जी के 36 एवं महासती श्री दर्शनलता जी ने 31 की तपस्या की।

तप-साधना में आबाल-वृद्ध सबकी भावना एवं भागीदारी के कारण जोधपुर में 200 से अधिक अठाइयों एवं लगभग दो हजार तेलों की तपश्चर्या होना अपने आपमें कीर्तिमान है। उपवास, बेले, आयंबिल-एकासन के हर रोज प्रत्याख्यान पूरे चातुर्मास चलते रहे। पाँच-आठ-नौ-दस-ग्यारह से लेकर इक्कीस दिवसीय तपाराधन में भी अनेक भाई-बहिनों ने पुरुषार्थ का परिचय दिया। श्रीमती इन्दुमती बाफना ने 'सर्वतोभद्र' तप किया जिसमें 100 दिनों में मात्र 25 दिन पारणक के रहे, शेष सभी दिन तप साधना में बीते। आश्विन ओली में 71 आयम्बिल हुए हैं।

चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश से चातुर्मास समाप्ति तक तप-साधना का क्रम बना रहना यशस्वी चातुर्मास की अच्छी उपलब्धि है।

धर्माराधन

आचार्यप्रवर धर्म-साधना-आराधना की सतत प्रेरणा करते हैं। संवर-निर्जरा ही नहीं, सामायिक-स्वाध्याय, ध्यान-मौन की साधना में जन-जन की जागृति व भावना बढ़े, एतदर्थ आचार्यप्रवर की प्रेरणानुसार चातुर्मास में दया-संवर, उपवास-पौषध और सेवा-भक्ति के क्षेत्र में अच्छा उत्साह रहा।

श्रावण-भाद्रपद में प्राय: सभी जगह धर्म-साधना में उत्साह रहता है, किन्तु आचार्यप्रवर के अतिशय प्रभाव से पूरे चातुर्मास में ज्ञान-दर्शन-चारित्र व तप में तथा दान-शील-संयम-आत्मशुद्धि में उमंग उल्लास के साथ धर्म साधना का सुन्दर रूप आचार्यप्रवर के जोधपुर चातुर्मास की विशेषता रही। चातुर्मास में धर्मचक्र, पचरंगी, नवरंगी के आयोजन हुए। पर्युषण में शक्तिनगर एवं घोड़ों के चौक में प्रवचन की व्यवस्था से पावटा, शक्तिनगर, घोड़ों का चौक तीनों स्थानों पर धर्म साधना में अच्छी उपस्थिति और उत्साह रहा।

आचार्यप्रवर कषाय-त्याग की निरन्तर प्रेरणा करते हैं। प्रेरणा के कारण जन-जन में क्रोध-त्याग की भावना बन रही है। सैकड़ों लोगों ने एक माह, चार माह, एक वर्ष और जीवन पर्यन्त क्रोध-त्याग के संकल्प किए हैं।

संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के कार्यक्रमों की क्रियान्विति

संघ में एकता-एकरूपता-एकरसता का भाव प्रगाढ़ बने, परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग का वातावरण पुष्ट हो, स्वधर्मी बन्धुओं के आतिथ्य-सत्कार में कोई कमी न रहे, संघ की ऐसी सोच के कारण संघ की कार्यकारिणी व वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न हुई। सदस्य महानुभावों ने संघहित में अपना सकारात्मक सहयोग व रचनात्मक भूमिका तो निभाई ही, संघ की प्रगति-उन्नति के लिए चिन्तन-मनन भी किया। संघ स्तर पर आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध साधना सम्मान, विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान सहित बहुविध संघ-सेवियों का गुणी-अभिनन्दन के अन्तर्गत 18 सितम्बर, 2011 को बहुमान किया गया। जयनारायण व्यास टाऊन हॉल में आयोजित सम्मान-कार्यक्रम में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपति माननीय श्री आर.एम.लोढ़ा साहब मुख्य अतिथि के रूप में पधारे, वहीं जयपुर विकास प्राधिकरण के कमिश्नर आदरणीय श्री कुलदीप जी रांका ने विशिष्ट अतिथि पद सुशोभित किया।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के तत्त्वावधान में 160 क्षेत्रों की पूर्ति 400 स्वाध्यायियों के माध्यम से की गई। चातुर्मास के प्रारम्भ में 24 से 30 जुलाई 2011 तक स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें 140 स्वाध्यायियों ने भाग लिया। अखिल भारतीय श्री आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा 31 जुलाई 2011 को आयोजित की गई जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर 6463 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। जोधपुर में 9 केन्द्रों में 545 परीक्षार्थी बैठे।

8 से 15 सितम्बर 2011 को आयोजित वीतराग ध्यान शिविर में करीब 25 साधकों ने भाग लिया। आवासीय ध्यान शिविर की संचालिका श्रीमती शांता जी मोदी, आचार्य कन्हैयालाल जी लोढ़ा, निदेशक श्री देवेन्द्रराज जी मेहता ने शिविरार्थियों को ध्यान साधना विषयक चिन्तन दिया, वहीं तत्त्वचिंतक श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री मनीष मुनिजी म.सा. ने प्रशिक्षण देकर शिविरार्थियों को लाभान्वित किया।

श्राविका-मण्डल की प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का समय-समय पर आयोजन किया गया, जिसमें बहिनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

युवारत्न बन्धु सेवा में ही नहीं, ज्ञान-ध्यान और साधना-आराधना में सक्रिय बनें इस दृष्टि से आचार्यप्रवर युवकों को प्रेरणा करते रहते हैं। रविवारीय अवकाश के दिन युवक सामूहिक सामायिक साधना करें और सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करें इस कार्यक्रम की क्रियान्विति में युवारत्न बन्धु अभी पावटा में गुरु चरण सन्निधि में साप्ताहिक सामायिक कर रहे हैं। युवक सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करें, आचार्यप्रवर युवकों को एक-एक, दो-दो पंक्ति याद करने का नियम करवाते हैं, नियम का प्रभाव आज नहीं तो कल पड़ेगा ही। युवकों का एकत्रित होना और चातुर्मास पश्चात् सामूहिक सामायिक समीपस्थ धर्मस्थान में करने का संकल्प लेना अच्छी उपलब्धि है। जिस संघ की युवा शक्ति जागृत हो जाय, वह संघ उन्नति पथ पर द्रुतगति से बढ़ता है, सूर्यनगरी की इस पहल को अन्यान्य ग्राम-नगर के युवा साथी अनुकरण करेंगे तो स्थायी उपलब्धि मिलना कठिन नहीं होगा। आचार्यप्रवर युवकों को व्यसन से एवं युवतियों को फैशन से दूर रहने की प्रेरणा करते हैं, जिसका प्रभाव भी युवकों की जीवन-शैली से परिलक्षित हो रहा है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का अधिवेशन भी जोधपुर में रखा गया जिसमें चारों स्थायी कार्यक्रमों की समीक्षा की गई और कार्यक्रमों की क्रियान्विति में सफलता अर्जित करने वाली शाखा को एवं व्यक्तिशः सेवा देने वाले युवारत्नों को सम्मानित किया गया। आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना को इस वर्ष चलाने का निर्णय भी एक अच्छी उपलब्धि है।

युवतियाँ संस्कारवान-शीलवान-गुणवान बनें, इस लक्ष्य से "बहिना! तुमसे कुछ कहना है" संस्कार शिविर का जोधपुर में पहली बार आयोजन रखा गया, जिसमें आशा से अधिक युवतियों ने एवं उनके अभिभावकों ने भाग लेकर शिविर को सफल बनाया।

महात्मा गांधी की जन्म जयन्ती 2 अक्टूबर 2011 को कविहृदय श्री युगराज जी जैन ने शिविर का सफल संचालन कर बहिनों के उज्ज्वल भविष्य के लिए गुर सिखाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने की, वहीं कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संभागीय आयुक्त श्री आर.के.जैन साहब ने प्रेरणादायी विचार रखे। युवारत्न साथियों ने कार्यक्रम की सफलता में तन-मन-धन से एवं उत्साह से भागीदारी निभाई, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा सुनने को मिल रही है।

बालिकाएँ संगठित हों- संस्कारित हों, इस भावना से आचार्यप्रवर की सद् शिक्षा को अमलीय रूप दिया गया। पावटा में 14 से 16 अक्टूबर प्रातः 9 से सायं 4 बजे तक आयोजित त्रि-दिवसीय संस्कार शिविर में 100 के लगभग बालिकाओं ने भाग लिया। बालिकाओं की भांति किशोरों का संस्कार शिविर भी दीपावली अवकाश पर 20 से 24 अक्टूबर तक लगाया गया। जिसमें 52 बालकों ने शिक्षण प्राप्त किया। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही प्रत्येक रविवार को भी बालकों का शिविर आयोजित होता रहा, जिसमें लगभग 1100 बच्चों ने भाग लिया। श्राविका मण्डल का शिविर दिनाँक 31 अक्टूबर से 05 नवम्बर तक लगाया गया जिसमें 200 से अधिक बहिनों ने भाग लेकर ज्ञानाभ्यास तो किया ही, साधनाशील जीवन जीने का संकल्प लिया।

प्रबुद्ध श्रावकों का त्रि-दिवसीय शिविर 30 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2011 तक पावटा में रखा गया है। शिविर में संघनायक के दीक्षा दिवस पर सामूहिक एकासन व तीन-तीन सामायिक साधना का सामूहिक कार्यक्रम रखा गया है।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन 5 व 6 नवम्बर को अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार विषय पर रखा गया। संगोष्ठी में देश भर से ख्याति प्राप्त विद्वान् प्रशासनिक अधिकारी एवं न्यायविदों ने भाग लिया। गत वर्ष विद्वत् संगोष्ठी का पाली-मारवाड़ में आयोजन रखा गया था।

विभिन्न क्षेत्रों की विनतियाँ

आचार्यप्रवर के चातुर्मास में यों तो सदैव समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्री संघों का एवं श्रद्धालुओं का आवागमन बना रहा, पर कई श्री संघों ने विशाल समूह में गुरु चरण सेवा में उपस्थित होकर रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के शेखे

काल विचरण-विहार की एवं आगामी चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। महानगरों में मुम्बई, चेन्नई, दिल्ली, बैंगलोर जैसे क्षेत्रों से वहीं सुदूरवर्ती ग्राम-नगर जिनमें लासूर-औरंगाबाद बंगारपेठ, बीजापुर, हैदराबाद, मैसूर, यादगिरी, जलगांव सिरपुर, उमरगांव, शोरापुर, रतलाम, सैलाना, यादगिरी, सेलम, बिलीपुरम, कजगांव, लासूर, जायखेड़ा, तिरूवनामल्लै, उज्जैन, रायचूर, धूलिया, इचलकरंजी, बल्लारी जैसे क्षेत्रों से तो राजस्थान के जयपुर, अजमेर, दूदू, किशनगढ़-मदनगंज, ब्यावर, मेड़ता, पीपाड़, पाली, नागौर, सवाईमाधोपुर, बालोतरा, आगोलाई, बीकानेर, भरतपुर, बजरिया, अलीगढ़-रामपुरा, गंगापुरसिटी जैसे अनेक ग्राम-नगरों के श्री संघों ने व श्रद्धालुओं ने जहाँ दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का लाभ लिया वहीं अपने-अपने क्षेत्रों की भावपूर्ण विनति प्रस्तुत कर सत्संग-सेवा और संत-समागम का लाभ मिले, एतदर्थ पुरजोर भावना रखी। आचार्यप्रवर-उपाध्याय प्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के चातुर्मास के लिए अभी से विनति का सिलसिला शुरु हो चुका है। विनति करने वाले श्री संघ कार्यक्रम के साथ प्रार्थना रख रहे हैं।

विशिष्टजनों का गुरु दर्शन-वन्दन हेतु आगमन

चातुर्मास में अनेक ग्राम-नगरों और महानगरों के श्री संघों ने, संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने समय-समय पर गुरुचरण सेवा में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सेवा-भक्ति और व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित की, वहीं सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र के साथ लोवर कोर्ट से लेकर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधिपतियों ने गुरु दर्शन और सेवा का लाभ लिया। सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति श्री दलवीरचन्द जी भण्डारी, माननीय न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र मल जी लोढ़ा, छतीसगढ़ के मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया, राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा, न्यायिक अधिकारी माननीय श्री अजीत जी हिंगड (राजस्थान उच्च न्यायालय के उप रजिस्ट्रार), न्यायाधिपति श्रीमती अल्का जी गुप्ता जैसे न्यायविद् गुरु दर्शन-वन्दन हेतु पधारे, वहीं शीर्ष पदाधिकारीगण जिनमें जोधपुर संभागीय आयुक्त श्री आर.के.जैन साहब, जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त श्री कुलदीप जी रांका, पश्चिम बंगाल के भारतीय सेवा के प्रशासनिक अधिकारी श्री चंचलमल जी बच्छावत, युवा वैज्ञानिक डॉ. महावीर जी गोलेच्छा, राज्य सभा सांसद श्री ईश्वरलाल जी ललवाणी, शहर विधायक श्री

कैलाश जी भंसाली एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय श्री अशोक जी गहलोत सहित अनेकानेक पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों के अलावा राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय अधिकारियों ने समय-समय पर गुरु दर्शन-वन्दन का लाभ लिया और नैतिक व आध्यात्मिक जागृति विषयक आचार्यप्रवर से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आचार्यप्रवर के जोधपुर चातुर्मास की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. आचार्यप्रवर सहित संत-सतीवृन्द के स्वास्थ्य में समाधि
2. चतुर्विध संघ में ज्ञान-दर्शन-चारित्र वृद्धि का अनवरत अभ्यास
3. संघ में विभिन्न समितियों के माध्यम से व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने में सफलता
4. संवत्सरी पश्चात् अन्यान्य परम्परा के संत-सतीवृन्द एवं श्रावक-श्राविकाओं का क्षमायाचना हेतु आने जाने के सुन्दर रूप से सकल जैन समाज की प्रीति व मैत्री
5. देश भर से श्री संघों व श्रद्धालुओं का गुरु चरण सन्निधि में दर्शन-वन्दन हेतु आगमन से जोधपुर संघ को अतिथियों के आतिथ्य का सुन्दर सुयोग।
6. आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत के 125 खंद।
7. प्रवचन सभा में पूरे वर्षावास श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति एवं आबाल-वृद्ध सबकी व्रत-नियमों की श्रद्धा समर्पित करने की स्वस्थ स्पर्धा।
8. कषाय-विजय हेतु संकल्प।

-नौरतन मेहता

नागौर में धर्माराधन की निरन्तरता

उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में तेले, उपवास एवं एकान्तर की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को सामूहिक एकाशन एवं दयाव्रत की आराधना यथावत् है। एक दम्पती ने आजीवन-शीलव्रत का नियम अंगीकार किया है। धर्म सभा में श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी महाराज, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. तथा उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. प्रेरणाप्रद प्रवचन फरमाते हैं। भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक पर तेले की कई तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-

दिवस पर 1 नवम्बर को उपवास, एकाशन आदि के साथ अनेक तप-त्याग हुए हैं। उपाध्यायप्रवर, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि संतों एवं सतियों ने आचार्यप्रवर के आचारनिष्ठ एवं साधनाशील जीवन की विशेषताओं पर भावपूर्ण प्रकाश डाला। देश के विभिन्न कोणों से श्रद्धालु भक्तों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है।

साध्वी-मण्डल के सान्निध्य में धर्माराधना

मसूदा- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में अच्छा धर्म-ध्यान चल रहा है। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर भाई-बहिनों ने उपवास, बेला, तेला, दया, आयंबिल, पौषध, संवर आदि की आराधना की। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में 28 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक पंच दिवसीय कार्यक्रम रखा गया, जिसमें एक शिविर भी आयोजित हुआ है। मसूदा श्री संघ उल्लास एवं उत्साह के साथ भाग ले रहा है।

भोपाल- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में तेले की लड़ी निरन्तर चल रही हैं। नवपद आयंबिल की ओली के दिवसों में त्याग-तप का विशेष वातावरण रहा। यहाँ 10 वर्ण वाली ओली, 10 अष्टापद की ओली एवं लगभग 200 आयंबिल की आराधना हुई है। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा दिवस पर त्रिदिवसीय धर्मआराधना के कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं। भोपाल का वातावरण व्याख्यात्री महासती जी के सान्निध्य में धर्ममय बना हुआ है।

पाली-मारवाड़- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व पर विशेष तप-त्याग हुआ। 12 अठाई तप एवं 28 तेलों की तपस्या हुई। 21 दिवसीय तप भी सम्पन्न हुआ। ग्यारहरंगी और छह रंगी दया व्रत का आराधन हुआ। प्रतिदिन आयंबिल एवं एकाशन की लड़ी चल रही है। दो माह के एकान्तर उपवास एवं एकाशन भी सम्पन्न हुए हैं। पाँच वर्षीतप के एकाशन भी चल रहे हैं। पर्युषण के महापर्व पर सैंकड़ों लोगों ने प्रतिक्रमण एवं पौषध का लाभ लिया। दया व्रत एवं संवर व्रत का लाभ लेने वाले भी निरन्तर सक्रिय हैं।

जयपुर- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में शरद पूर्णिमा की रात्रि में 15-15 सामायिकें 70 श्रावक-श्राविकाओं ने की।

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के बालकों ने 11-11 सामायिकें की। पूरी रात धर्म-जागरणा हुई। रात्रि के 12 बजे तक लगभग 100 श्रावक-श्राविकाओं ने पृथक-पृथक स्थानों पर धर्माराधना की। महासती जी के मुखारविन्द से चार आजीवन शीलव्रत हुए हैं- 1. श्री जीवन सिंह जी जैन पंजाबी, 2. श्री पदमचन्द जी डागा, टोंक, 3. श्रीमती पुष्पा रानी जी कुशवाह, विराटनगर, 4. श्री प्रेमसिंह जी जैन, पंजाबी।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में अब तक 16 अठाई, 2 दस दिवसीय, 2 नौ दिवसीय, 2 ग्यारह दिवसीय, 2 पन्द्रह दिवसीय, 1 मासखमण तथा 41 दिवसीय तपस्याएँ हो चुकी हैं। एकाशन, उपवास एवं तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। 2 नवरंगी, 1 पचरंगी, 1 धर्मचक्र भी सम्पन्न हुए हैं। दीपावली के पूर्व बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिविर आयोजित किया गया जिसमें 100 से अधिक बच्चों ने भाग लिया। निर्वाण दिवस पर तेले, उपवास आदि के साथ धर्म-आराधना हुई। आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर 49 से अधिक उपवास के तेले तथा इतने ही दया, संवर, एकाशन, बेआसन, नीवी, आयंबिल के तेले भी हुए। लगभग 49 सामूहिक 5-5 सामायिक हुईं। सुबह सामूहिक सामायिक में लगभग 300 व्यक्तियों ने भाग लिया। आचार्यप्रवर के जीवन पर प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें 100 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। 6 वर्षीया बालिका ने भी प्रतिक्रमण सीखा तो 60 वर्ष की महिला ने भी दशवैकालिक के चार अध्ययन सीखे। लगभग 18-20 भाई-बहिनों ने 1 से 4 तथा 5 से 6 अध्ययन सीखे। सभी को श्री दलीचन्द जी कवाड़ की ओर से पुरस्कार वितरित किये गये।

भोपालगढ- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में शरद पूर्णिमा की रात्रि में 15-15 सामायिक के साथ धर्म-जागरणा हुई तथा श्री प्रकाशचन्द जी लोढ़ा ने सजोड़े तेले की तपस्या की। आश्विन माह में आयंबिल की लड़ी सम्पन्न हुई तथा कार्तिक माह में सजोड़े एकाशन की लड़ी चल रही है। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन एवं प्रवचन हुए। दीपावली के अवसर पर तेले, उपवास आदि की तपस्या भी हुई।

बजरिया-सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में युवकों का विशेष उत्साह बना हुआ है। प्रातःकाल

महासती मुदितप्रभा जी के उद्‌बोधन का विशिष्ट प्रभाव दृग्गोचर हो रहा है। 2 से 6 अक्टूबर तक यहाँ स्वाध्यायी शिविर भी आयोजित हुआ, जिसमें 118 शिविरार्थियों ने लाभ लिया।

शूले वैपेरी-चेन्नई- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा 11 के सान्निध्य में शरद पूर्णिमा के अवसर पर रात्रि में पन्द्रह सामायिक की आराधना श्रावकों ने सी.यू.शाह भवन में तथा श्राविकाओं ने मरलेचा गार्डन स्थानक में की, जिसमें 140 श्राविकाओं एवं लगभग 100 श्रावकों ने प्रतिक्रमण, भजन, ध्यान, संत-सतियों के दर्शन से प्राप्त अनुभूतियों की प्रस्तुति, लोगस्स का ध्यान, धार्मिक दृष्टान्त, श्री तरूण जी बोहरा द्वारा श्रेणिक राजा की मार्मिक कथा का विवेचन एवं फिर राइय प्रतिक्रमण की साधना की। दोनों स्थानों पर कुछ कार्यक्रमों में भिन्नता रही। 15-16 अक्टूबर को आचारांग सूत्र पर स्वाध्याय शाला आयोजित हुई, जिसमें महासती मण्डल एवं विद्वानों ने आचारांग सूत्र के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला। 16 अक्टूबर को ही स्वाध्याय शाला के समापन अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अध्ययन कण्ठस्थ करने वाली 13 श्राविकाओं को संघ द्वारा स्मृतिचिह्न एवं अभिनन्दनपत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक पर 75 से अधिक तेले, कई बेले एवं अच्छी संख्या में उपवास व्रत की साधना सम्पन्न हुई।

इन्दौर- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में तेले की लड़ी, आयंबिल, जाप, प्रतियोगिताएँ एवं बहूमण्डल में जीवा-योनि का प्रश्नोत्तर सहित अध्ययन बराबर चल रहा है। प्रवचन एवं प्रतिक्रमण में बहनों तथा भाइयों की उपस्थिति अच्छी रहती है। सभी का उत्साह सराहनीय है। संघ में संगठन सुदृढ़ है। इस कारण मन्दिरमार्गी, तेरापंथी एवं स्थानकवासी सम्प्रदाय के धर्म प्रेमी जानकी नगर स्थानक में मिलजुल कर तप-जप, प्रवचन, सेवा आदि में भाग लेते हैं। महासती जी के चातुर्मास प्रवेश से प्रारम्भ जाप की आराधना अभी तक निरन्तर चल रही है। आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में 31 अक्टूबर से 5 दिवसीय बहू मण्डल शिविर की योजना है।

गंगापुर सिटी- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में धर्ममय वातावरण बना हुआ है तथा तप-त्याग की निरन्तरता बनी हुई है।

माण्डल- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेले एवं आयंबिल की लड़ी सुचारु रूप से चल रही है। दया-संवर की आराधना भी निरन्तर जारी है। दीपावली पर्व पर महासती पद्मप्रभा जी म.सा. एवं श्रावक-श्राविका वर्ग में तेले की तपस्या हुई है।

वैशाली नगर, अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ तथा पुच्छिसुणं का जाप प्रतिदिन एक घण्टे 17 अक्टूबर से दीपावली तक चला। भाई-बहिन थोकड़ों का अध्ययन कर रहे हैं।

जैनाचार्य हीराचन्द्र जी के दीक्षा-दिवस पर त्याग-तप की प्रभावना

जैनाचार्य पूज्य हीराचन्द्र जी महाराज का 49 वाँ दीक्षा-दिवस पावटा, जोधपुर के सामायिक-स्वाध्याय भवन में त्याग-तप की श्रद्धा समर्पित कर भक्ति-भावना से मनाया गया।

प्रातः 9 बजे प्रवचन का शुभारंभ यशवन्तमुनि जी महाराज के प्रवचन से हुआ, जिसमें उन्होंने यशस्वी आचार्यप्रवर का जीवन परिचय और निरतिचार संयम-साधना में सतत पुरुषार्थ को अनुकरणीय बताया। महासती विनीतप्रभा जी, महासती शांतिप्रभा जी, महासती चन्द्रकला जी, महासती रतनकंवर जी एवं **साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरी जी महाराज** ने गुरु हीरा के गुण स्मरण कर स्वास्थ्य-समाधि और दीघार्यु की मंगलकामना व्यक्त की।

मनीषमुनि जी ने कहा- दो प्रकार के व्यक्ति वन्दनीय होते हैं। एक वे हैं जिन्होंने अपना जीवन वन्दनीय बनाया और दूसरे वे हैं जिन्होंने किसी को वन्दन किया। वन्दना समर्पित होकर की जाती है। मुनिश्री ने गुरु हीरा की सरलता, सहजता, सौम्यता, सहनशीलता, सामंजस्य जैसे विशिष्ट सद्गुणों को रेखांकित करते हुए कहा कि गुरु के विचारों में विनय, विवेक, विश्वास और विशालता का संगम होता है। वह हम आचार्यश्री के जीवन में देखते हैं, इसीलिये आप जन-जन के प्रेरणास्रोत और पथप्रदर्शक हैं।

योगेशमुनि जी ने विशाल जनमेदिनी के चेहरे पर उमंग-उल्लास के भाव देखकर कहा कि आज गुरु के दीक्षा प्रसंग से हम असंग बनें। संयम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री ने कहा कि संसार में दो तरह के लोग होते हैं। एक साधारण हैं तो दूसरे असाधारण। साधारण लोग वातावरण के अनुसार चलते हैं,

असाधारण वातावरण को बनाते हैं। आचार्य श्री विचक्षण प्रतिभा के धनी असाधारण महापुरुष हैं जो न केवल कल्पनाशील हैं, अपितु क्रियाशील भी हैं। आपश्री की वृत्ति-प्रवृत्ति में कोई आसक्ति नहीं, विचारों में किसी प्रकार का आग्रह नहीं, और व्यवहार में अहिंसा भगवती की आराधना निहित है। मुनिश्री ने आचार्यश्री के तन की स्वस्थता, मन की प्रसन्नता और चेतना की चिन्मयता की कामना की।

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी ने जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए प्रश्न रखा कि आचार्यश्री की 48 वर्ष पूर्व दीक्षा हुई, हम आज 49 वाँ दीक्षा-दिवस मना रहे हैं। आप और हमने 27 वर्ष बाद दीक्षा-दिवस मनाना क्यों चालू किया? पहले क्यों नहीं मनाया? मुनि श्री ने दीक्षा-दिवस मनाने का हार्द समझाते कहा कि सेवा और समर्पण से जब शिष्य ने गुरु से सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिया, तब से आप-हम-सब दीक्षा-दिवस मनाते हैं। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने कहा कि गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा ने पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किए होंगे, फिर माता के संस्कार, पिता की सद् सीख और गुरु चरण सन्निधि में जीवन समुन्नत करने का सुअवसर मिला, वह आपश्री की पुण्यवानी और पुरुषार्थ की परिणति है।

आचार्य पद का निर्वाह कठिन है, पर आपने गुरु हस्ती की अंतिम सीख "संघ का गौरव रखना-परस्पर प्रेम रखना" को बखूबी निभाया है, निभा रहे हैं। अजमेर संघ मंत्री आशुकवि जीतमल जी चौपड़ा ने 96 के चातुर्मास में ठीक ही कहा- "जैसा नहीं देखा भाला, निकला तूं संत निराला।" आचार्यश्री संघ-समाज में आई विकृतियाँ दूर करने हेतु, व्यसन-फैशन के चंगुल से मुक्त होने हेतु और संस्कार निर्माण के लिए निरन्तर प्रेरणा कर रहे हैं, इसीलिये जन-जन की आपके प्रति अटूट आस्था और अगाध भक्ति है।

महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी महाराज ने गुरु-महिमा का बखान करते हुए गुरु को ब्रह्मा-विष्णु-महेश कहा। हमारे संघनायक आत्मीयता में ब्रह्मा सदृश हैं तो चतुर्विध संघ की सार-संभाल करने में विष्णु की तरह पालक हैं वहीं व्यक्ति-व्यक्ति के मन में रही विकृतियों के निकन्दन में आप महेश की तरह बुराइयाँ मिटा रहे हैं। मुनिश्री ने कहा- सागर में ज्वारभाटा आता है, नाडी-तालाब में नहीं, ऐसे ही संघ-समाज में कमजोरियाँ आती हैं, बुराइयाँ पनपती हैं, विकृतियाँ बढ़ती हैं, संघनायक हर स्थिति में समत्व भाव में रहते हुए संघ का कुशलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। आचार्य का पद फूलों का हार नहीं, कांटों का ताज होता है,

पर आपने गुरु से जो ज्ञान मिलाया, सेवा और समर्पण से योग्यता अर्जित की, उससे संघ की जाहोजलाली हो रही है। मुनिश्री ने कहा- आज का दिन अभिव्यक्ति का नहीं, अनुभूति का है। हम-सब आज यह संकल्प करें कि संयम के राजमार्ग पर समर्पित होकर आगे बढ़ेंगे।

संघशास्ता-संघनायक पूज्य हीराचन्द्र जी महाराज ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि बचपन में माता के संस्कार, पिता की सद् शिक्षा और गुरु हस्ती की सद्प्रेरणा से मुझे जो सहयोग मिला, मैं उन उपकारियों के उपकार को कभी नहीं भूल सकता। संस्कारों की आवश्यकता के सन्दर्भ में गुरु हीरा ने कहा कि आज अधिकांश माता-पिता मोहवश और लाड-प्यार में बच्चों को बचपन से खिलाने-पिलाने में, मौज-शौक में यह भूल जाते हैं कि बच्चों को संस्कारित नहीं किया गया तो वे संघ-समाज और देश-सेवा तो दूर की बात, माता-पिता की सेवा कर सकेंगे, इसमें संशय है। बच्चे आज टी.वी., मोबाइल और खेल-कूद में इतना समय लगाते हैं कि उन्हें सत्संग-सेवा में भेजने या लाने की माँ-बाप को न तो फुर्सत है और न ही वे संस्कारों की आवश्यकता समझते हैं। आचार्यश्री ने संयम के प्रति रुचि व भावना बढ़ाने की प्रेरणा करते हुए कहा कि आप दीक्षा लें न लें, वैरागी बनें या न बनें, परन्तु संस्कार, सेवा और साधना से जीवन को पावन-प्रशस्त करने में पुरुषार्थ करें तभी उन्नति-प्रगति के मार्ग में आगे बढ़ सकते हैं।

आचार्यप्रवर के उद्बोधन तक समय 12 बजे के ऊपर हो गया, अतः आचार्यप्रवर ने उपस्थित जनसमुदाय को सामूहिक एकासन एवं दो पौरसी के पच्चखाण करवाये, दया-संवर, उपवास और अन्य प्रत्याख्यान करवाकर मंगल पाठ सुनाया। लगभग 550 भाई-बहिनों ने एकासन तो किया ही, तीन से लेकर पाँच-पाँच सामायिकें की। कुछ लोगों ने आजीवन एवं कुछ ने एक वर्ष तक क्रोध नहीं करने का नियम लिया। शीलव्रत के खंद और बड़ी तपश्चर्या के प्रत्याख्यान भी हुए।

जोधपुर की भांति अनेक ग्राम-नगरों और महानगरों में आचार्यप्रवर का 49 वां दीक्षा-दिवस त्याग-तप के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया।

बजरिया-सवाईमाधोपुर में क्षेत्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की

आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बजरिया, सवाईमाधोपुर द्वारा दिनांक 02 से 06 अक्टूबर, 2011 तक पंच दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में बजरिया, शहर सवाईमाधोपुर, आवासन मंडल, आलनपुर, अलीगढ़, चौथ का बरवाड़ा, कुस्तला व गंगापुर सिटी के 118 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में शिविरार्थियों को चार कक्षाओं में वर्गीकृत किया गया। प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक नियमित दिनचर्या के माध्यम से स्वाध्यायियों ने ज्ञानार्जन किया। महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. ने प्रातः 7.30 से 8.30 बजे तक सभी स्वाध्यायियों की सामूहिक कक्षा लेकर पांच दिवस तक अलग-अलग विषयों पर प्रभावी वक्तृव कला के माध्यम से प्रशिक्षण दिया। प्रातः 8.45 से 10.15 बजे तक प्रभावी प्रवचन में सभी स्वाध्यायियों ने भाग लिया। प्रवचन के पश्चात् प्रातः 10.30 बजे से चार कालांशों में विद्वान् अध्यापकों ने विभिन्न विषयों पर स्वाध्यायियों को प्रशिक्षण प्रदान किया।

प्रथम कक्षा में सामायिक सूत्र अर्थ सहित, इससे सम्बन्धित प्रश्नोत्तर, सामायिक के 32 दोष एवं 25 बोलों का अर्थ एवं विवेचन आदि का अध्ययन कराया गया। दूसरी कक्षा में प्रतिक्रमण सूत्र शब्दार्थ एवं प्रश्नोत्तर, जनोपयोगी गाथाएँ, दशवैकालिक सूत्र का तीसरा अध्ययन, 67 बोल, अर्थ एवं विवेचन आदि का तथा तीसरी कक्षा में तत्त्वार्थ सूत्र का पांचवा अध्ययन, अतंगडदशा सूत्र को रोचक कैसे बनायें, विवेचन एवं प्रश्नोत्तर, 12 व्रत विवेचन सहित, संज्ञा का थोक़ड़ा आदि का अध्ययन कराया गया।

कक्षा चार में मार्गानुसारी के 32 गुण, वृहद् आलोयणा के कुछ महत्त्वपूर्ण दोहे, सचित्त-अचित्त का विवेक, रूपी-अरूपी का थोकड़ा, कर्म-प्रकृति का थोकड़ा आदि का अध्ययन कराया गया। अन्तिम कालांश में सामूहिक कक्षा में श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव ने "स्थानकवासी परम्परा की मूल मान्यताएँ" एवं "रत्नवंश के धर्माचार्य" विषयों पर प्रभावी वक्तृत्व कला के माध्यम से विशेष जानकारी कराई। पोस्टर प्रतियोगिता एवं वक्तृत्व कला की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें विभिन्न स्वाध्यायियों ने भाग लिया। साध्वीवृन्द के तात्त्विक एवं मार्मिक प्रवचनों को श्रवंण कर सभी स्वाध्यायियों को अपना आत्म-निरीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण शिविर के अन्तिम दिन प्रतिदिन सीखे गये ज्ञान के मूल्यांकन हेतु विकल्पात्मक

प्रश्नों की परीक्षा आयोजित की गई। शिविर में विद्वान् प्रशिक्षकों में आदरणीय श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री नवरतनमलजी भंसाली- बैंगलोर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, श्री लल्लूलाल जी जैन-आवासन मंडल, श्री धर्मेन्द्रकुमार जी जैन-आवासन मंडल, श्री पदमचन्द जी जैन- बजरिया, श्री हरकचन्द जी जैन-बजरिया, श्री प्रमोद जी जैन-चौथ का बरवाड़ा, श्रीमती कान्ता जी जैन-जलगांव एवं श्रीमती कुमकुम जी जैन-महावीर नगर, सवाईमाधोपुर ने अपनी महनीय सेवाएँ प्रदान कीं। इसके अतिरिक्त महासती श्री अंजना जी म.सा. एवं महासती श्री तितिक्षा जी म.सा. ने भी शिविरार्थियों को ज्ञानार्जन करवाया। श्री नवरतन जी डागा, संयोजक-श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर ने प्रत्येक कक्षा में जाकर अवलोकन किया एवं स्वाध्यायियों का मार्गदर्शन किया।

शिविर में स्वाध्यायियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था सुन्दर एवं व्यवस्थित रूप से श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-बजरिया, श्री सौभाग्यमल जी धर्मचन्द जी जैन-कुश्तला, श्री सूरजमल जी जैन, सौभाग्यमल जी जैन-बजरिया ने की। समापन समारोह में श्री राजेश जी भंडारी, सचिव- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर ने प्रतियोगिताओं एवं परीक्षा में वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों को पारितोषिक देकर सम्मानित किया। अन्त में श्री हरकचन्द जी जैन शाखा संयोजक, बजरिया-सवाईमाधोपुर ने सभी का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया।

"बहिना! तुमसे कुछ कहना" संस्कार शिविर का सफल आयोजन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा रहती है कि युवक-युवतियाँ व्यसन एवं फैशन से दूर रहकर गुणवान, शीलवान एवं संस्कारशील बनें, इसी कड़ी में 2 अक्टूबर 2011 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, जोधपुर में मुम्बई के कविहृदय श्री युगराज जी जैन के प्रेरक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के तत्त्वावधान में आयोजित शिविर की अध्यक्षता संघ-सरंक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने की। जोधपुर के सम्भागीय आयुक्त श्री रमेश के. जैन के मुख्य आतिथ्य में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शिविर के विशेष सहयोगी सदस्यों ने

संस्कार शिविर के आयोजन की सुन्दर तैयारी की। पोस्टर, बेनर, आमन्त्रण-पत्र के माध्यम से सकल जैन समाज से अनुरोध किया कि संस्कार शिविर में युवतियों के साथ अभिभावकगण भी भाग लेकर शिविर से लाभान्वित हों। कार्यक्रम का व्यापक प्रचार करने के साथ शिविर स्थल के तीनों हॉल में एवं बाहर भी टी.वी. प्रसारण की व्यवस्था की गई, जिससे अधिकाधिक लोग शिविर का लाभ ले सके।

शिविर संचालक श्री युगराज जी जैन जैन-समाज की युवतियों को संस्कारशील बनाने का कार्य बखूबी करते हैं। वे लगभग 200 संस्कार शिविरों को सम्बोधित कर चुके हैं। प्रभावशाली शैली में वे युवतियों में निर्भीकता, आत्मविश्वास एवं संस्कारशीलता को प्रकट करने का सफल प्रयास करते हैं, जो समाज-रक्षण में सहायक है। 2 अक्टूबर को जोधपुर में आयोजित इस शिविर में समाज के गणमान्य सदस्यों, श्राविकाओं, युवतियों ने दो घंटे से भी अधिक समय तक शिविर का एकाग्रमन से लाभ लिया। श्री युगराज जैन ने हितशिक्षा के साथ उज्ज्वल भविष्य के गुर समझाए। शिविर में पीपाड़, भोपालगढ़, नागौर, मेड़ता, बालोतरा आदि ग्राम-नगरों की युवतियों एवं उनके अभिभावकों ने भी लाभ लिया। चातुर्मास में गुरु दर्शन-वन्दन एवं सेवा-भक्ति के लिए आए श्री संघों तथा श्रद्धालुओं ने भी युगराज जी जैन के चिन्तन का लाभ लिया।

मुख्य अतिथि आदरणीय आर.के.जैन साहब ने शिविर को अत्यन्त उपयोगी और रचनात्मक प्रवृत्ति बताते हुए अपने आशीर्वचन में युवतियों को निर्भीक बनकर संस्कृति-रक्षण हेतु तत्पर रहने का आह्वान किया। अध्यक्ष आदरणीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने भाई युगराज जी जैन से अपने पुराने परिचय का सन्दर्भ देकर कहा कि युवतियों को संस्कारवान बनाना समय का तकाजा है और युगराज जी बखूबी इस काम को अंजाम दे रहे हैं।

यौवन की दहलीज पर खड़ी युवतियों ने भाई युगराज जी की सद्शिक्षाओं पर चलने हेतु संकल्प-पत्र भरे। शिविर की सकल जैन समाज ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन डॉ. मीता जी मुल्तानी ने किया। शिविर के उत्साही सहयोगी रहे- ए.सी.जैन, चंचलचन्द सिंघवी, दिनेश हुण्डीवाल, गणपतसिंह चौपड़ा, हर्षवर्धन ललवाणी, महावीर बोथरा, मंगल चन्द चौपड़ा, प्रकाश चौपड़ा, राजेश चोरडिया, शैलेश डोसी आदि।

जोधपुर में 14 से 16 अक्टूबर तक 'जैनत्व की जानकारी आयाम' शिविर सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर 1008 पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं साध्वीप्रमुखा, शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा 12 के पावन सान्निध्य में जैनत्व की जानकारी हेतु श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के सहयोग से श्री जैन रत्न बालिका मण्डल का त्रिदिवसीय शिविर 14,15 व 16 अक्टूबर, 2011 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रातः 9.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक प्रवचनों एवं विभिन्न विषयों के माध्यम से ज्ञानार्जन हुआ। इस शिविर में जोधपुर के उपनगर पावटा, लक्ष्मीनगर, महामन्दिर, सरदारपुरा, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, प्रतापनगर, सरस्वती नगर आदि सभी क्षेत्रों की लगभग 100 बालिकाओं ने सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त किया।

इस शिविर में अशांति रहित कैसे हों, शांति का आधार सुखी संसार, सन्तान का माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य, खान-पान, रहन-सहन में विवेक, चाहते हैं पर पाते क्यों नहीं, जीवन में निश्चित लक्ष्य के साथ आध्यात्मिक भावना का होना, समय एवं शक्ति का सदुपयोग तथा सुखी जीवन के सूत्रों पर विशेष प्रकाश डाला गया। संघ एवं समाज में बालिका संघ की मजबूत नींव का सुदृढ़ होना, साथ ही जीवन में सामायिक करना आवश्यक है, साधना यदि अर्थ सहित हो तो जीवन का मूल्य ही बदल जाता है आदि विषयों पर पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री योगेश मुनि, श्रद्धेय श्री यशवंत मुनि जी आदि सभी संत-भगवंत का मार्ग दर्शन मिला साथ ही बैंगलोर निवासी श्री जिनेन्द्र जी दुगड, स्वेस संस्थान के निदेशक श्री श्रीकांत जी एवं श्री प्रकाश जी सालेचा ने कक्षाएँ लीं। प्रतिदिन प्रतियोगिता महासती श्री उषा जी म.सा., महासती श्री निरंजना जी म.सा. एवं महासती श्री सुव्रत प्रभा जी म.सा. के सहयोग से आयोजित की गई। बालिका मंडल की निर्देशिका बीना जी मेहता एवं अध्यक्ष सुश्री शिल्पा जी गांधी ने इस शिविर का सम्पूर्ण कार्यभार संभाला। श्री कमलेश जी मेहता, श्री मौहनकोर जी जैन एवं पूजा जी गिडिया ने भी व्यवस्था में पूरा सहयोग किया।

शिविर में अनेकानेक नये प्रत्याख्यान- 1. टी.वी. त्याग, 2. पटाखों का त्याग, 3. रात्रि-भोजन का त्याग, 4. माता-पिता को प्रतिदिन प्रणाम, 5.

प्रतिदिन स्वाध्याय, 6. झूठ नहीं बोलना आदि प्रत्याख्यान हुए एवं पटाखे नहीं छोड़ने के फार्म भी भरवाये गये।

शिविरार्थियों ने इस शिविर में शांति एवं विकास का मार्ग सीखा। संकल्प की दृढ़ता एवं आचरण की उत्कृष्टता के प्रति आत्मविश्वास जागृत हुआ।

चेन्नई में 'आचारांग सूत्र' पर स्वाध्याय शाला आयोजित

आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 15 से 16 अक्टूबर 2011 को आचारांग सूत्र पर स्वाध्याय शाला का आयोजन हुआ, जिसमें आचारांग सूत्र के विविध पक्षों पर महासतीवृन्द एवं विद्वानों ने प्रकाश डाला। 15 अक्टूबर को प्रातःकाल श्रद्धेया महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. ने 'आचारांग की नौका में तिरने का मौकाः मुनि जीवन' विषय पर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन जलगांव ने 'आचारांग सूत्र में अध्ययनों का क्रम' विषय पर तथा श्री प्रकाशचन्द्रजी पटवा, बैंगलोर ने 'आचारांग सूत्र में तीन मंगल' विषय पर प्रभावी प्रतिपादन किया। मध्याह्न भोजनोपरान्त श्री शान्तिलाल जी बोहरा, बैंगलोर ने 'आचारांग सूत्र से श्रावक जीवन का मार्गदर्शन' तथा डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर ने 'आचारांग सूत्र में ध्यान' विषय का निरूपण किया। महासती श्री संगीता जी म.सा. ने 'आचारांग सूत्र में दुःख का स्वरूप एवं उपाय' विषय पर तथा डॉ. जयन्तीलाल जी जैन, चेन्नई ने 'आचारांग सूत्र में चार ध्यान का स्वरूप' विषय पर विचार प्रकट किए। 16 अक्टूबर को श्रद्धेया महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. ने आचारांग सूत्र के आधार पर भगवान महावीर की साधना का सुन्दर प्रतिपादन किया। डॉ. धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर ने 'आचारांग सूत्र में अप्रमत्तता' विषय पर तात्त्विक प्रकाश डाला। डॉ. प्रियदर्शना जैन, चेन्नई ने संवाद शैली में आचारांग में वर्णित आध्यात्मिक जीवन के सूत्रों से परिचित कराया। अपराह्न सत्र में श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव ने आचारांग सूत्र में आत्मिक सुख के स्वरूप एवं उपायों का सुन्दर निरूपण किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री पी.शिखरमल सुराणा ने 'आचारांग सूत्र में अनुकम्पा' विषय पर सोदाहरण प्रकाश डाला। स्वाध्यायशाला की सम्पूर्ति के अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ने द्विदिवसीय स्वाध्याय

शाला में वर्णित विषयों का सारांश प्रस्तुत करते हुए आचारांग को मां से उपमित कर मार्मिक प्रवचन फरमाया। स्वाध्याय शाला का 200-250 श्रोताओं ने प्रमोद भाव से लाभ लिया। संगोष्ठी के दौरान महासती भाग्यप्रभा जी म.सा. द्वारा "एक कदम धर्म की ओर' कार्यक्रम के अन्तर्गत 'जिनवाणी' के महत्त्व का प्रतिपादन करने पर अनेक श्रावकों एवं श्राविकाओं ने आगमों का अध्ययन करने का संकल्प ग्रहण किया।

"जैन तत्त्व प्रकाश" प्रतिदिन स्वाध्याय हेतु निःशुल्क उपलब्ध

विश्व जैन परिषद् द्वारा अमोलक ऋषि जी प्रणीत जैन तत्त्व प्रकाश पुस्तक निःशुल्क उपलब्ध करवाई जा रही है। यह पुस्तक श्वेताम्बर एवं दिगम्बर परम्परा के कोई भी संत-सती मंगवा सकते हैं। जो जिज्ञासु प्रतिदिन एक पृष्ठ का स्वाध्याय करने का संकल्प करे, उसे भी पुस्तक निःशुल्क प्रदान की जाएगी। **सम्पर्क सूत्रः-** श्री हस्तीमल मुणोत, विश्व जैन परिषद्, 7-2-765, पॉट मार्केट, सिकन्दराबाद-500003 (आन्ध्रप्रदेश), फोनः 27704408, Email-hastimal_Munoth@yahoo.co.in

चेन्नई में संस्कार दीक्षा समारोह

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के तत्त्वावधान में 21 अगस्त 2011 को 'संस्कार दीक्षा' के नाम से एक प्रेरणास्पद आयोजन किया गया। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री ज्ञानलताजी, चारित्रलताजी, भाग्यप्रभाजी आदि ठाणा के सान्निध्य में आयोजित इस संस्कार दीक्षा समारोह में आठ से पच्चीस वर्ष तक की आयु के लगभग बारह सौ बालक-बालिकाओं और तरुण-तरुणियों ने भाग लेकर संस्कृति और संस्कारों के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त की। नई पीढ़ी के इन उत्साही प्रतिनिधियों ने निम्न पन्द्रह नियमों का जीवनपर्यन्त पालन करने का सत्संकल्प किया-

1. अरिहंत और सिद्ध भगवान को अपना देव मानना।
2. पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वियों को गुरु मानना तथा उनकी सेवा-भक्ति करना।
3. श्रद्धापूर्वक जैन धर्म की उपासना करना।
4. प्रतिदिन कम-से कम 11 बार नवकार महामंत्र का सुमिरन करना।
5. प्रतिदिन माता-पिता के चरण स्पर्श करना।

6. किसी भी प्रकार का मांसाहार नहीं करना तथा मांस-मिश्रित वस्तुओं का सेवन व उपयोग नहीं करना।
7. मद्यपान, धूम्रपान, गुटका, जर्दा आदि नशीली व नुकसानप्रद चीजों का सेवन नहीं करना।
8. वेश्यागमन तथा परस्त्रीगमन/परपुरुषगमन से सर्वथा दूर रहना।
9. स्थूल चोरी तथा समाज-निन्दनीय व राज-दण्डनीय कार्य नहीं करना।
10. निरपराध त्रस जीवों की जानते हुए हिंसा नहीं करना।
11. भ्रूणहत्या नहीं करना तथा ऐसे पापकारी कार्य में सहयोगी भी नहीं बनना।
12. जीवन में कैसी भी विकट, विपरीत या दु:खभरी घड़ियाँ आ जाएं, कभी आत्महत्या नहीं करना।
13. माता-पिता की आज्ञा के बिना तथा छुपकर शादी नहीं करना।
14. किसी के साथ क्रूरतापूर्ण व्यवहार नहीं करना।

इन नियमों के अन्तर्गत सम्यक् आस्था का रास्ता, हिंसा-अहिंसा का विवेक, सदाचार की सुगन्ध, विनय, आज्ञाकारिता आदि के माध्यम से सुसंस्कारों को सुदृढ़ बनाने का सामूहिक प्रयास किया गया। किसी व्यक्ति को सन्मार्ग दिखाना और सन्मार्ग के प्रति आस्थावान बनाना उस व्यक्ति का उपकार तो है ही, साथ ही समाज और देश का उपकार भी है। ऐसे उपकार के कार्यों में प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग करने वाले सभी व्यक्ति और समूह धन्यवाद के पात्र होते हैं। प्रतिभागियों को महसूस हुआ कि अच्छी शिक्षा के बावजूद संस्कारों के अभाव में जीवन अधूरा रह जाता है। प्रतिभागियों के माता-पिता ने भी यह महसूस किया कि वे बहुत सारे पैसे खर्च करके भी अपनी सन्तान को वह नहीं दे पाते हैं, जो उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। शाकाहार, सदाचार, व्यसन-मुक्ति और एकता के सन्देशों को जीवन में ढालने और जनजीवन में प्रचारित करने के लिए ऐसे उद्देश्यपरक कार्यक्रमों की उपयोगिता असंदिग्ध है।

संक्षिप्त-समाचार

पुणे- भारतीय जैन संघटना, पुणे विभाग की ओर से श्वेताम्बर जैन उच्च शिक्षित युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन 20 नवम्बर 2011 को किया जा रहा है। सम्मेलन में श्वेताम्बर जैन समाज के सभी संप्रदाय के उच्च शिक्षित प्रथम वर-वधू युवक-युवती सम्मिलित हो सकते हैं। सम्मेलन में सम्मिलित

होने के लिए पहले पंजीकरण कराना जरूरी है। **सम्पर्क सूत्र-** भारतीय जैन संघटना, पुणे विभाग, डी-1, मनाली आर्केड, पुणे सतारा रास्ता, क.रा. सुराणा चौक, डी मार्ट के नजदीक, पुणे-411009, श्रीपाल ललवाणी-9823977472, नितीन जैन-9422032523, website:ww.bjsindia.org

मुम्बई- जैन फुलवारी द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सर्व जैन विवाह योग्य ग्रेज्युएट एवं अधिक शिक्षा प्राप्त युवक-युवती परिचय सम्मेलन का आयोजन 18 दिसम्बर, 2011 को किया जा रहा है। इस सम्मेलन में राजस्थानी, गुजराती, कच्छी, महाराष्ट्री तथा हिंदी भाषी प्रदेशों सहित देश के सभी भागों के श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी सहित सभी जैन समुदाय के उच्च शिक्षित युवक-युवती भाग ले सकते हैं। सम्मेलन में भाग लेने के लिए उम्मीदवार को 30 नवम्बर, 2011 तक संस्था कार्यालय में अपना आवेदन फोटो और प्रवेश शुल्क (400 रु.) सहित जमा कराना अनिवार्य होगा। उम्मीदवार अपना आवेदन प्रत्यक्षतः अथवा डाक/कुरीयर द्वारा जमा कर सकते हैं। मुंबई से बाहर के उम्मीदवार प्रवेश शुल्क डी.डी/मनी आर्डर जैन फुलवारी के नाम से भेजें। आवेदन जमा करने का पता- जैन फुलवारी, हिन्द इलेक्ट्रिक प्रिमाइसेस, नागु सयाजी वाड़ी, सामना प्रेस के पास, न्यू प्रभादेवी रोड़, मुम्बई-400025, फोन नं. 09930756598 -*युगराज जैन*

जयपुर- अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से मान्यता प्राप्त 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' एवं 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' में प्रवेश प्रारम्भ है- 1. प्राकृत सर्टिकिकेट पाठ्यक्रम (1 जनवरी 2012 से 31 दिसम्बर 2012) तथा 2. अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम (1 जनवरी 2012 से 31 दिसम्बर 2012)।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति इनमें प्रवेश ले सकता है। आवेदन पत्र व नियमावली अकादमी कार्यालय से निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है। शुल्क-सहित आवेदन पत्र अकादमी कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर 2011 है। **सम्पर्क सूत्रः-** डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004, फोन नं. 0141-2385247

जयपुर- जैनविद्या संस्थान द्वारा संचालित पत्राचार जैनधर्म दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम-2012 (1 जनवरी से 31 दिसम्बर, 2012 तक) में प्रवेश

हेतु आवेदन पत्र व नियमावली जयपुर कार्यालय से निःशुल्क मंगवाई जा सकती है। शुल्क सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2011 है। **सम्पर्क सूत्रः**– डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारक जी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004, फोन नं. 0141-2385247

मुम्बई- विद्वद्वर्य मुनिश्रेष्ठ श्री प्रेममुनि जी एवं प्रज्ञारत्न श्री जितेशमुनि जी म.सा. आदि सन्तवृन्द के सान्निध्य में साध्वी चिन्मय श्री लिखित 'संस्कार' पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण का 25 सितम्बर 2011 को लोकार्पण हुआ। इसका अंग्रेजी अनुवाद सौ. वन्दना शाह एवं बालकेश्वर संघ के चेयरमेन श्री अरूण भाई मेहता ने किया। पुस्तक का लोकार्पण पद्मश्री नाना चुडासमा, श्री मोफतराज जी मुणोत, पूर्व अध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री विजयभाई जी कोठारी, महामंत्री के कर कमलों से हुआ। *-श्री विजय पटवा*

बधाई/चुनाव

प्रो.भागचन्द्र जैन 'जैनरत्न' उपाधि से सम्मानित

नागपुर- जैन वर्ल्ड डाट.काम. अमेरिका ने प्रोफेसर डॉ. भागचन्द्र जैन को जैन-धर्म, इतिहास, दर्शन, संस्कृति और पुरातत्त्व के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए 'जैनरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया है। साहित्यिक क्षेत्र में ऐसे योगदान के लिए यह उनका बीसवाँ सम्मान है। इसके पूर्व उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार, मञ्जुश्री सम्मान, गोम्मटेश पुरस्कार, श्रुत सम्वर्धन पुरस्कार, अहिंसा इन्टरनेशनल पुरस्कार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। डॉ. जैन की लगभग 75 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

नित्यानन्द नगर, जयपुर- श्री अंकित जैन सुपुत्र श्री विजेन्द्रकुमार जी जैन एवं सुपौत्र श्री ज्ञानचन्द जी जैन ने CAT-2010 की प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण कर I.I.M. लखनऊ (उतरप्रदेश) में प्रवेश प्राप्त किया है।

जलगांव- डॉ. गौरव बाफना सुपुत्र श्री राजेन्द्रकुमार एवं श्रीमती सजनीदेवी जी

बाफना (सुपौत्र स्व. श्री नेमीचन्द जी एवं स्व. श्रीमती सुन्दर बाई जी बाफना-गोटन निवासी) ने M.B.B.S. परीक्षा प्रथम श्रेणी में जी.एस. मेडीकल कॉलेज, मुम्बई से उत्तीर्ण की है तथा MS. Ortho घाटी मेडीकल कॉलेज औरंगाबाद में प्रवेश प्राप्त किया है। आपने PG CET में महाराष्ट्र में 54 वीं रेंक प्राप्त की है।

जयपुर- विचार मंच, कोलकाता के रजत जंयती वर्ष के अवसर पर आयोजित

सम्मान समारोह में राजस्थान विश्वविद्यालय में जन संचार केन्द्र के अध्यक्ष एवं मीडिया त्रैमासिकी के संपादक प्रो. संजीव भानावत को गणेश ललवानी सम्मान से पुरस्कृत किया गया है। सुप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र के सान्निध्य में आयोजित इस समारोह में प्रो. भानावत को संस्था के मंत्री श्री सरदारमल कांकरिया ने 25,000/- की राशि तथा पदक देकर सम्मानित किया।

अलीगढ़-रामपुरा- श्री विनोद कुमार जैन सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन

(प्रधानाचार्य) पाटोली वाले, को ''बैक्टीरिया एसोसिएटेड विद सीड्स ऑफ ब्लेक ग्राम (विग्ना मूंगो), देयर फाइटोपैथोलोजिकल इफैक्ट्स एण्ड डिजीज मैनेजमेन्ट'' विषय पर शोध के लिए राजस्थान विश्वविद्यालय ने पीएच्.डी. उपाधि प्रदान की है। वर्तमान में आप असिसटेण्ट प्रोफेसर, पी.जी. डिपार्टमेण्ट ऑफ बॉटनी, अग्रवाल पी.जी. कॉलेज में कार्यरत हैं। आपने अपना शोध कार्य प्रो. कैलाश अग्रवाल के निर्देशन में पूर्ण किया है।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- श्रीमती धनकंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. डॉ. मख्तूरमल जी लोढ़ा का

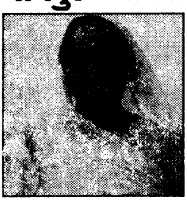

90 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आपने कई अठाई तप एवं छोटी बड़ी अन्य काफी तपस्याएँ कीं। बीमारी में कुछ समय को छोड़ आपके कई वर्षों से चौविहार एवं तिथि को हरी-जमीकन्द के त्याग थे। 24 वर्ष की अल्पायु में ही आप विधवा हो गई थीं। हर समय माला, मौन, शास्त्र के अध्ययन, नित्य सामायिक-प्रतिक्रमण में लगी रहती थीं। रत्नसंघ के आचार्य-उपाध्याय, संत-सती मण्डल के प्रति आपकी दृढ़ आस्था-श्रद्धा भक्ति थी। आपका जीवन त्याग-तप, सरलता, सहिष्णुता आदि गुणों से ओत-प्रोत था। रत्नवंश के प्रतिष्ठित श्रावक एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी स्व. श्री सरदारचन्द जी भण्डारी की आप सासू माँ थीं। आप श्रीमान् नरपतमल सा लोढ़ा, पूर्व एडवोकेट जनरल की बड़ी माताजी थीं।

पाली- संघनिष्ठ श्रावकरत्न श्रीमान् कुशलचन्द जी सिंघवी का 03 अक्टूबर 2011 को देहावसान हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त

आपका जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। आप सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में सदैव सहयोग करते थे। सम्पूर्ण सिंघवी परिवार सामायिक-स्वाध्याय रूप धर्म-साधना से जुड़ा हुआ है तथा संघ की समस्त गतिविधियों में सक्रिय योगदान प्राप्त होता रहा है।

नदबई- दानशीला सुश्राविका श्रीमती सरवती देवी जैन धर्मपत्नी वरिष्ठ स्वाध्यायी

स्व. श्री रतनलाल जी जैन का 26 सितम्बर 2011 को 92 वर्ष की अवस्था में संथारे के साथ मरण हो गया। आप धर्मनिष्ठ तथा कर्तव्यनिष्ठ थीं। रत्नवंश के सन्त-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धा भक्ति थी। आपने डहरा (नदबई) में सरवती स्वाध्याय भवन (जैन स्थानक) का निर्माण कर सम्वत् 2050 में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को समर्पित किया तथा रतनलाल जैन औषधालय भवन बनाकर सरकार को दे दिया। आप अपने पीछे पुत्र ज्ञानचन्द जैन, स्वाध्यायी (पूर्व सरपंच), खेमचन्द, ऋषभचन्द, दयाचन्द जैन एवं तीन पुत्रियां छोड़कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्रावक श्री चन्द्रराज जी खिंवसरा सुपुत्र श्री अन्नराज जी खिंवसरा का

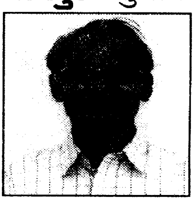

22 सितम्बर 2011 को संथारे के साथ देवलोकगमन हो गया। आपने तीन दिन पूर्व सागारी संथारा ग्रहण किया और अन्तिम दिन महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. के मुखारविन्द से संथारा ग्रहण किया। आपने अपने जीवन में वृद्धाश्रम, बालशोभागृह, लवकुश शिशुगृह, अन्ध विद्यालय आदि को खूब आर्थिक सहयोग किया। आप प्रतिदिन सामायिक करते थे। आपने तेले एवं अठाई का तप भी किया।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्रावक श्री उगमचन्द जी सुपुत्र स्व. श्री मोहनचन्द जी सिंघवी का 6 अक्टूबर, 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। आपने श्री जैन रत्न पुस्तकालय, सिंहपोल में सेवाएँ प्रदान कीं।

दूदू- समता-साधिका, श्राविकारत्न श्रीमती सूरजकंवर जी धर्मपत्नी श्री सरदार सिंह जी नाहर का 54 वर्ष की वय में कैंसर से मरण हो गया। आपने वेदना को समभाव के साथ सहन किया। आपकी रत्नसंघ के संत-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा

भक्ति थी।

ब्यावर- स्नेह की प्रतिमूर्ति, धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रतनदेवी जी धर्मपत्नी

स्व. श्री नोरतमल जी ढेढिया का संथारा पूर्वक 29 सितम्बर 2011 को प्रयाण हो गया। आप 84 वर्ष की थीं। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय एवं संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहना आपकी दिनचर्या में शामिल था। आप पूरे समाज में ढेढिया बाईजी के नाम से लोकप्रिय थीं। स्वधर्मि-वात्सल्य, दया-दान, सामाजिक कार्यों में वे बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थीं। आपके पुत्र श्री ज्ञानचन्द जी ढेढिया सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की सह-सचिव श्रीमती शान्ता जी कर्नावट की वे माताश्री थीं।

बैंगलोर- कर्मठ कार्यकर्ता गुरुभक्त सुश्रावक श्री रणजीतराज मेहता (चाम्बड़) पुत्र

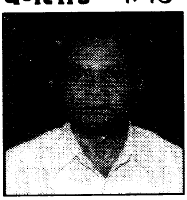

स्व. श्री जसवन्तराज जी मेहता का परलोकगमन 12 अक्टूबर, 2011 को 69 वर्ष की उम्र में हो गया। आप नित्य सामायिक व स्वाध्याय करते थे तथा आप आजीवन शीलव्रत धारण कर चुके थे। रत्नसंघ के प्रति आपका जीवन पूर्णतः समर्पित था। आपके द्वारा मरणोपरांत नेत्रदान किया गया।

चेन्नई- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका हेमलता जी भण्डारी धर्मपत्नी श्री चंचलचन्द जी

भण्डारी का 5 अक्टूबर 2011 को स्वर्गवास हो गया। आप शासन प्रभाविका मैनासुन्दरी जी म.सा. के संसार पक्ष में भ्राता सुखपाल चन्द जी भण्डारी की पुत्र वधू थीं। आपने महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. के चातुर्मास काल में ग्यारह एवं मासखमण की तपश्चर्या भी की थीं। आप महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. एवं चारित्रलता जी म.सा. के नित्य प्रवचन-श्रवण करती थीं। धर्म में आपकी विशेष रुचि थी। हर कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेती थीं।

जयपुर- सन्तसेवी, श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक श्रीमान् सम्पतसिंह जी सुपुत्र स्व. श्री मुन्नीलाल जी सुखलेचा का आकस्मिक स्वर्गवास 15 अक्टूबर, 2011 को हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठता, कर्तव्य परायणता, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे।

सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे।

अरसीकेरे- संघ-सेवी, तपस्वी साधक, सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी चौपड़ा

सुपुत्र स्व. श्री प्रेमराज जी चौपड़ा का देवलोकगमन 14 अक्टूबर, 2011 को 57 वर्ष की उम्र में बैंगलोर में हो गया। आप साधु-संतों की बहुत सेवा करते थे। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय की साधना करते थे। आपने आचार्य श्री के सान्निध्य में सजोड़े शीलव्रत के प्रत्याख्यान भी कर रखे थे। आपश्री हर वर्ष पर्युषण पर्व में कम से कम नौ एवं ग्यारह की तपस्या करते थे। आप अरसीकेरे स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष थे।

जामखेड़- श्री रसीकलाल जी बोगावत का 22 सितम्बर, 2011 को 64 वर्ष की आयु में पुणे में स्वर्गवास हो गया। आपने मरणोत्तर नेत्रदान किया।

चेन्नई- सुश्रावक श्री राजकुमार जी सुपुत्र श्री बी.एम. कुम्भट का 21 सितम्बर,

2011 को 61 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। मूलतः जोधपुर में जन्मे आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के सन्त-सतियों के प्रति तन-मन-धन से श्रद्धापूर्वक समर्पित है। आपने सामाजिक कार्यों में सराहनीय योगदान किया है।

अजमेर- श्रेष्ठीवर्य आदर्श सुश्रावक श्री माणकचन्द जी सांखला (जेठाना वाले)

का संथारा सहित 95 वर्ष की आयु में देवलोक गमन 16 अक्टूबर, 2011 को हो गया। लोकप्रियता, आडम्बर और आत्मश्लाघा का अंश मात्र भी उनके व्यक्तित्व में नहीं था। वे हमेशा सभी को निरन्तर कर्म पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देते थे। आपके द्वारा सैकड़ों भाई-बहिनों का भरणपोषण व संवर्धन हो रहा था।

जोधपुर- समाजसेवी सुश्रावक श्री जवरीमल जी रूटियाँ सुपुत्र स्व. श्री मिश्रीमल

जी रूटियाँ का 87 वर्ष की अवस्था में 10 अक्टूबर, 2011 को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। आप जैन समाज की कई संस्थाओं से जुड़े हुए थे। आप जोधपुर युवक परिषद् के परामर्शदाता श्रीमान् गोपालराज जी अबानी के श्वसुर थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन सदस्यता हेतु प्रत्येक

13244 Shri Tejas ji Bamboli, Barshi, Solapur (M.H.)
13245 Smt. Koushalya Bai ji Runwal, Bangalore (Karnataka)
13246 श्री धर्मचन्द जी जैन, बहैज, वाया-डीग, जिला-भरतपुर (राजस्थान)
13247 श्री शाह पारसमल जी छाजेड़, आदिपुर, गाँधीधाम कच्छ (गुजरात)
13248 Smt. Meena ji Jain, Mukerian, Hoshiarpur (Punjba)
13249 श्री नथमल जी गलेड़ा, शनिवार पेठ, कराड, जिला-सतारा (महाराष्ट्र)
13250 श्री धीरेन्द्रकुमार जी चपलोत,सदरबाजार, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.)
13251 श्री अनिल कुमार जी जैन, 73, द्रविड नगर, इन्दौर (मध्यप्रदेश)
13252 श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन,पेट्रोल पम्प के पास,बजरिया,सवाईमाधोपुर(राज.)
13253 श्री गौरव जी कोठारी, मदनगंज-किशनगढ़, जिला-अजमेर (राजस्थान)
13254 श्री अभिषेक जी जैन, द्वितीय मंजिल, राधेपुरी, दिल्ली
13255 श्री हरकचंद जी बोथरा, नया बाजार, अजमेर (राजस्थान)
13256 श्री मनमोहनराज जी मोहनोत, मोती डूँगरी रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13257 श्री रायचन्दजी हुण्डिया, विद्युत नगर, अजमेर रोड़, जयपुर (राजस्थान)
13258 श्री ललितकुमारजी चण्डालिया, पाटवा, जैतारण, जिला-पाली (राज.)
13259 श्री महावीर जी गाँधी, 89, काशीपुरी, भीलवाड़ा (राजस्थान)
13260 श्री विनयकुमारजी जैन,शास्त्रीनगर,जैन स्थानक के पास,जोधपुर (राज.)
13261 श्री निर्मलकुमार जी पोखरणा, रामनगर, पुष्कर रोड़,अजमेर (राजस्थान)
13262 Shri Rishabh ji Metha,T.R.Nagar, Bangaluru(Karnataka)
13263 श्री युगराजजी जैन,सामना प्रेस के पास,न्यू प्रभादेवी रोड़,मुम्बई (महा.)

जिनवाणी हेतु साभार-प्राप्त

11111/- श्रीमती उगमकंवर जी, श्री हंस, श्रीपाल जी लुणावत मेहता, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं साध्वी प्रमुखा, शासन प्रभाविका मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

11000/- श्री अनूप जी बाफणा, इन्दौर, महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के इन्दौर चातुर्मास में श्री अनूप जी एवं श्रीमती प्रकाशकँवर जी बाफणा ने 8 एवं 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम में भेंट।

5100/- श्री सज्जनराज महेन्द्रकुमार जी बाफना, जलगांव, सुश्री खुशबु के आठ, सौ.

बबीता के आठ, सुश्री कोमल के तीन की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

5000/- डॉ. प्रियदर्शना जी जैन चेन्नई, पर्युषण पर्व में न्यूयार्क में स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने की उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2700/- श्री महेन्द्रमल जी-ललिता जी गांग, सूरत पूज्य माताश्री स्व. श्रीमती पुष्पाकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री मनमोहनमल जी गांग की 27वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

2500/- श्री प्रवीण कुमार जी, नितिनकुमार जी रूणवाल, माधवनगर, बीजापुर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण करने की उपलक्ष्य में भेंट।

2121/- श्री जौहरीमल, शैलेषकुमार, बसन्तकुमार डोसी, जोधपुर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के जोधपुर चातुर्मास एवं श्रीमती मनोहरकंवर धर्मपत्नी श्री जौहरीमल जी डोसी के छः की तपस्या, श्रीमती मंजू डोसी धर्मपत्नी शैलेष जी डोसी के अठाई की तपस्या, श्रीमती शशी डोसी धर्मपत्नी श्री बसन्त जी डोसी के नौ की तपस्या, सुश्री प्रिया सुपुत्री श्री शैलेश जी डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री बाबूलाल जी, तपस्वीलाल जी जैन, कौसाणा वाले हॉल मुकाम जबलपुर, आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन वन्दन के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री धनरूपचन्द जी, अमितकुमार जी मेहता, पीपाड़ हाल मुकाम बैंगलोर, श्रीमती मंजू कुमारी जी के 31 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री महावीरचन्द जी, नरेशकुमार जी बौथरा, जोधपुर, मुकेश बोथरा की अठाई, नरेश बोथरा की अठाई, सौ. का. शिल्पा के दस, एवं चि. नितेश के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

2000/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन चातुर्मास समिति, बेंगलोर सप्रेम भेंट।

1101/- श्रीमती कुसुम धर्मपत्नी श्री पी.एस.कुम्भट, जोधपुर, अपनी पुत्रवधू श्रीमती प्रिया धर्मपत्नी श्री पंकज जी कुम्भट के ग्यारह उपवास के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री हुक्मीचन्द जी यशवन्तकुमार जी डोसी, मसूदा अजमेर, महासती श्री सन्तोष कंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास में सुश्री पूनम डोसी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री हीराचन्द्र जी कांकरिया सुपुत्र श्री सुगनचन्द जी कांकरिया, भोपालगढ़, श्रीमती कान्ता जी धर्मपत्नी श्री प्रवीण जी कांकरिया एवं श्रीमती अंजु जी कांकरिया धर्मपत्नी विकास जी कांकरिया के दो मास एकाशन एवं एकान्तर की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री महेन्द्रकुमार राजकुमार जी डांगी, मदनगंज-किशनगढ़, अपने सुपुत्र श्री पवन जी डांगी के पांच की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री नरेन्द्र कुमार जी, हितेश कुमार जी सांखला, शूले-बैंगलोर, श्रीमती संतोषबाई जी धर्मसहायिका श्री नरेन्द्र कुमार जी एवं उनकी पुत्रवधू श्रीमती

चेतना जी सांखला के 9 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

1100/- श्री जयविजया जी मेहता एवं सुपुत्र राजेश जी, प्रदीप जी, प्रकाश जी, अरुण जी मेहता, चेन्नई स्व. श्री जवाहर लाल जी मेहता की 25वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री जीतमल जी कोठारी, अजमेर, श्रीमती अर्पिता जी धर्मपत्नी श्री परीक्षित जी भंडारी के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राजेन्द्रकुमार जी, महावीर जी बाफना, जलगांव, डॉ. गौरव बाफना के एम.बी.बी.एस. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर एवं एम.एस.ऑर्थोपेडिक्स में प्रवेश की खुशी में उनके परिवार की तरफ से भेंट।

1100/- श्री अक्षय जी मेहता, बैंगलोर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री रणजीत राज जी मेहता (चामड) का दिनांक 12 अक्टूबर 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री लालचन्द जी, प्रकाशचन्द जी, सुनील जी, ब्यावर, महासती श्री सन्तोषकंवर जी म.सा. एवं श्री मंजू जी म.सा. आदि ठाणा चार के मसूदा चातुर्मास में दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री गौतमचन्द जी, निलेशकुमार जी कटारिया, चेन्नई, आचार्यप्रवर एवं उपाध्यायप्रवर के दर्शन वन्दन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती उगमकंवर लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा, जोधपुर, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की 49 वीं दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

1011/- श्री कुशलराज, सोहनराज जी कटारिया, पीपाड वाले, हॉल मुकाम भोपाल, आचार्य प्रवर के दर्शन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1000/- श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत, जयपुर, स्व. श्री महताबचन्द जी हीरावत की पुण्य स्मृति में भेंट।

1000/- श्रीमती किशोरकंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री मनोहरराज जी सिंघवी, जोधपुर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दिनांक 1 नवम्बर, 2011 को 49 वें दीक्षा दिवस पर भेंट।

1000/- श्री अविनाश जी भण्डारी, जोधपुर, आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

700/- श्रीमान् नवरतन जी, धर्मेश जी, सुदेश जी रूटिया, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री जवरीमल जी रूटिया का 10 अक्टूबर,2011 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में।

501/- श्री अशोक कुमार जी, शैलेन्द्र कुमार जी हाडा, सवाईमाधोपुर पूज्य पिताश्री श्री गोपीकृष्ण जी हाडा की पुण्य स्मृति में भेंट।

501/- श्री मोहनलाल जी, सोहनलाल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, चि. प्रमोद जी सुपुत्र श्री सोहनलाल जी जैन एवं सौ.कां. सीमा जी सुपुत्री श्री धर्मराज जी जैन (मीणा

कॉलोनी, सवाईमाधोपुर) का शुभविवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/- श्री अरूणकुमार दशरथमल जी भण्डारी, अहमदाबाद, तैंतीस उपवास करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री मोहनलाल जी जीरावला, जोधपुर, आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से 12 व्रत धारण करने के एवं आजीवन रात्रि भोजन त्याग के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री हीरालाल जी जैन, भरतपुर, अपने पौत्र के जन्म के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री बाबूलाल जी प्रकाशचन्द जी खिंवसरा, रणसीगांव, हॉल मुकाम चेन्नई, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के दर्शन वन्दन के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती विमलाबाई जी धनराज जी गादिया, अहमदनगर-महाराष्ट्र, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी श्री मगनचन्द जी कांकरिया, जोधपुर, साध्वी दर्शनलता जी म.सा. के तीस उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती उम्मेदकँवर जी मेहता, महारानी फार्म-जयपुर, पूज्य मातुश्री स्व. श्रीमती उमरावकँवर जी धर्मपत्नी स्व. श्री सरदारमल जी भंडारी की प्रथम पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री महावीरचन्द जी लोढ़ा, जोधपुर, रोहित लोढ़ा सुपुत्र श्री महावीरचन्द जी लोढ़ा के नौ एवं नीतू लोढ़ा धर्मपत्नी श्री नितेश जी लोढ़ा के आठ की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री अनिलकुमार जी, प्रवीणकुमार जी गांग, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री नवरतनमल जी गांग के 80 वें जन्मदिवस की खुशी में भेंट।

500/- श्री समलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री मगराज जी कुम्भट की दिनांक 13 अक्टूबर, 2011 को 14वीं पुण्यतिथि पर भेंट।

500/- श्री रामलक्ष्मण जी कुम्भट, जोधपुर, अपने पूज्य भ्राता स्व. श्री महावीर राज जी कुम्भट की 28 अक्टूबर, 2011 को 9वीं पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री देवरूपचन्द जी, प्रसन्नचन्द जी, निर्मलचन्द जी, विमलचन्द जी, चंचलचन्द जी भण्डारी, चेन्नई, श्रीमती हेमलता जी भण्डारी धर्मपत्नी श्री चंचलचन्द जी भण्डारी का 5 अक्टूबर 2011 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

500/- श्री किस्तूरचन्द जी, संजय कुमार जी डोसी, ब्यावर, सुश्री हर्षिता जी सुपौत्री श्रीमती सुशीला जी-किस्तूरचन्द जी डोसी, सुपुत्री श्रीमती भारती जी-शैलेन्द्र जी डोसी के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

9000/- श्री अनूप जी बाफणा, इन्दौर महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के इन्दौर चातुर्मास में श्री अनूप जी एवं श्रीमती प्रकाशकँवर जी बाफणा ने 8 एवं 11 की

तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम में भेंट।

5000/- डॉ. प्रियदर्शना जी जैन चेन्नई, पर्युषण पर्व में न्यूयार्क में स्वाध्यायी के रूप में सेवा देने की उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमान् नवरतन जी, धर्मेश जी, सुदेश जी रूटिया, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री जवरीमल जी रूटिया का 10 अक्टूबर,2011 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में।

1000/- श्री धनपतमल जी जैन, चेन्नई, सहयोग हेतु।

पर्युषण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
5000	रत्नागिरी	2500	मावलीजंक्शन	2111	दरीबामाइन्स
2100	बलरामपुर	1800	मण्डपीया	1100	नीमचसिटी
1000	बेंगू	500	रिया वाड़ी		

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त पर्युषण सहायता

501/- श्री अशोक कुमार जी शैलेन्द्र कुमार जी हाडा, सवाईमाधोपुर, अपने पिता श्री गोपीकृष्ण जी हाड़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड को साभार प्राप्त

1100/- श्रीमान् नवरतन जी, धर्मेश जी, सुदेश जी रूटिया, जोधपुर, अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री जवरीमल जी रूटिया का 10 अक्टूबर,2011 को देहावसान होने पर उनकी पावन स्मृति में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को साभार प्राप्त

5001/.- श्रीमती कुशल देवी धर्मपत्नी श्रीमती प्रकाशचन्द जी डागा, जयपुर, आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के दर्शन-वन्दन का लाभ प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

मार्गशीर्ष कृष्णा 8	**शनिवार**	**19.11.2011**	**अष्टमी**
मार्गशीर्ष कृष्णा 14	**गुरुवार**	**24.11.2011**	**चतुर्दशी, पक्खी**
मागशीर्ष शुक्ला 8	**शुक्रवार**	**02.11.2011**	**अष्टमी**
मागशीर्ष शुक्ला 11	**मंगलवार**	**06.12.2011**	**मौन एकादशी, आचार्य विनयचन्द जी म.सा. की 96 वीं पुण्यातिथि**
मागशीर्ष शुक्ला 14	**शुक्रवार**	**09.12.2011**	**चतुर्दशी, पक्खी**
पौष कृष्णा 8	**रविवार**	**18.12.2011**	**अष्टमी**
पौष कृष्णा 10	**मंगलवार**	**20.12.2011**	**भगवान पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक**

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राजस्थान) फोन नं. 2575997, 2571163 फैक्स नं. 0141-2570753

प्रकाशित साहित्य-सूची

क्र.	पुस्तक का नाम	दर रु.
1.	अमरता का पुजारी	15
2.	अमृत-वाक्	10
3.	अजीव पर्याय	5
4.	आवश्यक सूत्र (हिन्दी-अंग्रेजी)	10
5.	आहार संयम और रात्रि भोजन त्याग	4
6.	आचारांगसूत्र (मूल)	10
7.	आध्यात्मिक आलोक	40
8.	आध्यात्मिक पाठावली	2
9.	आनुपूर्वी	10
10.	अहिंसा निउणा दिट्ठा	40
11.	अध्यात्म की ओर*	30
12.	अन्तगडदसासूत्र	30
13.	भक्तामर स्तोत्र	10
14.	चौदह नियम	4
15.	24 ठाणा का थोकड़ा	5
16.	दशवैकालिकसूत्र	40
17.	दशवैकालिकसूत्र (हिन्दी भावार्थ)	20
18.	दीक्षा कुमारी का प्रवास	25
19.	दो बात	5
20.	दुर्गादास पदावली	5
21.	एकादश चरित्र संग्रह*	15
22.	गजेन्द्र सुक्ति सुधा*	20
23.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-1	15
24.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-2	15
25.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-3	15
26.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-4	15
27.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-5	15
28.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-6	15
29.	गजेन्द्र व्याख्यान माला भाग-7	15
30.	गजेन्द्र पद मुक्तावली	5
31.	गमा का थोकड़ा	10
32.	गुणस्थान स्वरूप	3
33.	गुरु गरिमा एवं श्रमण जीवन	100
34.	ज्ञातासूत्र की कथायें	10
35.	ज्ञान लब्धि, द्रव्येन्द्रिय का थोकड़ा	2
36.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1*	15
37.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-2	25
38.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-3*	15
39.	हीरा प्रवचन पीयूष भाग-4	25
40.	जैन इतिहास के प्रसंग भाग-1 से 40	5
41.	जैन आचार्य चरितावली	15
42.	जैन स्वाध्याय सुभाषित माला*	10
43.	जैन तमिल साहित्य और तिरुकुरल	20
44.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-1*	225
45.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-2	225
46.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-3	225
47.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास-4	225
48.	जैन धर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त	75
49.	जैनागम	50
50.	जैन विचारधारा में शिक्षा	25
51.	जैन धर्म में ध्यान	70
52.	झलकियाँ जो इतिहास बन गईं	15
53.	जीवन निर्माण भजनावली	2
54.	जीवन अमृत की छाँव*	20
55.	जीव धड़ा	3
56.	जीव पज्जवा, काय स्थिति	5
57.	कर्म प्रकृति	2
58.	कर्मग्रन्थ	15
59.	कुलक कथायें	20
60.	कायोत्सर्ग	50
61.	लघुदण्डक	3
62.	नवतत्त्व	5
63.	निसीहज्झयणं (मूल)	10
64.	निर्ग्रन्थ भजनावली	40
65.	नमो गणि गजेन्द्राय	20
66.	पच्चीस बोल (विवेचन सार्थ)	10
67.	25 बोल (मूल)	3
68.	पाँच बात	5
69.	पथ की रुकावटें	15
70.	प्रश्नव्याकरणसूत्र भाग-1	45
71.	प्रश्नव्याकरण सूत्र भाग-2	35
72.	प्रार्थना प्रवचन	15
73.	प्रथमा पाठ्यक्रम (प्रतिक्रमणसूत्र)	5
74.	प्रतिक्रमण विशेषांक	50
75.	प्रेरक कथाएँ	20
76.	पर्युषण साधना	5
77.	पर्युषण सन्देश	20
78.	पर्युषण पर्वाराधन	15
79.	मुक्तक-मुक्ता	15
80.	मुक्ति का राही	100
81.	रत्नसंघ के धर्माचार्य*	20
82.	रत्नस्तोक मंजूषा	5
83.	67बोल उपयोग, संज्ञा और	2
84.	47 बोल, 50 बोल व 800 बोल	3
85.	समिति गुप्ति-गति आगति	2
86.	सामायिक सूत्र प्रवेशिका पाठ्यक्रम	5
87.	सप्त कुव्यसन*	5
88.	षडद्रव्य एवं विचार पंचशिका	5
89.	सिरि अन्तगडदसाओसूत्र	35
90.	सैद्धान्तिक प्रश्नोत्तरी	5
91.	शिवपुरी की सीढ़ियाँ*	15
92.	शास्त्र स्वाध्याय माला	20
93.	श्रमण आवश्यक सूत्र	10
94.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	5
95.	श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र	10
96.	श्रावक के बारह व्रत	5
97.	श्री सामायिक सूत्र (सार्थ)	3
98.	श्री नवपद आराधना*	5
99.	श्री नन्दीसूत्रम्	40
100.	सुख विपाक सूत्र*	10
101.	स्वाध्याय स्तवन माला	30
102.	सामायिक साधना और स्वाध्याय	10
103.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1	30
104.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-2	50
105.	उत्तराध्ययनसूत्र भाग-3*	50
106.	उत्तराध्ययनसूत्र हिन्दी	50
107.	उत्तराध्ययनसूत्र पद्यानुवाद	20
108.	युवा सँवारे यौवन	20
109.	वैराग्य शतक	5
110.	व्रत प्रवचन संग्रह	10
111.	बृहत्कल्पसूत्रम् (सटीकम्)	30
112.	बृहद् आलोयणा	5

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा से प्रतिकार करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाऊस
खरीदनें व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलोपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

प्लॉट नं. 170 ललवाणी भवन, आस्था हॉस्पीटल के पीछे
द्वितीय पोलो, पावटा, जोधपुर 342001 फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

Opening Ceremony

of

BAGHMAR TOWER

C/o CHANARMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIER'S
S. RAJAN FINANCIERS

BAGHMAR TOWER
218, Ashoka Road 1, Mohalla, Mysore-570001
(Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 4265431 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

देने वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी ।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments From:

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

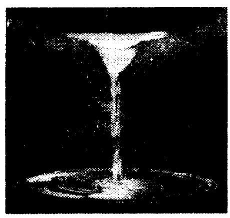
Electric Arc Furnace

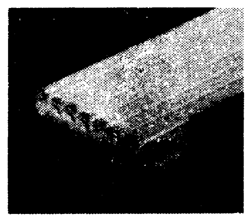
Billets

Rolling Mill

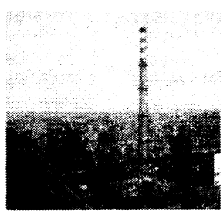
Captive Power Plant

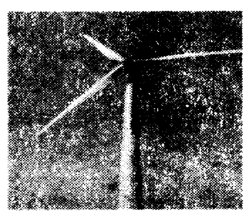
Windmill

With best wishes from

ISO 9001:2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजानें के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आओं प्रत्याख्यान करें

जीवन को निरन्तर उत्कर्ष की ओर ले जाने और गतिशील बनानें के लिए व्रत नियम का पालन अत्यन्त आवश्यक है। मन को वश में करने का एकमात्र उपाय है - **व्रत नियम**। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में छोटे-छोटे व्रत नियम को ग्रहण कर सफल बना सकें, इस उद्देश्य के लिए ही अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद द्वारा "आओं प्रत्याख्यान करें" पुस्तक का प्रकाशन विगत वर्षों से किया जा रहा है। इस वर्ष भी किया गया है। आप अपने क्षेत्र में आओं प्रत्याख्यान करें पुस्तक मंगवाने के लिए सम्पर्क करें -
राजकुमार गोलेच्छा, पाली (9829020742), **मनोज कांकरिया,** जोधपुर (9414563597), **मनीष जैन,** चैन्नई (09543068382/044-42728476)

ज्ञान का दीया जलाईये, सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बंधुवर

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रू. 12000 के गुणक में दान राशि "Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund" योजना के नाम चैक/डापट (Donation to Gajendra Nidhi are Exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए **निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें** –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (9381041097),
2. सुमतिचन्द मेहता पीपाड़ (9414462729),
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (9414921164),
4. बुधमल बोहरा,चैन्नई (9444235065),
5. राजकुमार गोलेच्छा,पाली (9829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (9414563597),
7. कुशलचन्द जैन, सवाई माधोपुर (9460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (9821055932),
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (9829011589)
10. महेन्द्र बाफना,जलगांव (9422773411),
11. हरीश कवाड़,चैन्नई (9500114455)

सहयोग राशि भेजने,योजना संबंधी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पत्ते पर सम्पर्क करें–

B.BUDHMAL BOHRA

No.-53,Erullappan street, Sowcarpet, Chennai - 600079 (T.N.)

Telefax No - 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 68 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
10 नवम्बर, 2011 ★ कार्तिक, 2068

Kalpataru

AURA

• Awarded Best Architecture (Multiple Units) at Asia Pacific Property Awards 2010 • A complex of multi-storeyed buildings • Luxurious 2 BHK & E3 homes • Two clubhouses with gymnasium, squash, half-basketball and tennis courts • Mini-theatre • Yoga room • Swimming pool • Multi-functional room • Spa • Landscaped garden and children's play area • Safety and security features

KALPA-TARU®

Site Address: LBS Marg, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.
Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (East), Mumbai - 400 055.
Tel.: 022-3064 3065 • **Fax:** 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com • **Visit:** www.kalpataru.com

All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. All project elevations are an artistic design. Conditions apply.

Kalpataru Limited is proposing, subject to market conditions and other considerations, to make a public issue of securities and has filed a Draft Red Herring Prospectus ("DRHP") with the Securities and Exchange Board of India (SEBI). The DRHP is available on the website of SEBI at www.sebi.gov.in and the respective websites of the Book Running Lead Managers at www.morganstanley.com/indiaofferdocuments, www.online.citibank.co.in/rhtm/citigroupglobalscreen1.htm, www.csinga.com, www.icicisecurities.com, www.nomura.com/asia/services/capital_raising/equity.shtml, www.idfccapital.com. Investors should note that investment in equity shares involves a high degree of risk and for details relating to the same, see 'Risk Factors' in the aforementioned offer documents. This communication is not for publication or distribution to persons in the United States, and is not an offer for sale within the United States of any equity shares or any other security of Kalpataru Limited. Securities of Kalpataru Limited, including its equity shares, may not be offered or sold in the United States absent registration under U.S. securities laws or unless exempt from registration under such laws.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक – विरदराज सुराणा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर – 302003 से प्रकाशित । सम्पादक – डॉ. धर्मचन्द जैन